व्याकरण भारती

भाग 7

भारती भवन
पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स

प्रकाशक—

भारती भवन (पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स)

www.bharatibhawan.in   email: editorial@bbpd.in

नई दिल्ली—4271/3 अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002, दूरभाष 23286557
नोएडा—ए-61 बी/2 सेक्टर 63, नोएडा-201 307, दूरभाष 4757400
पटना—ठाकुरबाड़ी रोड, पटना-800 003, दूरभाष 2670325
कोलकाता—10 राजा सुबोध मल्लिक स्क्वेअर, कोलकाता-700 013, दूरभाष 22250651
बेंगलुरु—नं. 98 सिरसी सर्किल, मैसूर रोड, बेंगलुरु-560 018, दूरभाष 26740560

© प्रकाशक

प्रथम संस्करण 2021
पुनःमुद्रण 2023

व्याकरण भारती भाग 7
स्थान प्रेस, मानेसर द्वारा मुद्रित

आमुख

प्रत्येक बच्चे में भाषा सीखने का गुण जन्मजात होता है। वह अपने आसपास के परिवेश की भाषा को सुनता है, समझता है और फिर उसे बोलना सीखता है। इस अनौपचारिक भाषा-शिक्षण में वह तीन-चार वर्षों में अपने परिवार तथा परिवेश से व्यवहार में आनेवाली भाषा सीख लेता है। जब वह विद्यालय में औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने जाता है, तब उसे भाषा के चार कौशलों—सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना—में से दो कौशलों पढ़ना और लिखना को सीखना होता है।

ऐसा माना जाता है कि व्याकरण एक कठिन विषय है। अतः व्याकरण जैसे कठिन विषय से बच्चों को परिचित कराना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, विशेषकर प्रारंभिक कक्षाओं के बच्चों के लिए। व्याकरण में नियमों पर अधिक बल दिया जाता है, इसलिए बच्चों को इसे आत्मसात करने की बजाय रटना पड़ता है। व्याकरण सीखने का मूल उद्देश्य भाषा के बारे में सीखना न होकर भाषा-व्यवहार सीखना होता है।

व्याकरण भारती 7 में सरलता और सरसता के साथ-साथ स्तर का भी पूरा-पूरा ध्यान रखा गया है। हमारा उद्देश्य बच्चों को गतिविधियों के माध्यम से भाषा-व्यवहार सिखाना रहा है। दूसरे शब्दों में इसे खेल-खेल में भाषा-शिक्षण भी कह सकते हैं।

इस पुस्तक में व्याकरण के व्यावहारिक पक्ष पर अधिक बल दिया गया है। परिभाषाओं को रटाने की जगह सरल तरीके से व्याकरण सिखाने का प्रयास किया गया है। पाठों में पर्याप्त मात्रा में चित्र दिए गए हैं। पाठ के अंत में हमने जाना में पाठ से मिले ज्ञान को दोहराया गया है। बच्चे जो जान चुके हैं, उसे पुष्ट करने के लिए विभिन्न प्रकार के अभ्यास दिए गए हैं। पुस्तक में जगह-जगह पर प्रभावी भाषा-शिक्षण के उद्देश्य से कार्यकलाप दिए गए हैं। जाना-समझा द्वारा पाठ से संबंधित बिंदुओं को अधिक स्पष्ट किया गया है।

व्याकरण की यह पुस्तक अपने उद्देश्य की पूर्ति कर सकेगी, ऐसा हमारा विश्वास है।

प्रकाशक

विषय सूची

1. भाषा, बोली और व्याकरण 5
2. वर्ण-विचार 11
3. संधि 19
4. शब्द-विचार 26
5. पर्यायवाची शब्द 31
6. विलोम शब्द 36
7. अनेकार्थक शब्द 40
8. श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द 44
9. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द 48
10. एकार्थक प्रतीत होनेवाले शब्द 52
आओ दोहराएँ 1 56
11. उपसर्ग 57
12. प्रत्यय 61
13. समास 66
14. संज्ञा 72
15. लिंग 79
16. वचन 85
17. कारक 92
18. सर्वनाम 99
19. विशेषण 106
20. क्रिया 114

आओ दोहराएँ 2 121
21. काल 122
22. वाच्य 129
23. अविकारी शब्द—क्रियाविशेषण 134
24. संबंधबोधक 139
25. समुच्चयबोधक 142
26. विस्मयादिबोधक 145
27. वाक्य-विन्यास 148
28. वाक्य रचना की अशुद्धियाँ 154
29. विरामचिह्न 157
आओ दोहराएँ 3 161
30. मुहावरे और लोकोक्तियाँ 162
31. अपठित गद्यांश 169
32. अपठित पद्यांश 172
33. अनुच्छेद-लेखन 175
34. सूचना-लेखन 178
35. विज्ञापन-लेखन 181
36. पत्र-लेखन 183
37. निबंध-लेखन 190
आओ दोहराएँ 4 196

1 भाषा, बोली और व्याकरण

चित्र देखकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- बच्चे क्या खेल रहे हैं? dumb charades
- लड़की अपनी बात कैसे समझा रही है? ____________
- क्या अन्य बच्चे उसकी बात पूरी तरह समझ पा रहे हैं? ____________
- क्यों? ____________

उपर्युक्त प्रश्नोत्तर के आधार पर यह निष्कर्ष निकला कि हम संकेतों से अपनी बात पूरी तरह से नहीं समझा सकते। अपने विचारों तथा भावों को पूरी तरह से अभिव्यक्त करने के लिए हमें भाषा की आवश्यकता होती है।

भाषा शब्द संस्कृत के 'भाष्' धातु से बना है। 'भाष्' का अर्थ है—'बोलना'। मनुष्य ने सर्वप्रथम अपनी बात संकेतों से कहनी सीखी। बाद में मनुष्य के मुख से अस्पष्ट ध्वनियाँ विकसित हुईं। धीरे-धीरे मनुष्य के मुख से निकली ध्वनियों के प्रतीक बने तथा इनपर आधारित प्रतीकों की एक व्यवस्था बनी, जिसके निश्चित अर्थ थे। मनुष्य इन ध्वनि-प्रतीकों के माध्यम से अपने विचार और भाव बोलकर तथा लिखकर व्यक्त करने लगा। इन्हीं ध्वनि-प्रतीकों ने भाषा को जन्म दिया।

> भाषा अभिव्यक्ति का वह माध्यम है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों तथा भावों का आदान-प्रदान करता है।

भाषा के रूप

भाषा के मुख्य दो रूप हैं—मौखिक भाषा तथा लिखित भाषा।

मौखिक भाषा

दिए गए चित्र में एक व्यक्ति भाषण दे रहा है तथा अन्य व्यक्ति सुन रहे हैं। इस प्रकार बोलकर विचार व्यक्त किए जा रहे हैं तथा सुनकर उन्हें समझा जा रहा है।

भाषा का वह रूप, जिसमें विचारों को बोलकर व्यक्त किया जाता है तथा सुनकर समझा जाता है, मौखिक भाषा कहलाता है।

बातचीत, वाद-विवाद, विचार-गोष्ठियाँ आदि करते समय हम मौखिक भाषा का ही प्रयोग करते हैं। मौखिक भाषा, भाषा का प्राचीनतम तथा व्यापक रूप है। इसका रूप स्थायी नहीं होता।

सोचो और बताओ

मौखिक भाषा के अन्य दो उदाहरण ______________ ______________

लिखित भाषा

दिए गए चित्र में दुकानदार बच्चे द्वारा दी गई सूची को पढ़कर समझ रहा है कि बच्चे को कौन-कौन-सा सामान चाहिए।

भाषा का वह रूप, जिसमें हम लिखकर और पढ़कर अपने भावों तथा विचारों का आदान-प्रदान करते हैं, लिखित भाषा कहलाता है।

पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, समाचार-पत्रों आदि में लिखित भाषा का ही प्रयोग करते हैं। भाषा का लिखित रूप यद्यपि मौखिक भाषा से कम व्यापक है, तथापि यह अधिक स्थायी है। इसके द्वारा ज्ञान का प्रचार-प्रसार किया जा सकता है तथा ज्ञान को अधिक लंबे समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है।

सोचो और बताओ

लिखित भाषा के अन्य दो उदाहरण ______________ ______________

बोली और भाषा में अंतर

बोली भाषा का स्थानीय रूप होती है तथा भाषा व्यापक रूप। असमिया, हिंदी, गुजराती, मराठी, पंजाबी, तमिल, संस्कृत आदि भाषाएँ हैं। खड़ी बोली, बुंदेली, कन्नौजी, ब्रज, अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी आदि बोलियाँ हैं। बोली का अपना व्याकरण नहीं होता, परंतु भाषा का अपना व्याकरण होता है।

बोली का स्वरूप थोड़ी-थोड़ी दूरी पर बदलता रहता है। भाषा का स्वरूप स्थिर रहता है। बोली में लोककथाओं तथा लोकगीतों की रचना होती है। भाषा में साहित्य की रचना होती है।

विशेष भाषा बोली का विकसित रूप होता है। हिंदी भाषा खड़ी बोली का ही विकसित रूप है।

मातृभाषा

वह भाषा, जिसे बालक जन्म से अपने परिवार के सदस्यों का अनुकरण करके सीखता है, उसकी मातृभाषा कहलाती है। मातृभाषा हम अनुकरण द्वारा सीखते हैं। मातृभाषा के द्वारा हम अपनी संस्कृति से जुड़े रहते हैं। बालक अपनी मातृभाषा में बहुत सहजता से अपने विचारों की अभिव्यक्ति कर सकता है।

राजभाषा

राजभाषा राजकाज के लिए प्रयुक्त भाषा होती है। प्रत्येक राज्य में एक ऐसी भाषा होती है, जो सरकारी कार्यों के लिए प्रयोग की जाती है। ऐसी भाषा उस राज्य की राजभाषा होती है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित किया गया है। हिंदी 14 सितंबर, 1949 को संघ की राजभाषा बनी थी, इसलिए 14 सितंबर का दिन प्रतिवर्ष 'हिंदी दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

राष्ट्रभाषा

देश में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। ऐसी भाषा, जो पूरे राष्ट्र में अन्य भाषाओं की अपेक्षा अधिक बोली तथा समझी जाती है, वह उस देश की राष्ट्रभाषा होती है। राष्ट्रभाषा पूरे देश को भावनात्मक रूप से एकता के सूत्र में बाँधती है। यह देश के अधिकतर लोगों द्वारा लिखी, बोली तथा समझी जाती है। भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी को मान्यता प्राप्त है। भारत की अधिकांश आबादी किसी-न-किसी रूप में हिंदी भाषा का प्रयोग कर रही है। हिंदी हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, उत्तराखंड, बिहार, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश तथा झारखंड में बोली और समझी जाती है। पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र आदि कई राज्यों की यह संपर्क भाषा है।

मानक भाषा

मानक भाषा से अभिप्राय भाषा के उस स्वरूप से होता है, जो वर्तनी तथा व्याकरण की दृष्टि से पूर्ण क्षेत्र में एकरूप होता है। हिंदी हमारे देश में राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा दोनों रूपों में मान्य है। हिंदी में प्रांतीय तथा स्थानीय स्तर पर पाई जानेवाली विभिन्नताओं को दूर करके उसकी लिपि तथा वर्तनी को एकरूपता प्रदान करके उसे मानक रूप दिया गया है।

लिपि

मौखिक रूप से विचारों को अभिव्यक्त करने में सक्षम होने के बाद मनुष्य को अपने भावों, विचारों तथा ज्ञान को स्थायी रूप देने और उन्हें सुरक्षित रखने की आवश्यकता अनुभव हुई होगी। इसके लिए मनुष्य ने उच्चारित ध्वनियों के लिए निश्चित प्रतीक चिह्न विकसित किए होंगे, जिन्हें लिपि कहा गया।

भाषा को लिखने के लिए निर्धारित प्रतीक चिह्नों की व्यवस्था लिपि कहलाती है।

सरल शब्दों में, हम कह सकते हैं कि भाषा को लिखने का ढंग लिपि कहलाता है।

प्रत्येक भाषा की अपनी लिपि होती है; जैसे—संस्कृत की लिपि देवनागरी है, पंजाबी की लिपि गुरुमुखी है, उर्दू की लिपि फ़ारसी/अरबी है तथा फ़्रेंच, जर्मन, अंग्रेज़ी की लिपि रोमन है।

हिंदी की लिपि देवनागरी कहलाती है। देवनागरी लिपि भारत की प्राचीन लिपि ब्राह्मी लिपि से विकसित हुई है। देवनागरी लिपि की प्रमुख विशेषताएँ ये हैं—

1. यह बाईं ओर से दाईं ओर लिखी जाती है।
2. यह जिस प्रकार से उच्चारित की जाती है, उसी प्रकार से लिखी जाती है।
3. इसमें प्रत्येक उच्चारित ध्वनि के लिए अलग लिपि चिह्न है।
4. इसमें एक ध्वनि के लिए एक ही चिह्न है।

साहित्य

साहित्य विचारों की अभिव्यक्ति का एक प्रमुख साधन है। हिंदी साहित्य की रचना गद्य तथा पद्य दो रूपों में होती है।

गद्य	पद्य
भावनाओं की सरल तथा सहज अभिव्यक्ति होती है।	भावनाओं की अलंकृत अभिव्यक्ति होती है।
इसमें लयात्मकता का अभाव होता है।	इसमें लयात्मकता होती है।
इसमें विचारों की अभिव्यक्ति प्रमुख होती है।	इसमें भावों की अभिव्यक्ति प्रमुख होती है।
कहानी, नाटक, निबंध, लेख आदि गद्य के उदाहरण हैं।	कविता, दोहे, गीत, चौपाई आदि पद्य के उदाहरण हैं।

व्याकरण

भाषा का शुद्ध रूप से उच्चारण तथा लेखन करने के लिए कुछ नियमों की आवश्यकता होती है। भाषा-संबंधी नियमों की जानकारी देनेवाले शास्त्र को व्याकरण कहते हैं।

भाषा का शुद्ध तथा स्थायी रूप निश्चित करनेवाला शास्त्र व्याकरण कहलाता है।

व्याकरण की सहायता से किसी भी भाषा को आसानी से समझा जा सकता है। इससे भाषा के शुद्ध तथा मानक प्रयोग में सहायता मिलती है। व्याकरण द्वारा भाषा का स्वरूप निश्चित होता है।

व्याकरण के प्रमुख तीन विभाग हैं—

1. वर्ण-विचार, अर्थात वर्णों का उच्चारण, लेखन, भेद तथा प्रयोग।
2. शब्द-विचार, अर्थात शब्दों की रचना, भेद तथा प्रयोग।
3. वाक्य-विन्यास, अर्थात वाक्य का स्वरूप, भेद, विश्लेषण तथा प्रयोग।

हमने जाना

- भाषा विचारों तथा भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम है।
- राजभाषा राजकाज की भाषा होती है।
- भाषा का वर्तनी तथा व्याकरण की दृष्टि से पूर्ण क्षेत्र में समान स्वरूप मानक भाषा कहलाता है।
- भाषा को लिखने के लिए निर्धारित चिह्नों की व्यवस्था लिपि कहलाती है।
- भाषा-संबंधी नियमों की जानकारी देनेवाला शास्त्र व्याकरण होता है।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. भाषा क्या है?

विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम — अपनी बात को स्पष्ट करना

ख. भाषा की आवश्यकता क्यों उत्पन्न हुई?

विचारों की पूर्ण अभिव्यक्ति के लिए — ध्वनि-प्रतीकों के निर्माण के लिए

2. उचित शब्दों से रिक्त स्थानों को भरिए।

क. बातचीत करते समय हम ____________ भाषा का प्रयोग करते हैं।

ख. लिखित भाषा मौखिक भाषा से अधिक ____________ है।

ग. बोली का प्रयोग ____________ स्तर पर किया जाता है।

घ. ____________ हम अनुकरण द्वारा सीखते हैं।

ङ. देश के अधिकतर लोगों द्वारा बोली जानेवाली भाषा ____________ कहलाती है।

3. 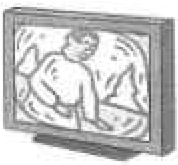 सुनना-बोलना पढ़ना-लिखना

सुनकर और बोलकर व्यक्त की जानेवाली भाषा मौखिक भाषा होती है। पढ़कर तथा लिखकर व्यक्त की जानेवाली भाषा लिखित भाषा होती है।

इस आधार पर बताइए कि नीचे दिए गए उदाहरण किस भाषा के हैं।

विज्ञापन बोर्ड, विचार-गोष्ठियाँ, पत्र, वाद-विवाद, चर्चा, पत्रिकाएँ, भाषण, सूचनापट पर लगी सूचनाएँ, समाचार-पत्र, बातचीत

मौखिक					
लिखित					

4. भोजपुरी → बोली (स्थानीय रूप)

गुजराती → भाषा (व्यापक रूप)

बोली तथा भाषा को अलग करके सही स्थान पर लिखिए।

असमिया, संस्कृत, मराठी, बुंदेली, बघेली, पंजाबी, कन्नौजी, अवधी

क. बोली __________ __________ __________ __________

ख. भाषा __________ __________ __________ __________

बोली तथा भाषा में निम्नांकित आधार पर अंतर बताइए—

	बोली	भाषा
स्वरूप		
व्याकरण		
साहित्य		

5. **प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

क. राजभाषा और राष्ट्रभाषा में क्या अंतर है?

ख. मानक भाषा से आप क्या समझते हैं?

ग. किसी भाषा को शुद्ध रूप से सीखने में व्याकरण किस प्रकार उपयोगी है?

कार्यकलाप

1. दी गई परिस्थितियों को संकेत द्वारा अपने मित्र को समझाएँ।

   क. कल आप बारिश में भीग गए और आपको सरदी लग गई, इसलिए विद्यालय नहीं आ पाए।

   ख. आपकी मुलाकात अकबर और बीरबल से हुई। आपने उनसे बहुत सारी बातें कीं।

2. कुछ चित्र लें। उनमें वर्णित विषयवस्तु को संकेत द्वारा अपने मित्रों को समझाएँ।
3. क्या आप उपर्युक्त दोनों परिस्थितियों में अपने विचार पूर्ण रूप से व्यक्त कर पाए? अगर नहीं, तो क्यों नहीं? इस आधार पर भाषा की अनिवार्यता को समझने का प्रयास करें।

जाना-समझा

हिंदी एक जीवंत भाषा है। इसमें अनेक देशी और विदेशी शब्दों का समावेश हुआ है।

2 वर्ण-विचार

चित्र देखकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- लड़की ने क्या वाक्य बोला? ________________
- बिल्ली के मुख से क्या शब्द निकला? ________________
- 'म्याऊँ' में निहित वर्ण अलग-अलग करके लिखें। ________________
- क्या इन वर्णों को और तोड़ा जा सकता है? ________________

वाक्य शब्दों से तथा शब्द वर्णों से मिलकर बनते हैं। वर्ण मौखिक ध्वनि के लिए निश्चित चिह्न होते हैं। वाक्यों के खंड शब्द तथा शब्दों के खंड वर्ण हो सकते हैं। परंतु, वर्ण के खंड नहीं हो सकते।

भाषा की वह सर्वाधिक छोटी इकाई, जिसके और खंड नहीं किए जा सकते, वर्ण कहलाती है।

वर्णमाला

किसी भी भाषा को केवल एक वर्ण से नहीं सीखा जा सकता। भाषा सीखने के लिए बहुत सारे वर्णों को सीखना आवश्यक होता है। किसी भाषा को सीखने के लिए आवश्यक सभी वर्णों का व्यवस्थित तथा क्रमबद्ध समूह वर्णमाला कहलाता है। वर्णमाला के ज्ञान के बिना किसी भाषा को सीखना संभव नहीं होता।

हिंदी की वर्णमाला

प्रत्येक भाषा की अपनी वर्णमाला होती है। हिंदी की वर्णमाला इस प्रकार है—

स्वर

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

अनुस्वार अं (ं) विसर्ग अः (ः) अनुनासिक अँ (ँ)

व्यंजन

कवर्ग	क्	ख्	ग्	घ्	ङ्	पंचम वर्ण
चवर्ग	च्	छ्	ज्	झ्	ञ्	
टवर्ग	ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्	ड़् ढ़्
तवर्ग	त्	थ्	द्	ध्	न्	
पवर्ग	प्	फ्	ब्	भ्	म्	
अंतस्थ व्यंजन	य्	र्	ल्	व्		
ऊष्म व्यंजन	श्	ष्	स्	ह्		
संयुक्त व्यंजन	क्ष	त्र	ज्ञ	श्र		
आगत ध्वनियाँ	ऑ	ज़	फ़			

वर्ण-भेद

हिंदी वर्णमाला में दो प्रकार के वर्ण होते हैं—स्वर और व्यंजन।

स्वर

स्वर स्वतंत्र ध्वनियाँ होती हैं। इनका उच्चारण स्वतंत्र रूप से किया जाता है, परंतु व्यंजनों का उच्चारण करने के लिए स्वरों की सहायता लेनी पड़ती है।

स्वर के भेद

स्वर के मुख्य दो भेद हैं—ह्रस्व स्वर तथा दीर्घ स्वर।

ह्रस्व स्वर ह्रस्व स्वर, वे स्वर होते हैं, जिनके उच्चारण में कम समय लगता है। इनके उच्चारण में केवल एक मात्रा का समय लगता है। अ, इ, उ तथा ऋ ह्रस्व स्वर हैं।

दीर्घ स्वर दीर्घ स्वर, वे स्वर होते हैं, जिनके उच्चारण में दो ह्रस्व स्वरों के बोलने जितना समय लगता है, अर्थात इनके उच्चारण में दो मात्रा का समय लगता है। आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ तथा औ दीर्घ स्वर हैं।

स्वरों की मात्राएँ

स्वर व्यंजनों के साथ मात्रा के रूप में प्रयोग किए जाते हैं। 'अ' स्वर की कोई मात्रा नहीं होती। सभी व्यंजनों में 'अ' स्वर जुड़ा रहता है।

स्वर	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ
मात्रा	—	ा	ि	ी	ु	ू	ृ	े	ै	ो	ौ
प्रयोग	कल	काला	किला	कील	कुल	कूल	कृषक	केश	कैसा	कोई	कौआ

अनुस्वार, अनुनासिक तथा विसर्ग

अनुस्वार तथा विसर्ग को अयोगवाह कहा जाता है।

पंचम वर्ण को जब स्वररहित लिखा जाता है, तब उसके स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग किया जाता है; जैसे—संचय, संन्यासी, पंकज आदि। अनुस्वार (ं) का प्रयोग करते समय हवा केवल नाक से बाहर निकलती है। जब हवा नाक तथा मुँह दोनों से बाहर आए, तब अनुनासिक (ँ) का प्रयोग करते हैं; जैसे—हँस, आँगन आदि।

विसर्ग (ः) का प्रयोग अधिकतर तत्सम शब्दों के साथ ही होता है; जैसे—प्रातः, अंततः आदि।

विशेष ऑ, ज़, फ़ आगत ध्वनियाँ हैं। इन्हें अंग्रेज़ी और उर्दू भाषा से लिया गया है। जैसे—बॉल, ऑफिस, ज़मीन, फ़सल आदि।

व्यंजन

स्वरों की सहायता से बोले जानेवाले वर्णों को व्यंजन कहते हैं। सभी व्यंजनों में अ स्वर जुड़ा रहता है। व्यंजनों को स्वररहित दिखाने के लिए उनके नीचे एक छोटी, तिरछी रेखा (्) लगाते हैं, जिसे हलंत कहते हैं। व्यंजन तीन प्रकार के होते हैं—स्पर्श व्यंजन, अंतस्थ व्यंजन तथा ऊष्म व्यंजन।

स्पर्श व्यंजन स्पर्श व्यंजन वे वर्गीय व्यंजन होते हैं, जिनका उच्चारण करते समय जिह्वा मुख के किसी-न-किसी भाग का स्पर्श करती है। इनकी संख्या 25 है। क से म तक के व्यंजन स्पर्श व्यंजन हैं।

अंतस्थ व्यंजन इन व्यंजनों का उच्चारण बिना मुख के किसी भाग को स्पर्श किए होता है। य, र, ल तथा व अंतस्थ व्यंजन हैं।

ऊष्म व्यंजन जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय मुख में रगड़ या घर्षण से ऊष्मा पैदा हो, उन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं। श, ष, स तथा ह ऊष्म व्यंजन हैं।

उच्चारण स्थल के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण

उच्चारण स्थल	ध्वनियों के नाम	स्पर्श व्यंजन	पंचम वर्ण	अंतस्थ तथा ऊष्म व्यंजन	
कंठ	कंठ्य	क ख ग घ	ङ		ह
तालु	तालव्य	च छ ज झ	ञ	य	श
मूर्धा	मूर्धन्य	ट ठ ड ढ	ण	र	ष
दंत	दंत्य	त थ द ध	न	ल	स
ओष्ठ	ओष्ठ्य	प फ ब भ	म		
दंत+ओष्ठ	दंतोष्ठ्य			व	

श्वास-मात्रा के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण

श्वास-मात्रा के आधार पर व्यंजन दो प्रकार के होते हैं—अल्पप्राण व्यंजन तथा महाप्राण व्यंजन।

अल्पप्राण व्यंजन जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय वायु कम मात्रा में निकलती है, उन्हें अल्पप्राण व्यंजन कहते हैं। प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा, पाँचवाँ वर्ण तथा अंतस्थ व्यंजन अल्पप्राण व्यंजन होते हैं।

महाप्राण व्यंजन जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय वायु अधिक मात्रा में निकलती है, उन्हें महाप्राण व्यंजन कहते हैं। प्रत्येक वर्ग का दूसरा, चौथा वर्ण तथा ऊष्म व्यंजन महाप्राण व्यंजन होते हैं।

कवर्ग	क	ख	ग	घ	ङ						
चवर्ग	च	छ	ज	झ	ञ						
टवर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण						
तवर्ग	त	थ	द	ध	न	+	य	र	ल	व	(अंतस्थ व्यंजन)
पवर्ग	प	फ	ब	भ	म	+	श	ष	स	ह	(ऊष्म व्यंजन)

दो व्यंजनों के मेल से बननेवाले व्यंजन

संयुक्त व्यंजन	क् + ष = क्ष	त् + र = त्र	ज् + ञ = ज्ञ	श् + र = श्र
द्वित्व व्यंजन	न् + न = न्न	च् + च = च्च	ड् + ड = ड्ड	स् + स = स्स
संयुक्ताक्षर	क् + य = क्य	स् + व = स्व	द् + ध = द्ध	म् + य = म्य

'र' के रूप

'र' का प्रयोग चार प्रकार से करते हैं।

स्वरसहित र	स्वररहित र रेफ़ (^)	स्वरसहित र (्र) पदेन	स्वरसहित र (‸) पदेन
रजनी र्+अ+ज्+अ+न्+ई	कर्म क्+अ+र्+म्+अ	प्रकाश प्+र्+अ+क्+आ+श्+अ	ट्रक ट्+र्+अ+क्+अ

वर्ण-विच्छेद

शब्द के सभी वर्णों को अलग-अलग करके लिखना वर्ण-विच्छेद कहलाता है। वर्ण-विच्छेद करते समय स्वरों तथा व्यंजनों को अलग लिखते हैं। व्यंजन को स्वररहित दिखाने के लिए हलंत लगाते हैं; जैसे—

महात्मा	म् + अ + ह् + आ + त् + म् + आ
कृषक	क् + ऋ + ष् + अ + क् + अ
शिक्षा	श् + इ + क् + ष् + आ
ज्ञानी	ज् + ञ् + आ + न् + ई

पवित्र प् + अ + व् + इ + त् + र् + अ
आशीर्वाद आ + श् + ई + र् + व् + आ + द् + अ
प्रार्थना प् + र् + आ + र् + थ् + अ + न् + आ
विद्वान व् + इ + द् + व् + आ + न् + अ
ट्रेन ट् + र् + ए + न् + अ
डॉक्टर ड् + ऑ + क् + ट् + अ + र् + अ
हँसना ह् + अँ + स् + अ + न् + आ
संबंध स् + अ + म् + ब् + अ + न् + ध् + अ

वर्ण-संयोग

वर्ण-विच्छेद किए हुए शब्दों को जोड़कर लिखना वर्ण-संयोग कहलाता है; जैसे—

श् + र् + ओ + त् + आ श्रोता
ब् + आँ + स् + उ + र् + ई बाँसुरी
व् + अ + र् + ष् + आ वर्षा
भ् + इ + क् + ष् + आ भिक्षा
त् + र् + इ + श् + ऊ + ल् + अ त्रिशूल
क् + ऋ + त् + र् + इ + म् + अ कृत्रिम
श् + ऋ + ङ् + ग् + आ + र् + अ शृंगार
उ + त् + त् + ई + र् + ण् + अ उत्तीर्ण

उच्चारण-संबंधी अशुद्धियाँ

प्रत्येक वर्ण का एक निश्चित उच्चारण स्थान है। यदि कोई वर्ण उस निश्चित उच्चारण स्थान से नहीं बोला जाता है, तो उच्चारण-संबंधी अशुद्धियाँ होती हैं। कुछ सामान्य उच्चारण-संबंधी अशुद्धियाँ इस प्रकार हैं—

अ/आ-संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अजीविका	आजीविका	अकाश	आकाश
समाजिक	सामाजिक	परिवारिक	पारिवारिक
अवश्यक	आवश्यक	प्राहार	प्रहार
संसारिक	सांसारिक	अधार	आधार
तलाब	तालाब	अनंदित	आनंदित

इ/ई-संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
कवी	कवि	दवाईयाँ	दवाइयाँ
मुनी	मुनि	क्योंकी	क्योंकि
पक्षि	पक्षी	परिक्षण	परीक्षण
तीथि	तिथि	नदि	नदी
निरोग	नीरोग	उन्नती	उन्नति

उ/ऊ-संबंधी अशुद्धियाँ

उँचाई	ऊँचाई	सुची	सूची
प्रभू	प्रभु	गुरू	गुरु
शुरु	शुरू	हिंदु	हिंदू
ज़रुर	ज़रूर	रूपया	रुपया
साधू	साधु	गेहुँ	गेहूँ

ऋ-संबंधी अशुद्धियाँ

श्रृंगार	श्रृंगार	ग्रहस्थ	गृहस्थ
द्रश्य	दृश्य	ग्रहणी	गृहिणी
क्रपा	कृपा	रितु	ऋतु
घ्रणा	घृणा	रिषी	ऋषि

ए/ऐ-संबंधी अशुद्धियाँ

चाहिये	चाहिए	ऐसा	ऐसा
सैना	सेना	सदेव	सदैव
एनक	ऐनक	पेदावार	पैदावार
एतिहासिक	ऐतिहासिक	देनिक	दैनिक

ओ/औ-संबंधी अशुद्धियाँ

रौशनी	रोशनी	पोधा	पौधा
बोद्धिक	बौद्धिक	भोगोलिक	भौगोलिक
पोराणिक	पौराणिक	मनोती	मनौती
ओकात	औकात	ओद्योगिक	औद्योगिक

अनुस्वार/अनुनासिक-संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
चांदनी	चाँदनी	बांसुरी	बाँसुरी
डांट	डाँट	जहां	जहाँ
आंधी	आँधी	आंख	आँख

अन्य अशुद्धियाँ

सुशमा	सुषमा	नमश्कार	नमस्कार
दुरदशा	दुर्दशा	अमावश्या	अमावस्या
प्रसंशा	प्रशंसा	श्रेष्ट	श्रेष्ठ
जबाब	जवाब	पूज्यनीय	पूजनीय
लछमी	लक्ष्मी	कृप्या	कृपया
प्रान	प्राण	परणाम	प्रणाम
आर्दश	आदर्श	रामायन	रामायण
निर्दोश	निर्दोष	नछत्र	नक्षत्र

हमने जाना

- वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई होती है, जिसके खंड नहीं किए जा सकते हैं।
- वर्णमाला वर्णों का व्यवस्थित तथा क्रमबद्ध समूह होता है।
- वर्ण दो प्रकार के होते हैं—स्वर तथा व्यंजन।
- ह्रस्व स्वरों के उच्चारण में कम समय तथा दीर्घ स्वरों के उच्चारण में अधिक समय लगता है।
- व्यंजन तीन प्रकार के होते हैं—स्पर्श व्यंजन, अंतस्थ व्यंजन और ऊष्म व्यंजन।
- श्वास-मात्रा के आधार पर व्यंजन दो प्रकार के होते हैं—अल्पप्राण व्यंजन तथा महाप्राण व्यंजन।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. भाषा की सर्वाधिक छोटी इकाई कौन-सी है?

वाक्य   शब्द   वर्ण

ख. स्वतंत्र ध्वनियाँ कौन-सी हैं?

व्यंजन   संयुक्त व्यंजन   स्वर

2. शब्द में आए सभी वर्ण अलग कीजिए।

क. सज्जन — + — + — + — + — + — + —

ख. गट्ठर — + — + — + — + — + — + —

ग. डॉक्टर — + — + — + — + — + — + —

घ. फ़सल — + — + — + — + — + —

3. क, ख, ग, घ, ङ का उच्चारण कीजिए।

इनका उच्चारण करते समय जिह्वा कंठ से स्पर्श करती है।

स्पर्श व्यंजनों को बोलते समय जिह्वा मुख के किसी-न-किसी भाग का स्पर्श करती है।

इन स्पर्श व्यंजनों को बोलें तथा सही उच्चारण स्थल से मिलाएँ।

क. च छ ज झ ञ	मूर्धा
ख. ट ठ ड ढ ण	तालु
ग. त थ द ध न	ओष्ठ
घ. प फ ब भ म	दंत

4. दिए गए शब्दों का शुद्ध रूप लिखिए।

क. संसारिक	______	ख. दवाईयाँ	______
ग. गुरू	______	घ. श्रृंगार	______
ङ. एतिहासिक	______	च. भोगोलिक	______

5. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. ह्रस्व स्वर दीर्घ स्वर से किस प्रकार भिन्न हैं?

ख. स्पर्श व्यंजन तथा ऊष्म व्यंजन में प्रमुख अंतर क्या है?

कार्यकलाप

उच्चारण स्थल के आधार पर ध्वनियों का वर्गीकरण करते हुए एक चार्ट बनाकर कक्षा में लगाइए।

जाना-समझा

कुछ विद्वान प्लुत स्वरों को भी स्वरों का एक भेद मानते हैं। प्लुत स्वरों का प्रयोग अधिकतर संस्कृत शब्दों में किया जाता है। इनके उच्चारण में तीन मात्रा का समय लगता है, जिसे '३' के चिह्न द्वारा दर्शाया जाता है; जैसे—ओ३म।

3 संधि

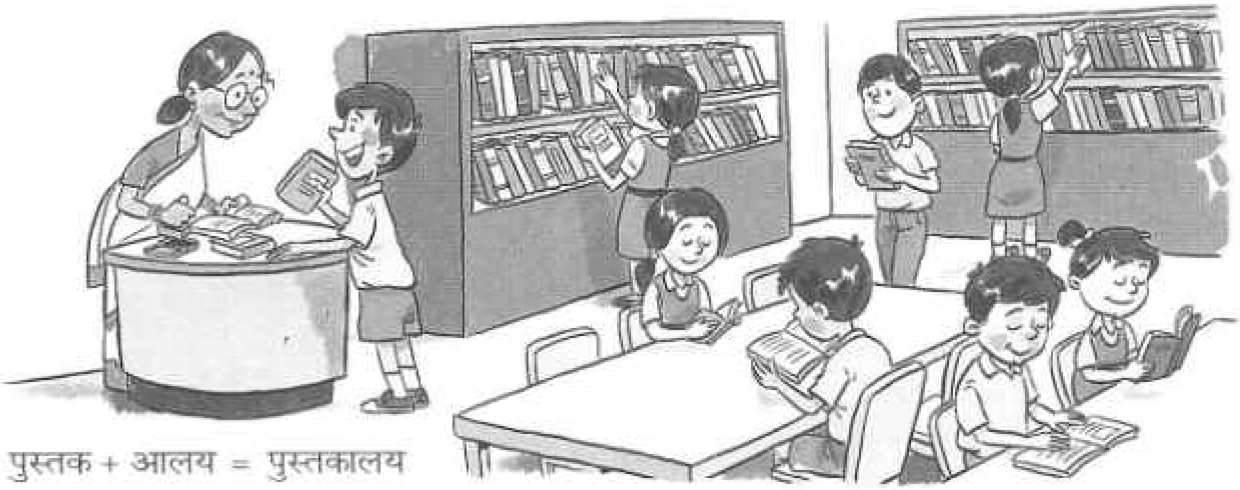

पुस्तक + आलय = पुस्तकालय

चित्र देखकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- 'पुस्तकालय' शब्द किन दो शब्दों से मिलकर बना है? ____________________
- 'पुस्तक' शब्द की अंतिम ध्वनि कौन-सी है? ____________________
- 'आलय' शब्द की प्रथम ध्वनि कौन-सी है? ____________________
- 'अ' तथा 'आ' की ध्वनि मिलकर कौन-सी ध्वनि बनी? ____________________

संधि का अर्थ है मेल या जुड़ना। जब दो ध्वनियाँ पास आती हैं, तब उनमें एक विकार उत्पन्न होता है। दोनों ध्वनियाँ मिलकर एक अन्य ध्वनि में परिवर्तित हो जाती हैं; जैसे—
पुस्तक + आलय = अ + आ = आ।

दो ध्वनियों के मेल से उनमें होनेवाले रूप-परिवर्तन को संधि कहते हैं।

संधि किए हुए शब्दों को पुनः संधि से पहले वाली स्थिति में ले आना संधि-विच्छेद कहलाता है।

पुस्तकालय = पुस्तक + आलय = संधि-विच्छेद
पुस्तक + आलय = पुस्तकालय = संधि

संधि के भेद

संधि के प्रमुख तीन भेद हैं—स्वर संधि, व्यंजन संधि तथा विसर्ग संधि।

स्वर संधि

दो स्वरों के मेल से, उनमें होनेवाले रूप-परिवर्तन को स्वर संधि कहते हैं।

स्वर संधि के भेद

स्वर संधि के पाँच भेद हैं—दीर्घ संधि, गुण संधि, वृद्धि संधि, यण संधि तथा अयादि संधि।

दीर्घ संधि

जब ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ तथा ऋ के बाद सजातीय स्वर आएँ, तब वे मिलकर क्रमशः आ, ई, ऊ तथा ऋ हो जाते हैं।

अ + अ = आ	पीत + अंबर	=	पीतांबर
अ + आ = आ	हिम + आलय	=	हिमालय
आ + अ = आ	रेखा + अंकित	=	रेखांकित
आ + आ = आ	चिकित्सा + आलय	=	चिकित्सालय
इ + इ = ई	हरि + इच्छा	=	हरीच्छा
इ + ई = ई	परि + ईक्षा	=	परीक्षा
ई + इ = ई	योगी + इंद्र	=	योगींद्र
ई + ई = ई	रजनी + ईश	=	रजनीश
उ + उ = ऊ	सु + उक्ति	=	सूक्ति
उ + ऊ = ऊ	सिंधु + ऊर्मि	=	सिंधूर्मि
ऊ + उ = ऊ	वधू + उपदेश	=	वधूपदेश
ऊ + ऊ = ऊ	वधू + ऊर्जा	=	वधूर्जा
ऋ + ऋ = ऋ	मातृ + ऋण	=	मातृण

गुण संधि

यदि अ/आ के बाद इ/ई, उ/ऊ अथवा ऋ आएँ, तो ये मिलकर क्रमशः ए, ओ तथा अर् में परिवर्तित हो जाते हैं।

अ + इ = ए	शुभ + इच्छा	=	शुभेच्छा
आ + इ = ए	राजा + इंद्र	=	राजेंद्र
अ + ई = ए	सुर + ईश	=	सुरेश
आ + ई = ए	रमा + ईश	=	रमेश
अ + उ = ओ	पर + उपकार	=	परोपकार
आ + उ = ओ	महा + उदय	=	महोदय
अ + ऊ = ओ	समुद्र + ऊर्मि	=	समुद्रोर्मि
आ + ऊ = ओ	गंगा + ऊर्मि	=	गंगोर्मि
अ + ऋ = अर्	देव + ऋषि	=	देवर्षि
आ + ऋ = अर्	महा + ऋषि	=	महर्षि

सोचो और बताओ

मत + अनुसार = ________ स्व + इच्छा = ________ गण + ईश = ________

वृद्धि संधि

यदि अ/आ के बाद ए/ऐ अथवा ओ/औ आएँ, तो ये मिलकर क्रमशः ऐ, औ में परिवर्तित हो जाते हैं।

अ + ए = ऐ	एक + एक	=	एकैक
अ + ऐ = ऐ	मत + ऐक्य	=	मतैक्य
आ + ए = ऐ	तथा + एव	=	तथैव
आ + ऐ = ऐ	महा + ऐश्वर्य	=	महैश्वर्य
अ + ओ = औ	परम + ओजस्वी	=	परमौजस्वी
अ + औ = औ	वन + औषधि	=	वनौषधि
आ + ओ = औ	महा + ओजस्वी	=	महौजस्वी
आ + औ = औ	महा + औदार्य	=	महौदार्य

यण संधि

यदि इ/ई, उ/ऊ अथवा ऋ के बाद भिन्न स्वर हो, तो ये मिलकर क्रमशः य, व, र में परिवर्तित हो जाते हैं।

इ + अ = य	अति + अधिक	=	अत्यधिक
इ + आ = या	परि + आवरण	=	पर्यावरण
इ + उ = यु	उपरि + उक्त	=	उपर्युक्त
ई + ऊ = यू	नदी + ऊर्मि	=	नद्यूर्मि
उ + अ = व	सु + अच्छ	=	स्वच्छ
उ + आ = वा	सु + आगत	=	स्वागत
ऋ + अ = र	पितृ + अनुमति	=	पित्रनुमति
ऋ + आ = रा	मातृ + आनंद	=	मात्रानंद

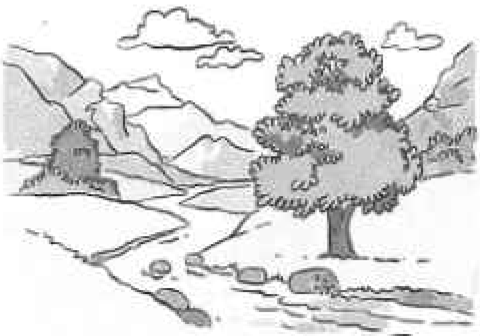

अयादि संधि

यदि ए/ऐ अथवा ओ/औ के बाद कोई भिन्न स्वर आता है, तो ए, ऐ, ओ तथा औ क्रमशः अय्, आय्, अव् तथा आव् हो जाते हैं।

ए + अ = अय्	ने + अन	=	नयन
ऐ + अ = आय्	गै + अक	=	गायक
ओ + अ = अव्	पो + अन	=	पवन
औ + उ = आव्	भौ + उक	=	भावुक

सोचो और बताओ

सदा + एव = ____________ यदि + अपि = ____________

व्यंजन संधि

व्यंजन तथा व्यंजन के मध्य अथवा स्वर तथा व्यंजन के मध्य हुई संधि को व्यंजन संधि कहते हैं; जैसे—

उत् + लास = उल्लास → त् + ल → (व्यंजन तथा व्यंजन के मध्य)

वि + छेद = विच्छेद → इ + छ → (स्वर तथा व्यंजन के मध्य)

व्यंजन संधि के प्रमुख नियम

- **वर्ग के पहले वर्ण का तीसरे वर्ण में परिवर्तित होना**

यदि क्, च्, ट्, त्, प् के बाद उसी वर्ग का तीसरा अथवा चौथा वर्ण आए अथवा य, र, ल, व अथवा कोई स्वर आए, तो क्, च्, ट्, त्, प् अपने वर्ग के तीसरे वर्ण में परिवर्तित हो जाते हैं।

कवर्ग	क् का ग् में परिवर्तित होना	दिक् + गज	=	दिग्गज
चवर्ग	च् का ज् में परिवर्तित होना	अच् + अंत	=	अजंत
टवर्ग	ट् का ड् में परिवर्तित होना	षट् + आनन	=	षडानन
तवर्ग	त् का द् में परिवर्तित होना	तत् + रूप	=	तद्रूप
पवर्ग	प् का ब् में परिवर्तित होना	अप् + ज	=	अब्ज

- **पहले वर्ण का पाँचवें वर्ण में परिवर्तित होना**

यदि क्, च्, ट्, त्, प् के बाद न अथवा म आता है, तो क्, च्, ट्, त्, प् अपने वर्ग के पाँचवें वर्ण में परिवर्तित हो जाते हैं।

क् का ङ् में	वाक् + मय = वाङ्मय	च् का ञ् में	अच् + नाश = अञ्नाश
ट् का ण् में	षट् + मुख = षण्मुख	त् का न् में	सत् + मार्ग = सन्मार्ग
प् का म् में	अप् + मय = अम्मय		

- **म् का अनुस्वार होना**

यदि म् के पश्चात कोई स्पर्श व्यंजन आता है, तो म् अनुस्वार में बदल जाता है।

म् + क	अहम् + कार = अहंकार	म् + ग	सम् + गम = संगम
म् + च	सम् + चय = संचय	म् + त	सम् + तोष = संतोष

यदि म् के पश्चात य, र, ल, व, श, ष, स अथवा ह हो, तो म् अनुस्वार में बदल जाता है।

म् + य	सम् + योग = संयोग	म् + व	सम् + विधान = संविधान
म् + र	सम् + रक्षण = संरक्षण	म् + श	सम् + शय = संशय
म् + ल	सम् + लग्न = संलग्न	म् + स	सम् + सार = संसार
म् + व	सम् + वाद = संवाद	म् + ह	सम् + हार = संहार

• त् से संबंधित नियम

त् + ई	=	दी	जगत् + ईश	=	जगदीश
त् + च	=	च्च	उत् + चारण	=	उच्चारण
त् + ज	=	ज्ज	सत् + जन	=	सज्जन
त् + ल	=	ल्ल	तत् + लीन	=	तल्लीन
त् + श्	=	च्छ	उत् + श्वास	=	उच्छ्वास
त् + ह	=	द्ध	उत् + हार	=	उद्धार

• **स्वर के बाद का छ, च्छ में बदल जाना**

अ + छ	=	च्छ	स्व + छंद	=	स्वच्छंद
इ + छ	=	च्छ	वि + छेद	=	विच्छेद
उ + छ	=	च्छ	अनु + छेद	=	अनुच्छेद
आ + छ	=	च्छ	आ + छादन	=	आच्छादन

• न का ण होना

ऋ, र तथा ष के बाद यदि न व्यंजन आता है, तो न का ण हो जाता है।

ऋ + न	=	ऋण	तृष् + ना	=	तृष्णा
चर + न	=	चरण	भूष + न	=	भूषण

विसर्ग संधि

विसर्ग का किसी स्वर या व्यंजन से मेल होने पर उसमें आया परिवर्तन विसर्ग संधि कहलाता है।

विसर्ग संधि के कुछ उदाहरण

तमः + गुण	=	तमोगुण	मनः + विकार	=	मनोविकार
निः + चय	=	निश्चय	निः + छल	=	निश्छल
निः + फल	=	निष्फल	दुः + कर	=	दुष्कर
निः + रोग	=	नीरोग	निः + रस	=	नीरस
दुः + गंध	=	दुर्गंध	दुः + आत्मा	=	दुरात्मा
नमः + कार	=	नमस्कार	पुरः + कार	=	पुरस्कार
निः + मल	=	निर्मल	निः + धन	=	निर्धन
मनः + भाव	=	मनोभाव	सरः + वर	=	सरोवर

टिप्पणी विद्यार्थी विसर्ग संधि के बारे में अगली कक्षा में विस्तार से पढ़ेंगे।

हमने जाना

- दो ध्वनियों के मेल से उनमें होनेवाले रूप-परिवर्तन को संधि कहते हैं।
- संधि तीन प्रकार की होती है—स्वर संधि, व्यंजन संधि तथा विसर्ग संधि।
- स्वर संधि दो स्वरों के मध्य होती है। इसके पाँच भेद हैं—दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण तथा अयादि।
- व्यंजन संधि दो व्यंजनों के मध्य या व्यंजन तथा स्वर के मध्य होती है।
- विसर्ग संधि में विसर्ग का मेल स्वर अथवा व्यंजन से होता है।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. संधि किए हुए शब्दों को संधि-पूर्व स्थिति में लाना क्या कहलाता है?

संधि-विग्रह   संधि-विच्छेद   संधि-वियोग

ख. स्वर संधि किनके मध्य होती है?

दो स्वरों के   दो व्यंजनों के   स्वर तथा व्यंजन के

2. संधि करें तथा संधि का नियम लिखिए।

	संधि	संधि का नियम
क. हिम + आलय	हिमालय	अ + आ = आ
ख. हरि + इच्छा	______	______
ग. सु + उक्ति	______	______
घ. रेखा + अंकित	______	______
ङ. पर + उपकार	______	______
च. मत + ऐक्य	______	______
छ. परि + आवरण	______	______

3. संधि-विच्छेद कीजिए।

क. दिग्गज ______ + ______   ख. अहंकार ______ + ______

ग. षडानन ______ + ______   घ. संचय ______ + ______

ङ. वाङ्मय ________ + ________ च. संवाद ________ + ________

छ. सन्मार्ग ________ + ________ ज. उद्धार ________ + ________

4. संधि-विच्छेद कीजिए तथा संधि को पहचानकर उसका नाम लिखिए।

शब्द	संधि-विच्छेद	संधि का नाम
क. चिकित्सालय	________ + ________	________
ख. शुभेच्छा	________ + ________	________
ग. संविधान	________ + ________	________
घ. निष्फल	________ + ________	________
ङ. मनोभाव	________ + ________	________

5. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. संधि तथा संधि-विच्छेद में क्या अंतर है?

ख. स्वर संधि के भेदों के नाम लिखिए तथा उनका एक-एक उदाहरण दीजिए।

ग. विसर्ग संधि तथा व्यंजन संधि में क्या अंतर है?

कार्यकलाप

दिए गए आरेख को पूरा कीजिए।

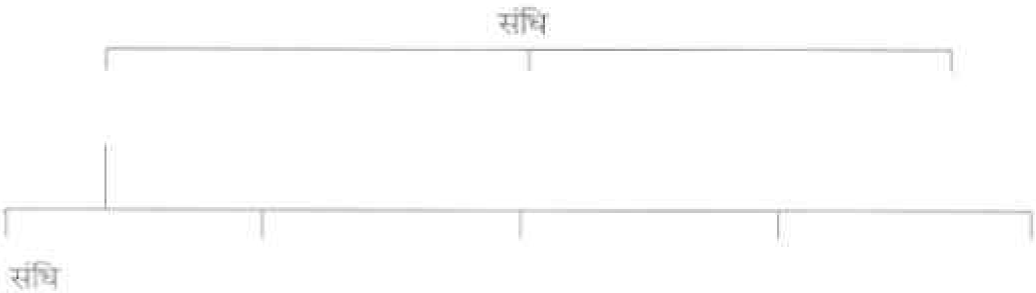

जाना-समझा

संधि के ज्ञान द्वारा हम वर्तनी में होनेवाली अशुद्धियों को दूर कर सकते हैं।

4 शब्द-विचार

चित्र देखकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

» मकान किससे बनाया जा रहा है? ____________

» क्या ईंटों के ढेर को मकान कह सकते हैं? ____________

» क्यों? ____________

जिस प्रकार ईंटों से मकान का निर्माण किया जाता है, उसी प्रकार वर्णों से शब्द बनाए जाते हैं। वर्णों के समूह को शब्द नहीं कहा जा सकता। शब्द बनाने के लिए वर्णों का सार्थक समूह आवश्यक है।

वर्णों के ऐसे सार्थक समूह को, जिसका एक निश्चित अर्थ होता है, उसे शब्द कहते हैं।

शब्दों का वर्गीकरण

शब्दों का वर्गीकरण चार आधारों पर किया जाता है—

1. अर्थ के आधार पर
2. उत्पत्ति के आधार पर
3. रचना के आधार पर
4. रूपांतर के आधार पर

1. अर्थ के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण

अर्थ के आधार पर शब्द दो प्रकार के होते हैं—सार्थक शब्द तथा निरर्थक शब्द।

सार्थक शब्द जिन शब्दों का कोई अर्थ होता है, उन्हें सार्थक शब्द कहते हैं। एकार्थक शब्द, विलोम शब्द, पर्यायवाची शब्द, अनेकार्थक शब्द, वाक्यांश के लिए एक शब्द, श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द आदि सार्थक शब्दों की श्रेणी में आते हैं।

टिप्पणी सार्थक शब्दों के बारे में अगले अध्यायों में विस्तार से पढ़ेंगे।

निरर्थक शब्द जिन शब्दों का कोई अर्थ नहीं निकलता, उन्हें निरर्थक शब्द कहते हैं। कभी-कभी बोलचाल में सार्थक शब्दों के साथ निरर्थक शब्दों का प्रयोग भी किया जाता है; जैसे—

- मुझे रोज़ होटल-वोटल जाना पसंद नहीं।
- कपड़े-वपड़े तो ढंग के पहना करो।

2. उत्पत्ति के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण

शब्द किस प्रकार से उत्पन्न हुए हैं अथवा कहाँ से लिए गए हैं, इस आधार पर शब्द चार प्रकार के होते हैं—तत्सम, तद्भव, देशज तथा विदेशज।

तत्सम शब्द संस्कृत भाषा के ऐसे शब्द, जो अपने मूल रूप में हिंदी में प्रयोग किए जाते हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं।

तद्भव शब्द संस्कृत भाषा के ऐसे शब्द, जो अपने परिवर्तित रूप में हिंदी में प्रयोग किए जाते हैं, तद्भव शब्द कहलाते हैं।

कुछ तत्सम शब्द तथा उनके तद्भव रूप इस प्रकार हैं—

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
उच्च	ऊँचा	काक	कौआ
ग्रीष्म	गरमी	घंटिका	घंटी
लौह	लोहा	घट	घड़ा
धैर्य	धीरज	नृत्य	नाच
निद्रा	नींद	पाद	पाँव
वृद्ध	बूढ़ा	अश्रु	आँसू
सुपुत्र	सपूत	आम्र	आम
सूर्य	सूरज	श्रावण	सावन
अक्षि	आँख	अंधकार	अँधेरा
जिह्वा	जीभ	सत्य	सच
मुख	मुँह	संध्या	शाम
शत	सौ	सप्त	सात

सोचो और बताओ

इन शब्दों के तद्भव रूप क्या हैं?

दुग्ध ____________ दधि ____________ रात्रि ____________

देशज शब्द देश की क्षेत्रीय भाषाओं से लिए गए शब्द देशज शब्द कहलाते हैं। कटोरा, जूता, कलाई, फुनगी, पगड़ी, लोटा, पेट, खिचड़ी, डिबिया आदि देशज शब्द हैं।

विदेशज शब्द अरबी, फ़ारसी, अंग्रेज़ी, तुर्की, पुर्तगाली आदि विदेशी भाषाओं के शब्द, जो हिंदी भाषा में प्रचलित हैं, विदेशज शब्द कहलाते हैं; जैसे—

अरबी	उम्र, किस्मत, मौसम, मजबूर, दवा, नतीज़ा
फ़ारसी	कबूतर, कमर, खरगोश, तमाशा, कुश्ती, चेहरा
अंग्रेज़ी	अपील, फीस, कूपन, सेकंड, सिनेमा, साइकिल, कैलेंडर
तुर्की	चाकू, तोप, लाश, उर्दू, कालीन, चिक, चमचा
पुर्तगाली	कॉफी, बटन, कमरा, अलमारी, काजू, चाबी, तौलिया

विशेष हिंदी भाषा में ऐसे भी कई शब्द हैं, जो दो भाषाओं के मेल से बने हैं। ऐसे शब्द वर्णसंकर शब्द कहलाते हैं; जैसे—

वर्ष (संस्कृत) + गाँठ (हिंदी) = वर्षगाँठ
लाठी (हिंदी) + चार्ज (अंग्रेज़ी) = लाठीचार्ज
कवि (हिंदी) + दरबार (फ़ारसी) = कविदरबार
नेक (फ़ारसी) + नीयत (अरबी) = नेकनीयत

3. रचना के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण

रचना के आधार पर शब्द तीन प्रकार के होते हैं—रूढ़ शब्द, यौगिक शब्द, योगरूढ़ शब्द।

रूढ़ शब्द

रूढ़ शब्द ऐसे शब्द होते हैं, जो

- परंपरा से ही किसी व्यक्ति, वस्तु तथा स्थान के लिए रूढ़ अथवा मान्य होते हैं।
- ये अन्य शब्दों के योग से नहीं बनते।
- यदि इनके टुकड़े किए जाएँ, तो ये अर्थहीन हो जाते हैं।
- खेत, कमल, घर, लोटा, घोड़ा आदि रूढ़ शब्द हैं।

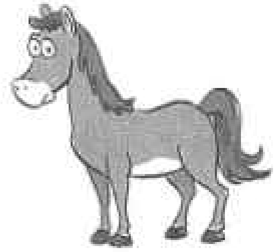

यौगिक शब्द

यौगिक शब्द ऐसे शब्द होते हैं, जो

- दो शब्दों के योग से बनते हैं।
- खंड करने पर इनके खंड सार्थक होते हैं।
- बैलगाड़ी, दूधवाला, घुड़सवार, पानवाला, सेनापति, राजपुत्र आदि यौगिक शब्द हैं।

योगरूढ़ शब्द

योगरूढ़ शब्द ऐसे शब्द होते हैं, जो

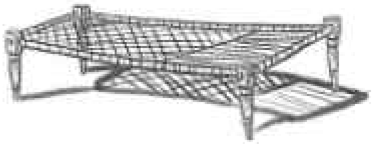

- दो शब्दों के योग से बनते हैं।
- खंड करने पर दोनों खंड सार्थक होते हैं।
- ये सामान्य अर्थ को प्रकट न करके विशिष्ट अर्थ को प्रकट करते हैं।
- हिमालय, पीतांबर, तिरंगा, चारपाई, लंबोदर आदि योगरूढ़ शब्द हैं।

4. रूपांतर के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण

रूपांतर के आधार पर शब्द दो प्रकार के होते हैं—विकारी तथा अविकारी।

विकारी शब्द ऐसे शब्द, जिनमें लिंग, वचन, कारक अथवा काल के आधार पर विकार उत्पन्न होता है, उन्हें विकारी शब्द कहते हैं। संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया तथा विशेषण विकारी शब्द हैं।

अविकारी शब्द जिन शब्दों में लिंग, वचन, कारक तथा काल के आधार पर कोई विकार उत्पन्न नहीं होता, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं। क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक अविकारी शब्द हैं।

टिप्पणी विकारी तथा अविकारी शब्दों के बारे में अगले अध्यायों में विस्तार से पढ़ेंगे।

हमने जाना

- वर्णों के ऐसे सार्थक समूह को, जिसका एक निश्चित अर्थ होता है, शब्द कहते हैं।
- शब्दों को अर्थ, उत्पत्ति, रचना तथा रूपांतर के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है।
- सार्थक शब्दों का अर्थ होता है और निरर्थक शब्दों का कोई अर्थ नहीं होता।
- उत्पत्ति के आधार पर शब्द तत्सम, तद्भव, देशज तथा विदेशज होते हैं।
- रचना के आधार पर शब्द रूढ़, यौगिक तथा योगरूढ़ होते हैं।
- रूपांतर के आधार पर शब्द विकारी तथा अविकारी होते हैं।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. तत्सम शब्द किस आधार पर वर्गीकृत शब्द हैं?

रचना के उत्पत्ति के अर्थ के

ख. देश की क्षेत्रीय भाषाओं से लिए गए शब्द क्या कहलाते हैं?

विदेशज शब्द तद्भव शब्द देशज शब्द

2. सूर्य → संस्कृत का शब्द   सूरज → सूर्य का हिंदी रूप

संस्कृत के शब्द तत्सम और उनके हिंदी रूप तद्भव होते हैं।

दिए गए शब्दों के तद्भव रूप लिखिए।

क. ग्रीष्म	गरमी	ख. नृत्य	______
ग. निद्रा	______	घ. अश्रु	______
ङ. अक्षि	______	च. सत्य	______
छ. जिह्वा	______	ज. सप्त	______

3. घर → रूढ़ शब्द   दूधवाला → यौगिक शब्द   महादेव → योगरूढ़ शब्द

इनके लिए एक शब्द लिखिए।

परंपरा से किसी अर्थ में प्रचलित शब्द ______

दो शब्दों के योग से बने शब्द ______

यौगिक, परंतु किसी अर्थ विशेष में रूढ़ शब्द ______

यौगिक, रूढ़ तथा योगरूढ़ शब्दों को मिलाइए।

नदी	रूढ़	लोटा
सब्जीवाला		राजकुमारी
वीणापाणि		राहखर्च
घोड़ा	यौगिक	पीतांबर
सेनापति		फल
लंबोदर	योगरूढ़	चतुर्भुज

4. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. रूढ़, यौगिक तथा योगरूढ़ शब्दों में क्या अंतर है?

ख. विकारी तथा अविकारी शब्दों में क्या अंतर है?

कार्यकलाप

विद्यार्थियों को दो समूहों में बाँटें। एक समूह तत्सम तथा तद्भव शब्दों की, दूसरा समूह रूढ़, यौगिक तथा योगरूढ़ शब्दों की सूची बनाए।

जाना-समझा

ध्वनि के आधार पर रचित क्रियाएँ; जैसे—छपाक-छपाक, खट-खट, फट-फट आदि देशज होती हैं।

5 पर्यायवाची शब्द

चित्र देखकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

चित्र के आधार पर कौन-सी पंक्ति गलत है और कौन-सी सही?

- आसमान में बादल छाए हैं।
- नभ में मेघ छाए हैं।
- गगन में घन छाए हैं।
- आकाश में जलद छाए हैं।

उपर्युक्त सभी पंक्तियाँ सही हैं। आसमान, नभ, गगन तथा आकाश 'आसमान' का तथा बादल, मेघ, घन और जलद 'बादल' का ही अर्थ दे रहे हैं। ये सभी पर्यायवाची शब्द हैं। समान होने पर भी इनमें सूक्ष्म अंतर होता है। विषय तथा स्थान के अनुरूप इनका प्रयोग करना चाहिए।

समान अर्थ बतानेवाले शब्द पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं।

कुछ पर्यायवाची शब्द पढ़िए तथा समझिए।

1. अंधकार — तम, अँधियारा, तिमिर, अँधेरा
2. अंबर — व्योम, नभ, गगन, आकाश
3. अहंकार — अभिमान, गर्व, दर्प, घमंड
4. अनुपम — अद्भुत, अनूठा, अद्‌वितीय, मनोहर

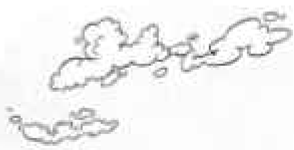

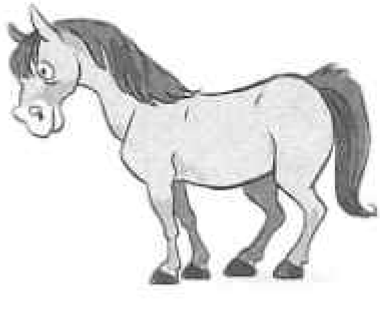

5. अश्व — घोड़ा, तुरंग, वाजि, हय
6. अनल — आग, अग्नि, पावक, दहन
7. आभूषण — भूषण, अलंकार, ज़ेवर, गहना
8. आश्चर्य — हैरानी, अचरज, अचंभा, विस्मय
9. आनंद — हर्ष, प्रसन्नता, उल्लास, आमोद
10. आयु — अवस्था, वय, जीवनकाल, उम्र
11. इच्छा — चाह, आकांक्षा, मनोरथ, कामना
12. उपहार — सौगात, तोहफ़ा, भेंट, नज़राना

13. कमल — नीरज, सरोज, सरसिज, पंकज
14. कपड़ा — वस्त्र, पट, वसन, चीर
15. कामदेव — काम, मनसिज, अनंग, मदन
16. काया — तन, शरीर, गात, देह
17. कृषक — किसान, खेतिहर, हलवाहा, काश्तकार
18. खग — पखेरू, पंछी, नभचर, विहग
19. गज — हाथी, हस्ती, मतंग, कुंजर
20. गणेश — गणपति, गजानन, एकदंत, विनायक

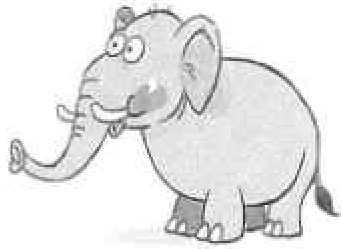

सोचो और बताओ

पर्यायवाची शब्द के सही जोड़े पर सही (✓) का चिह्न लगाइए।

क. अग्नि — अनिल | ख. नेत्र — नयन
ग. कमल — सर | घ. कपड़ा — वस्त्र

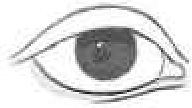

21. गंगा — सुरसरिता, देवनदी, जाह्नवी, मंदाकिनी
22. घर — आवास, सदन, धाम, आलय
23. चरण — पग, पैर, पाद, पद
24. जल — पानी, नीर, तोय, वारि
25. थोड़ा — अल्प, न्यून, ज़रा, कम
26. दुख — कष्ट, वेदना, व्यथा, क्लेश
27. नया — नूतन, नवीन, नव्य, नव
28. निर्धन — गरीब, कंगाल, दरिद्र, धनहीन
29. निपुण — कुशल, दक्ष, प्रवीण, पटु
30. नौका — डोंगी, तरिणी, तरी, नाव
31. पत्नी — भार्या, अर्धांगिनी, सहधर्मिणी, दारा

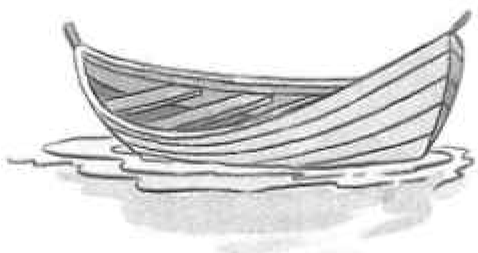

32. पथ	मार्ग, मग, राह, रास्ता
33. पत्ता	पत्र, पल्लव, किसलय, पर्ण
34. प्रार्थना	विनती, विनय, निवेदन, अनुरोध
35. प्रातः	प्रभात, भोर, सुबह, सवेरा
36. बंदर	कपि, हरि, मर्कट, वानर
37. बाल	केश, कच, कुंतल, अलक
38. बिजली	चपला, तड़ित, विद्युत, दामिनी
39. मोर	मयूर, नीलकंठ, कलापी, चंद्रपाखी
40. यमुना	सूर्यसुता, सूर्यतनया, कालिंदी, कृष्णा

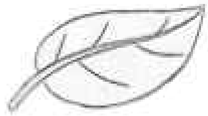

सोचो और बताओ

असंगत पर गोला लगाइए।

क. पृथ्वी	धरती	धारा	वसुंधरा	वसुधा
ख. मित्र	मीत	सखा	सहचर	दोस्ती

41. रात्रि	निशा, रजनी, यामिनी, विभावरी
42. लहर	ऊर्मि, तरंग, हिलोर
43. लहू	रुधिर, रक्त, खून, शोणित
44. वृक्ष	पेड़, तरुवर, विटप, तरु
45. विश्व	जगत, लोक, दुनिया, भव
46. शशि	हिमांशु, रजनीश, मयंक, चाँद
47. शत्रु	रिपु, दुश्मन, वैरी, अरि
48. शिक्षक	गुरु, आचार्य, अध्यापक, उपाध्याय
49. शेर	सिंह, केसरी, वनराज, शार्दूल
50. संग्राम	युद्ध, रण, समर, लड़ाई
51. सरस्वती	भारती, गिरा, शारदा, वीणापाणि
52. सागर	सिंधु, जलधि, रत्नाकर, उदधि
53. साँप	नाग, भुजंग, विषधर, अहि
54. सुर	देवता, देव, आदित्य, निर्जर
55. सूर्य	अंशुमाली, भानु, दिनकर, दिवाकर
56. स्त्री	नारी, वनिता, महिला, रमणी
57. स्वर्ण	सोना, कंचन, कनक, हेम
58. हिरण	कृष्णसार, मृग, सारंग, कुरंग

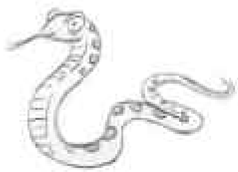

हमने जाना

- पर्यायवाची शब्द समान अर्थ बताते हैं।
- इनका प्रयोग विषय तथा स्थान के अनुसार करना चाहिए।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. कौन-सा शब्द अनल का पर्यायवाची नहीं है?

आग अग्नि अनिल

ख. कौन-सा शब्द कपड़े का पर्यायवाची नहीं है?

वस्त्र चिर पट

2. दिए गए शब्दों के लिए दो-दो पर्यायवाची रूप लिखिए।

क. घर ________ ________ **ख.** उपहार ________ ________

ग. गंगा ________ ________ **घ.** निर्धन ________ ________

ङ. शिक्षक ________ ________ **च.** प्रार्थना ________ ________

छ. शशि ________ ________ **ज.** सागर ________ ________

झ. विश्व ________ ________ **ञ.** काया ________ ________

3. रंगीन शब्दों के पर्यायवाची रूप लिखकर रिक्त स्थानों को भरिए।

क. कभी अहंकार नहीं करना चाहिए। ________ टूटते देर नहीं लगती।

ख. कितना अनुपम, कितना ________ दृश्य है।

ग. दूसरों के **दुख** को समझकर उनकी ________ को कम करने का प्रयास करो।

घ. उसे देख मुझे अत्यंत आश्चर्य हुआ। ________ से मेरा मुँह खुले का खुला रह गया।

ङ. किसान ने हल उठाया और ________ अपने खेतों की ओर चल पड़ा।

च. शत्रु से सदा सावधान रहें। ________ कभी भी आक्रमण कर सकता है।

4. **पर्यायवाची शब्दों को मिलाइए।**

क. तुरंग	उम्र	घोड़ा
ख. वय	धाम	आलय
ग. काम	तोय	वारि
घ. सदन	तरी	नाव
ङ. तरिणी	वाजि	अवस्था
च. नीर	अनंग	मदन

5. **प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

क. पर्यायवाची शब्द किसे कहते हैं?

ख. पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग करते समय किसका ध्यान रखना चाहिए?

ग. दिए गए शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची रूप लिखिए।

अंबर, आनंद, शशि, विश्व, पथ

कार्यकलाप

नीचे दी गई कविता की पंक्तियाँ पढ़िए।

बिजली के आँगन में अम्माँ,
चलती है कितनी तलवार।
कैसी चमक रही है फिर भी,
क्यों खाली जाते हैं वार।।

क्या अब तक तलवार चलाना,
माँ वे सीख नहीं पाए।
इसीलिए क्या आज सीखने,
आसमान पर हैं आए।।

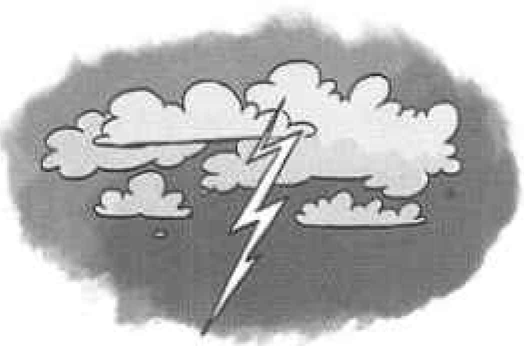

कविता में आए रंगीन शब्दों को ध्यान से पढ़िए। इन शब्दों के पर्यायवाची रूप सोचिए। इस कविता में आए जितने शब्दों के पर्यायवाची रूप आप जानते हैं, उन्हें लिखिए। जो नहीं आते, उन्हें अपने मित्रों से पूछिए। आप अपने शिक्षक की सहायता भी ले सकते हैं।

जाना-समझा

पर्यायवाची शब्द के लिए प्रयोग होनेवाला अन्य शब्द 'प्रतिशब्द' भी है, जिसका अर्थ है—किसी शब्द के स्थान पर आनेवाला अन्य शब्द।

6 विलोम शब्द

चित्र देखकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- आलसी व्यक्ति क्या कर रहा है? ______________________
- परिश्रमी व्यक्ति क्या कर रहा है? ______________________
- क्या दोनों व्यक्ति समान गुणों का प्रदर्शन कर रहे हैं? ______________________

चित्र में आलसी और परिश्रमी व्यक्ति दिखाई दे रहे हैं। दोनों व्यक्ति गुणों में एकदम विपरीत हैं। उनके गुणों को प्रदर्शित करनेवाले शब्द 'आलसी' तथा 'परिश्रमी' बिलकुल विपरीत अर्थ दे रहे हैं।

ऐसे शब्द, जो विपरीत अर्थ प्रदर्शित करें, विलोम शब्द कहलाते हैं।

विलोम शब्दों के कुछ उदाहरण पढ़िए तथा समझिए।

1.	अधिक	न्यून	8.	आदान	प्रदान
2.	अनुकूल	प्रतिकूल	9.	आरंभ	अंत
3.	अनुराग	विराग	10.	आस्तिक	नास्तिक
4.	अतिवृष्टि	अनावृष्टि	11.	आरोह	अवरोह
5.	अनिवार्य	ऐच्छिक	12.	आज्ञा	अवज्ञा
6.	अपव्ययी	मितव्ययी	13.	इच्छा	अनिच्छा
7.	आदर	निरादर	14.	उत्तम	अधम

15.	उन्नति	अवनति	24.	कीर्ति	अपकीर्ति
16.	उपकार	अपकार	25.	क्षमा	दंड
17.	उपस्थित	अनुपस्थित	26.	गुण	अवगुण
18.	एकता	अनेकता	27.	गुप्त	प्रकट
19.	कठिन	सरल	28.	गहरा	उथला
20.	कटु	मधुर	29.	चंचल	स्थिर
21.	कृतज्ञ	कृतघ्न	30.	चेतन	जड़
22.	कृत्रिम	स्वाभाविक	31.	जागरण	निद्रा
23.	कृपण	दानी	32.	तीव्र	मंद

सोचो और बताओ

दिए गए शब्द का विलोम रूप कौन-सा है?

क. महात्मा	आत्मा	दुरात्मा	बुरी आत्मा
ख. विजय	जय	पराजय	अजय

33.	दयालु	निर्दयी	51.	योगी	भोगी
34.	दुर्लभ	सुलभ	52.	रक्षक	भक्षक
35.	निंदा	स्तुति	53.	राग	द्वेष
36.	निर्माण	विध्वंस	54.	रिक्त	पूर्ण
37.	निर्मल	मलिन	55.	वरदान	अभिशाप
38.	नैतिक	अनैतिक	56.	विरोध	समर्थन
39.	पक्ष	विपक्ष	57.	विशाल	लघु
40.	परतंत्र	स्वतंत्र	58.	विशेष	सामान्य
41.	पवित्र	अपवित्र	59.	शिक्षित	अशिक्षित
42.	पाप	पुण्य	60.	श्वेत	श्याम
43.	प्रत्यक्ष	परोक्ष	61.	संधि	विग्रह
44.	प्रमुख	गौण	62.	संभव	असंभव
45.	प्राचीन	नवीन	63.	संयोग	वियोग
46.	बुराई	भलाई	64.	सगुण	निर्गुण
47.	मूक	वाचाल	65.	सबल	निर्बल
48.	मौखिक	लिखित	66.	सजीव	निर्जीव
49.	यश	अपयश	67.	सुविधा	असुविधा
50.	युद्ध	शांति	68.	सुमति	कुमति

सोचो और बताओ

विलोम शब्द का सही जोड़ा कौन-सा है?

क. मान	सम्मान	ख. ज्ञान	विज्ञान
ग. धर्म	अधर्म	घ. हँसना	हँसाना

69. साकार	निराकार	75. स्थूल	सूक्ष्म
70. साक्षर	निरक्षर	76. हर्ष	शोक
71. साध्य	असाध्य	77. हास्य	रुदन
72. सार्थक	निरर्थक	78. हिंसा	अहिंसा
73. सौभाग्य	दुर्भाग्य	79. हित	अहित
74. स्थायी	अस्थायी	80. होनी	अनहोनी

हमने जाना

- विलोम शब्द विपरीत अर्थ प्रदर्शित करते हैं।
- विलोम शब्दों के अर्थ परस्पर विरोधी होते हैं।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

   क. 'चेतन' का विलोम रूप कौन-सा है?

   चैतन्य   जड़   मंदबुद्धि

   ख. 'पवित्र' का विलोम रूप कौन-सा है?

   मलिन   शुद्ध   अपवित्र

2. दिए गए शब्दों के विलोम रूप लिखिए।

   क. अनुकूल ____________ ख. आदर ____________

   ग. आस्तिक ____________ घ. उत्तम ____________

   ङ. जागरण ____________ च. सार्थक ____________

   छ. विरोध ____________ ज. संभव ____________

3. **रंगीन शब्दों के विलोम रूप लिखकर वाक्य पूरे कीजिए।**

क. अधिकांश लोग इस प्रस्ताव के पक्ष में थे, परंतु कुछ लोग इसके ________ में थे।

ख. मौखिक परीक्षा तो अच्छी हो गई, ________ परीक्षा न जाने कैसी होगी।

ग. मैंने अपनी हिम्मत से **असंभव** काम को भी ________ कर दिखाया है।

घ. विज्ञान हमारे लिए वरदान भी है और ________ भी।

ङ. हमें प्रयास करना चाहिए कि युद्ध न हो, चारों ओर ________ बनी रहे।

च. इस कहानी का आरंभ तो अच्छा था, परंतु मुझे इसका ________ पसंद नहीं आया।

छ. **तीव्र** गति से चलती हुई हवा धीरे-धीरे ________ होती जा रही थी।

ज. प्रदूषण के कारण गंगा का निर्मल जल ________ हो गया है।

4. **वाक्यों में आए विलोम शब्दों के जोड़ों को दिए गए स्थान पर लिखिए।**

क. कक्षा में सभी विद्यार्थी उपस्थित थे, कोई भी अनुपस्थित नहीं था। ________

ख. सभी विद्यार्थियों को एक अनिवार्य तथा चार ऐच्छिक विषय लेने हैं। ________

ग. मुझे इस समस्या का कोई अस्थायी नहीं, बल्कि स्थायी हल बताओ। ________

घ. मेहनती लोग किसी भी असंभव काम को संभव कर सकते हैं। ________

ङ. तुम्हारा कहना सार्थक है, हमें निरर्थक बातों में समय नहीं गँवाना चाहिए। ________

5. **प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

क. विलोम शब्द किसे कहते हैं?

ख. किन्हीं पाँच विलोम शब्दों के जोड़े को वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

कार्यकलाप

विद्यार्थी अपनी पाठ्यपुस्तक का एक अनुच्छेद लेंगे। उसे ध्यानपूर्वक पढ़ेंगे। अनुच्छेद में आए उन शब्दों पर गोला लगाएँगे, जिनके विलोम शब्द हो सकते हैं। उन शब्दों को अपनी कॉपी पर लिखेंगे। जितने शब्दों के विलोम रूप आप जानते हैं, उन्हें लिखेंगे। बाकी अपने मित्रों तथा सहपाठियों से पूछेंगे।

जाना-समझा

तत्सम शब्द का विलोम रूप तत्सम तथा तद्भव शब्द का विलोम रूप तद्भव होता है।

7 अनेकार्थक शब्द

चित्र देखकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

» चित्र में क्या-क्या दिखाई दे रहा है? ________________

» पिता का इशारा किस ओर था? ________________

» बच्चा भ्रमित क्यों हो गया था? ________________

हिंदी भाषा में ऐसे अनेक शब्द हैं, जिनके कई अर्थ निकलते हैं। पतंग भी ऐसा ही शब्द है, जिसके कई अर्थ हैं—सूर्य, पक्षी, नौका, कागज़ की पतंग, टिड्डी, कीट-पतंग आदि। इसी कारण बच्चा भ्रमित था।

ऐसे शब्द, जिनके एक से अधिक अर्थ निकलते हैं, उन्हें अनेकार्थक शब्द कहते हैं।

अनेकार्थक शब्द प्रसंग के अनुरूप अर्थ ग्रहण करते हैं। इसलिए, वाक्य-प्रयोग द्वारा इन्हें भली प्रकार से समझा जा सकता है।

कुछ अनेकार्थक शब्द इस प्रकार हैं—

1. अंग	शरीर का अवयव, शाखा, खंड
2. अंचल	साड़ी का पल्लू, प्रदेश, सिरा
3. अंतर	शेष, दूरी, भेद, हृदय
4. अंश	हिस्सा, भाग, कंधा
5. अचल	दृढ़, स्थिर, पर्वत
6. अनंत	अंतहीन, ईश्वर, आकाश, शेषनाग, विष्णु

7. अशोक — शोकरहित, एक सम्राट, एक वृक्ष
8. आराम — विश्राम, बाग, नीरोग होना, सुख-चैन
9. और — तथा, दूसरा, अधिक, योजक शब्द
10. उत्तर — उत्तर दिशा, जवाब, बाद, पिछला, हल, अतीत
11. कनक — धतूरा, गेहूँ, स्वर्ण
12. कुशल — सुघड़, अभ्यस्त, निपुण, चतुर
13. खग — जुगनू, पक्षी, बाण, तारा, गंधर्व
14. घोड़ा — अश्व, शतरंज का मोहरा, बंदूक का एक भाग
15. चाल — गति, धोखा, चालाकी
16. चपला — बिजली, लक्ष्मी, स्त्री, नटखट, चंचल
17. जड़ — वृक्ष का मूल, मूर्ख, अचेतन

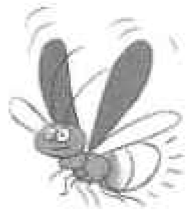

सोचो और बताओ

दो-दो अनेकार्थी शब्द लिखिए।

कर ________ ________ मत ________ ________

18. जलना — (क्रिया) जल जाना, ईर्ष्या करना
19. जीवन — ज़िंदगी, प्राण, जल, वृत्ति
20. तात — पिता, भाई, गुरु, तप्त
21. दंड — सज़ा, डंडा, व्यायाम, दमन
22. दल — झुंड, टुकड़ी, पत्ता
23. नग — पर्वत, नगीना, वृक्ष
24. निशान — धब्बा, चिह्न, झंडा
25. पट — वस्त्र, दरवाज़ा, परदा, चित्र का आधार
26. पृष्ठ — पन्ना (पुस्तक या कॉपी का), पिछला भाग, पीठ
27. पानी — जल, इज़्ज़त, कांति
28. फल — पेड़ का फल, नतीज़ा, मेवा, तलवार, भाले की नोक
29. भाव — श्रद्धा, मतलब, विचार
30. भेद — अंतर, रहस्य, प्रकार
31. मधु — मीठा, शब्द, वसंत ऋतु, अमृत, शहद
32. रस — काव्य रस, अर्क, स्वाद, सार
33. वर — श्रेष्ठ, वरदान, पति
34. विधि — ईश्वर, कानून, रीति, भाग्य

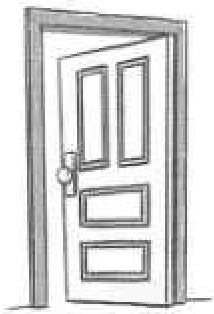

सोचो और बताओ

अनेकार्थक शब्द के गलत अर्थ पर गोला लगाएँ।

क. दंड	सज़ा	डंडा	दामन
ख. वर	पति	वरदान	वर्णन

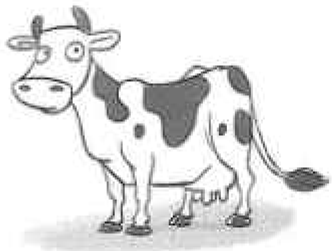

35. शुद्ध — पवित्र, बिना मिलावट के, ठीक
36. **शून्य** — आकाश, खाली, बिंदु, गिनती का अंक
37. **सुरभि** — गाय, सुगंध, पृथ्वी
38. सुधा — अमृत, पानी, दूध
39. हंस — न्यायशील, एक पक्षी, सूर्य, आत्मा
40. हल — खेत जोतने का यंत्र, समाधान, निष्कर्ष
41. श्री — सौंदर्य, संपत्ति, शोभा

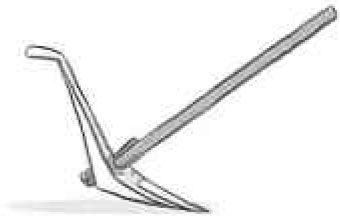

हमने जाना

- **अनेकार्थक शब्दों के अनेक अर्थ होते हैं।**
- **अनेकार्थक शब्द प्रसंग के अनुरूप अर्थ ग्रहण करते हैं।**

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. 'आज मेरे अंश में बहुत दर्द है।' रंगीन शब्द का अर्थ क्या है?

भाग   हिस्सा   कंधा

ख. 'मैंने एक नग पहन रखा है।' रंगीन शब्द का अर्थ क्या है?

पर्वत   वृक्ष   नगीना

2. शब्द का उसके सही अनेकार्थक रूप से मिलान कीजिए।

क. शून्य	जिंदगी, प्राण, जल
ख. जीवन	कानून, रीति, ढंग
ग. उत्तर	आकाश, खाली, बिंदु
घ. तात	जवाब, बाद, हल
ङ. विधि	भाई, गुरु, तप्त

3. असंगत अर्थ पर गोला लगाइए।

क. उत्तर	जवाब	बाद	उतरना	हल
ख. चाल	चालाकी	धोखा	गति	चालबाज़
ग. पृष्ठ	पीठ	अगला भाग	पुस्तक का पन्ना	पिछला भाग
घ. शुद्ध	पवित्र	बिना मिलावट के	ठीक	अमृत
ङ. पानी	जल	तालाब	कांति	इज़्ज़त

4. दिए गए शब्दों के दो भिन्न अर्थ वाक्य बनाकर स्पष्ट कीजिए।

क. भेद ______________________

____

ख. सुधा ______________________

____

ग. जड़ ______________________

____

5. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. अनेकार्थक शब्दों से क्या अभिप्राय है?

ख. अनेकार्थक शब्दों को वाक्य-प्रयोग द्वारा समझना क्यों सरल है?

कार्यकलाप

शिक्षक विद्यार्थियों को कुछ शब्द देंगे। विद्यार्थी उन शब्दों के अनेकार्थक रूपों को चित्रों द्वारा स्पष्ट करेंगे; जैसे—

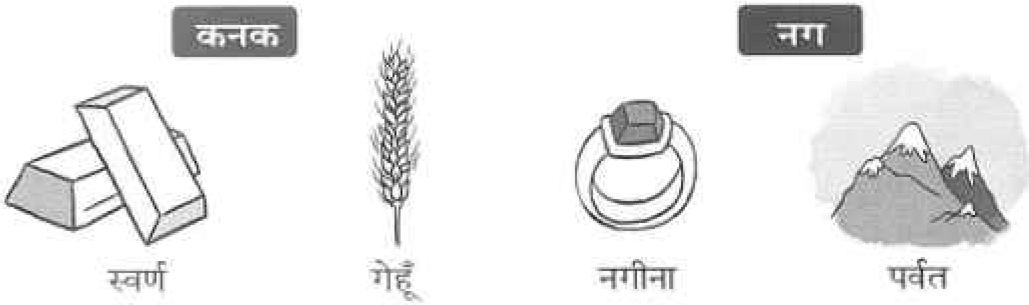

जाना-समझा

पर्यायवाची शब्दों में एक ही शब्द के कई समान अर्थवाले शब्द होते हैं। परंतु, अनेकार्थक शब्दों में एक ही शब्द के कई भिन्न अर्थवाले शब्द होते हैं।

8 श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द

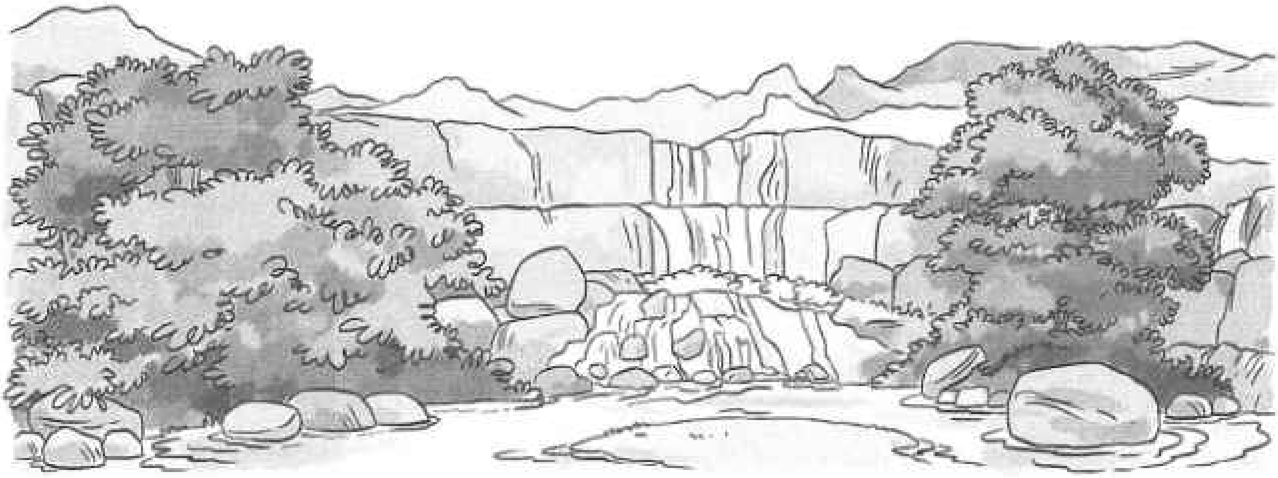

चित्र देखकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

» चित्र में क्या-क्या दिखाई दे रहा है? ______________________

» धरा का क्या अर्थ है? ______________________

» धारा का क्या अर्थ है? ______________________

» धरा तथा धारा किस प्रकार के शब्द हैं? ______________________

धरा और धारा शब्दों का उच्चारण करने पर सुनने में ये लगभग समान लगते हैं, परंतु अर्थ की दृष्टि से इनमें सूक्ष्म अंतर दिखाई देता है। ऐसे शब्दों को श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द कहते हैं।

ऐसे शब्द, जो सुनने में समान लगें, परंतु अर्थ में भिन्न हों, श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द **कहलाते हैं।**

श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्दों के कुछ उदाहरण पढ़िए तथा उनके मध्य का अंतर जानिए।

1. अंबर — आकाश
   अंबार — ढेर
2. अंतर — हृदय
   अंदर — भीतर
3. अचल — पहाड़
   अचला — धरती
4. अथक — बिना थके हुए
   अकथ — जो कहा नहीं जाए
5. अति — अधिकता
   इति — समाप्ति
6. अचार — खट्टा खाद्य पदार्थ
   आचार — व्यवहार
7. आवास — वासस्थान
   आभास — झलक
8. इतर — दूसरा
   इत्र — सुगंध

9.	उपयुक्त	ठीक	17.	गुर	सूत्र
	उपर्युक्त	ऊपर कहा गया		गुरु	शिक्षक
10.	उदर	पेट	18.	चर्म	चमड़ा
	उदार	दयालु		चरम	अंतिम
11.	कटि	कमर	19.	चपल	चंचल
	कटी	काट दी गई		चपला	बिजली
12.	कलि	कलियुग	20.	चिर	पुराना
	कली	अविकसित फूल		चीर	कपड़ा
13.	कपट	धोखा	21.	छत्र	छाता
	कपाट	दरवाज़ा		छात्र	विद्‌यार्थी
14.	कटीली	धारदार	22.	जरा	बुढ़ापा
	कँटीली	काँटेदार		ज़रा	तनिक
15.	कंगाल	निर्धन	23.	तप	तपस्या
	कंकाल	हड्‌डियों का ढाँचा		ताप	गरमी
16.	क्रांति	उलटफेर	24.	दिन	दिवस
	कांति	चमक		दीन	दरिद्र

सोचो और बताओ

इनमें क्या अंतर है?

क. आदि ______________ ख. ग्रह ______________

आदी ______________ गृह ______________

25.	दशा	हालत	30.	निर्झर	झरना
	दिशा	तरफ़		निर्जर	देवता
26.	धेनु	गाय	31.	नारी	स्त्री
	धनु	धनुष		नाड़ी	नब्ज़
27.	धन	संपत्ति	32.	पता	ठिकाना
	धान	चावल		पत्ता	पत्र
28.	नग	पर्वत	33.	पावन	पवित्र
	नाग	साँप		पवन	हवा
29.	नियत	निश्चित	34.	प्रमाण	सबूत
	नीयत	इरादा		प्रणाम	नमस्कार

35.	परिणाम	नतीज़ा
	परिमाण	मात्रा
36.	बलि	बलिदान
	बली	ताकतवर
37.	बात	बातचीत
	वात	हवा
38.	योग	जोड़
	योग्य	काबिल
39.	लौटना	वापस आना
	लोटना	लेटकर आराम करना
40.	वसन	वस्त्र
	व्यसन	बुरी आदत
41.	वरण	चुनना
	वर्ण	रंग
42.	शस्त्र	हथियार
	शास्त्र	ग्रंथ
43.	श्वेत	सफ़ेद
	स्वेद	पसीना
44.	सर	सरोवर
	शर	बाण
45.	संदेह	शक
	सदेह	शरीर के साथ
46.	समान	बराबर
	सम्मान	मान
47.	हंस	पक्षी
	हँस	हँसना
48.	हिय	हृदय
	हय	घोड़ा

हमने जाना

- श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द सुनने में समान लगते हैं।
- ये शब्द अर्थ में भिन्न होते हैं।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. 'अचल' का सही अर्थ कौन-सा है?

धरती पहाड़ क्षेत्र

ख. 'नीयत' का सही अर्थ कौन-सा है?

निश्चित निर्धारित इरादा

2. सही जोड़े पर ✓ लगाइए।

क. चिर — पुराना
चीर — कपड़ा

ख. तप — गरमी
ताप — तपस्या

ग. परिणाम — मात्रा
परिमाण — नतीज़ा

घ. शस्त्र — हथियार
शास्त्र — ग्रंथ

3. धन → संपत्ति   धान → चावल

किसानों ने अपने खेतों में ____________ की फसल बोई।

धन ×   धान ✓

कोष्ठक से सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों को भरिए।

क. तुमने तो कपड़ों का ____________ लगा रखा है। (अंबर/अंबार)

ख. होशियारी से रहना। सभी ____________ बंद कर लेना। (कपट/कपाट)

ग. आज परीक्षा का ____________ आनेवाला है। (परिमाण/परिणाम)

घ. डॉक्टर की दवाई से मेरी ____________ में कुछ सुधार हुआ है। (दशा/दिशा)

4. **वाक्यों को शुद्ध करके पुनः लिखिए।**

क. उपयुक्त लिखा कथन सर्वथा उपर्युक्त है। ____________

ख. माँ ने आम का खट्टा-मीठा आचार बनाया है। ____________

ग. इस इतर से इत्र कुछ दिखाओ। ____________

घ. मुझे आसपास जंगली जानवर का आवास हो रहा है। ____________

5. **प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

क. श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द किसे कहते हैं?

ख. पाँच श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द लिखकर उनको वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

कार्यकलाप

नीचे दिए गए चित्रों के श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्दों के चित्र बनाकर उनके नाम लिखिए।

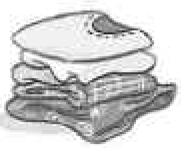

अंबार   ____________

छात्र   ____________

जाना-समझा

श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्दों को 'समोच्चारित शब्द' भी कहते हैं।

9 अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

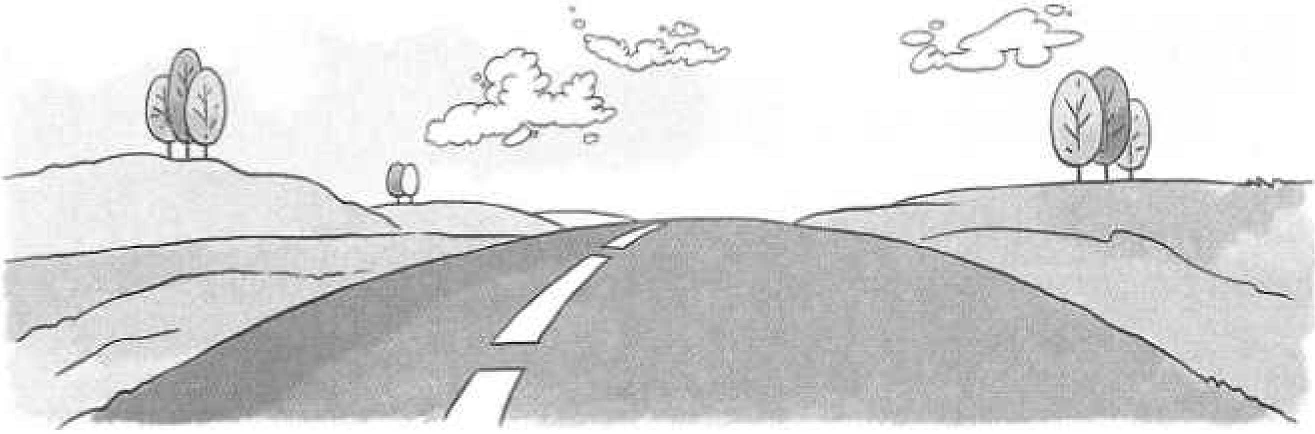

चित्र देखकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- चित्र में क्या-क्या दिखाई दे रहा है? ____________________
- क्या धरती और आकाश मिलते हुए प्रतीत हो रहे हैं? ____________________
- जिस स्थान पर दोनों मिलते प्रतीत होते हैं, उसे क्या कहते हैं? ____________________

धरती और आकाश जिस स्थान पर मिलते हुए प्रतीत होते हैं, उसे क्षितिज कहते हैं। यहाँ एक लंबे वाक्य के लिए एक छोटा-सा शब्द दिया गया है। वाक्यांश के लिए प्रयुक्त इस प्रकार के शब्द 'अनेक शब्दों के लिए एक शब्द' कहलाते हैं। इन्हें 'वाक्यांश के लिए एक शब्द' भी कहते हैं।

अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द लिखना अनेक शब्दों के लिए एक शब्द **कहलाता है।**

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं–

1. जो दिखाई न दे	अदृश्य
2. जिसका अंत न हो	अनंत
3. जो कभी न मरे	अमर
4. जो कभी बूढ़ा न हो	अजर
5. जीने की प्रबल इच्छा	जिजीविषा
6. जो सहन न किया जा सके	असहनीय

7. जो ईश्वर में विश्वास रखता हो — आस्तिक
8. जो ईश्वर में विश्वास न रखता हो — नास्तिक
9. जिसका इलाज न हो — लाइलाज
10. जिसमें धैर्य न हो — अधीर
11. जिसका कोई कारण न हो — अकारण
12. अत्याचार करनेवाला — अत्याचारी
13. अचानक होनेवाला — आकस्मिक
14. जो पढ़ा-लिखा न हो — अशिक्षित
15. दोपहर से पूर्व का समय — पूर्वाह्न
16. दोपहर के बाद का समय — अपराह्न
17. जो किसी का पक्ष न ले — निष्पक्ष
18. किसी का पक्ष लेनेवाला — पक्षपाती

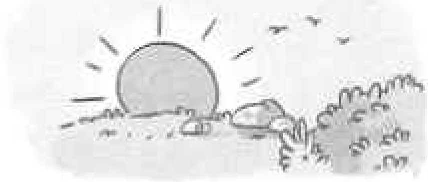

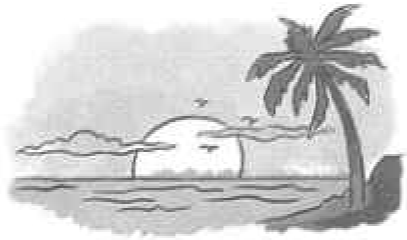

सोचो और बताओ

नगर में रहनेवाला ____________ गाँव में रहनेवाला ____________

19. कम भोजन करनेवाला — अल्पाहारी
20. जिसे पढ़ा न गया हो — अपठित
21. जिसे कहा न जा सके — अकथनीय
22. जिसपर विश्वास किया जा सके — विश्वसनीय
23. जिसपर विश्वास न किया जा सके — अविश्वसनीय
24. सदा सत्य बोलनेवाला — सत्यवादी
25. जो सबमें रहनेवाला हो — सर्वव्यापक
26. रचना करनेवाला — रचयिता
27. जिसमें ममता न हो — निर्मम
28. जिसके मन में कपट न हो — निष्कपट
29. जिसमें रस न हो — नीरस
30. जिसमें रस हो — सरस
31. जल में रहनेवाला — जलचर
32. थल पर रहनेवाला — थलचर
33. नभ में विचरण करनेवाला — नभचर
34. जिसकी कल्पना न की जा सके — अकल्पनीय

35. बोलनेवाला	वक्ता
36. सुननेवाला	श्रोता
37. जो बात पहले कभी न हुई हो	अभूतपूर्व
38. गणित को जाननेवाला	गणितज्ञ
39. जो संगीत को जानता हो	संगीतज्ञ
40. जो जन्म से अंधा हो	जन्मांध
41. तर्क के द्वारा माना हुआ	तर्कसम्मत
42. जो स्मरण रखने योग्य है	स्मरणीय
43. जो सबको समान भाव से देखे	समदर्शी
44. कम खर्च करनेवाला	मितव्ययी
45. सौ वर्षों की अवधि	शताब्दी
46. दूसरे के काम में दखल देना	हस्तक्षेप
47. जिसमें सहनशक्ति हो	सहिष्णु
48. अच्छे आचरणवाला	सदाचारी
49. जो प्रशंसा के योग्य हो	प्रशंसनीय
50. जिसका वर्णन न किया जा सके	अवर्णनीय
51. नीचे लिखा हुआ	निम्नलिखित
52. ऊपर लिखा हुआ	उपर्युक्त

हमने जाना

- अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द लिखना 'अनेक शब्दों के लिए एक शब्द' कहलाता है।
- इन्हें 'वाक्यांश के लिए एक शब्द' भी कहते हैं।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. 'सबको समान भाव से देखनेवाला' को क्या कहते हैं?

समन्वयक | समदर्शी | समभाव

ख. 'अच्छे आचरणवाला' क्या कहलाता है?

सदाचारी | दुराचारी | कदाचारी

2. सही मिलान कीजिए।

क. जिसे कहा न जा सके	रचयिता
ख. रचना करनेवाला	अशिक्षित
ग. ऊपर लिखा हुआ	असहनीय
घ. जो पढ़ा-लिखा न हो	अकथनीय
ङ. जो सहन न किया जा सके	उपर्युक्त

3. रंगीन शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए।

क. अत्याचार करनेवाले का साथ नहीं देना चाहिए। __________

ख. न्याय करो। किसी का पक्ष लेनेवाला न बनो। __________

ग. मेरा भाई बहुत कम खर्च करनेवाला है। __________

घ. ईश्वर तो सबमें रहनेवाला है। __________

ङ. आपका सहयोग स्मरण रखने योग्य है। __________

च. हरिश्चंद्र सदा सत्य बोलनेवाले थे। __________

4. दिए गए शब्दों के लिए वाक्यांश लिखिए।

क. निष्कपट __________

ख. गणितज्ञ __________

ग. हस्तक्षेप __________

घ. अल्पाहारी __________

ङ. अकारण __________

कार्यकलाप

कुछ शब्द लें। 'अ' वर्ण जोड़कर उनका विलोम रूप बनाएँ। दोनों शब्दों के लिए एक-एक वाक्यांश लिखिए;

जैसे— दृश्य जो दिखाई दे

अदृश्य जो दिखाई न दे

जाना-समझा

'अनेक शब्दों के लिए एक शब्द' भाषा को प्रभावशाली बनाते हैं।

10 एकार्थक प्रतीत होनेवाले शब्द

चित्र देखकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- व्यक्ति किसकी छाया में बैठा है? ____________
- खड़े व्यक्ति की परछाईं कहाँ पड़ रही है? ____________
- छाया तथा परछाईं में क्या अंतर है? ____________

'छाया' तथा 'परछाईं' शब्द समान अर्थवाले प्रतीत हो रहे हैं। परंतु, छाया तथा परछाईं में अंतर होता है। उपर्युक्त चित्र में छाया वृक्ष की और परछाईं खड़े व्यक्ति की है। छाया किसी ऊपर से छाई या ढकी हुई जगह की होती है, परंतु परछाईं प्रकाश के अवरोध के कारण किसी व्यक्ति या वस्तु की पड़नेवाली छाया होती है। ऐसे शब्दों को 'एकार्थक प्रतीत होनेवाले शब्द' कहते हैं। इनके अर्थ भिन्न होते हैं।

अर्थ की दृष्टि से समान प्रतीत होनेवाले शब्द एकार्थक प्रतीत होनेवाले शब्द **कहलाते हैं।**

कुछ एकार्थक प्रतीत होनेवाले शब्द इस प्रकार हैं–

1. अर्चना — दीप, धूप, फूल आदि से पूजा–उसने गुलाब के फूलों से ईश्वर की अर्चना की।
   पूजा — बिना सामग्री के प्रार्थना–शाम को होनेवाली पूजा में सभी उपस्थित थे।
2. अधिक — आवश्यकता से ज़्यादा–मुझे अधिक भोजन मत परोसना।
   पर्याप्त — आवश्यकता के अनुरूप–मेरे पास पर्याप्त साधन हैं, तुम चिंता मत करो।

3. अनिवार्य	जो छोड़ा न जा सके—यह प्रश्न हल करना अनिवार्य है।
आवश्यक	ज़रूरी—मुझे कुछ आवश्यक काम निबटाने हैं।
4. अनुरोध	बराबर वालों से—मैंने दिवेश से अपने घर आने का अनुरोध किया।
प्रार्थना	ईश्वर या अपने से बड़ों से—ईश्वर से प्रार्थना है कि सबको स्वस्थ रखें।
5. अपराध	सामाजिक कानून का उल्लंघन—उसे रिश्वतखोरी के अपराध में सज़ा हुई।
पाप	नैतिक नियमों का उल्लंघन—चोरी करना पाप है।
6. अभिमान	प्रतिष्ठा में स्वयं को बड़ा समझना और दूसरे को छोटा समझना—उसके अभिमान के कारण सभी उससे कन्नी काटने लगे हैं।
घमंड	स्वयं को सभी स्थितियों में बड़ा समझना—उसे अपने धन और बल पर बड़ा घमंड था।
7. अभिलाषा	किसी विशेष वस्तु की हार्दिक इच्छा—मेरी अभिलाषा है कि मैं सिपाही बनूँ।
इच्छा	किसी वस्तु की साधारण चाह—आज मेरी इच्छा आइसक्रीम खाने की है।
8. अवस्था	जीवन का एक भाग—उसने तो कितनी कम अवस्था में ही प्रसिद्धि प्राप्त कर ली।
आयु	संपूर्ण जीवन की अवधि—उसने अस्सी वर्ष की आयु प्राप्त की।
9. अस्त्र	वह हथियार जो फेंककर चलाया जाता है—अर्जुन ने अस्त्र उठाया तथा दुर्योधन पर प्रहार किया।
शस्त्र	वह हथियार जो हाथ में पकड़कर चलाया जाता है—भीम ने शस्त्र उठाया और युद्ध करने लगा।
10. आज्ञा	बड़ों द्वारा दिया गया निर्देश—पिताजी ने उसे तुरंत घर जाने की आज्ञा दी।
आदेश	किसी अधिकारी द्वारा दिया गया निर्देश—हमारे वरिष्ठ अधिकारी ने हमें सभी कार्य समय पर करने का आदेश दिया है।

सोचो और बताओ

अर्थ बताकर वाक्य में प्रयोग कीजिए।

पुत्र ____________ ____________________________

बालक ____________ ____________________________

11. आलोचना	गुण-दोष प्रकट करना—आलोचना करते समय निष्पक्ष रहना चाहिए।
निंदा	दूसरे की बुराई—निंदा करना अच्छी बात नहीं।
12. ईर्ष्या	किसी की उन्नति देखकर जलना—उसकी सफलता को देखकर ईर्ष्या मत करो।
द्वेष	किसी के प्रति शत्रुता का भाव रखना—मेरे प्रति अपने मन में किसी प्रकार का द्वेष न रखो।

13.	**खोज**	अज्ञात वस्तु का पता लगाना—आदि मानव ने आग की खोज की।
	आविष्कार	नई वस्तु का निर्माण करना—एडीसन ने बल्ब का आविष्कार किया।
14.	**नमस्कार**	समान अवस्थावालों का अभिवादन—अभिषेक ने सभी मित्रों को नमस्कार किया और उनका हाल-चाल पूछा।
	प्रणाम	अपने से बड़ों का अभिवादन—दीपक ने दादाजी को प्रणाम कर उनका हाल पूछा।
15.	**पत्नी**	अपनी विवाहिता स्त्री—सीता राम की पत्नी थीं।
	स्त्री	कोई भी महिला—एक स्त्री कुएँ से पानी भर रही थी।
16.	**बड़ा**	आकार का बोधक—हमारा स्कूल बड़ा है।
	बहुत	परिमाण का बोधक—आज तुम बहुत बोल रहे हो।
17.	**बहुमूल्य**	बहुत कीमती वस्तु—माला को जन्मदिन पर बहुमूल्य उपहार मिला।
	अमूल्य	जिस वस्तु का मूल्य न आँका जा सके—शुद्ध हवा प्रकृति की ओर से मिला एक अमूल्य उपहार है।
18.	**लज्जा**	संकोच का भाव—इस घर की किसी भी चीज़ का प्रयोग करने में लज्जा का अनुभव न करें।
	ग्लानि	अपनी गलती पर पश्चाताप—मुझे अपने कृत्य पर ग्लानि हो रही है।
19.	**सहयोग**	एक-दूसरे की सहायता—परस्पर सहयोग से सभी कार्य सफल होते हैं।
	सहायता	मदद—दीन-हीन की सहायता करना प्रत्येक मनुष्य का धर्म है।

हमने जाना

- **एकार्थक शब्द अर्थ की दृष्टि से समान प्रतीत होते हैं।**
- **एकार्थक शब्दों के अर्थ भिन्न होते हैं।**

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. 'आज्ञा' का अर्थ क्या होगा?

बड़ों द्वारा दिया गया निर्देश   बड़ों को दिया निर्देश   बड़ों के लिए निर्देश

ख. 'लज्जा' का अर्थ क्या होगा?

संकोच   ग्लानि   अरुचि

2. कोष्ठक से सही शब्दों का चयन कर रिक्त स्थानों को भरिए।

क. ____________ विषय के रूप में मैंने इतिहास विषय लिया है। (अनिवार्य/आवश्यक)

ख. मेरी ____________ आज कहीं घूमने की है। (इच्छा/अभिलाषा)

ग. ____________ से सभी काम सरल हो जाते हैं। (सहयोग/सहायता)

घ. धोबी की ____________ कुएँ से पानी भर रही थी। (स्त्री/पत्नी)

ङ. झूठ बोलना ____________ है। (पाप/अपराध)

3. दिए गए वाक्यों में आए अशुद्ध शब्दों के स्थान पर शुद्ध शब्द लिखकर वाक्य पुनः लिखिए।

क. भीम ने युद्ध में गदा अस्त्र का प्रयोग किया। ____________

ख. उसे हत्या के पाप में दस वर्ष की सज़ा हुई। ____________

ग. अभिनव ने दादाजी को नमस्कार किया। ____________

घ. राधिका पार्टी में अमूल्य साड़ी पहनकर आई। ____________

ङ. मैंने पर्याप्त खा लिया है, इसलिए पेट में दर्द हो रहा है। ____________

4. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. एकार्थक प्रतीत होनेवाले शब्द किसे कहते हैं?

ख. 'अर्चना' तथा 'पूजा' शब्दों के अर्थ बताते हुए उन्हें वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

कार्यकलाप

दिए गए अर्थ को पढ़कर शब्द बताएँ।

क. अपनी गलती पर पश्चाताप

ख. एक-दूसरे की सहायता करना

ग. अज्ञात वस्तु का पता लगाना

घ. बहुत कीमती वस्तु

ङ. संपूर्ण जीवन की अवधि

इसी प्रकार का अर्थ बताकर शब्द पूछने का खेल अपने मित्रों से खेलें।

जाना-समझा

एकार्थक प्रतीत होनेवाले शब्दों का प्रयोग अत्यंत सावधानीपूर्वक करना चाहिए।

आओ दोहराएँ 1 (पाठ 1 से 10 तक)

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।
   क. स्वतंत्र ध्वनियाँ कौन-सी हैं?
   व्यंजन संयुक्त व्यंजन स्वर
   ख. स्वर संधि किनके मध्य होती है?
   दो स्वरों के दो व्यंजनों के स्वरों तथा व्यंजनों के
2. रिक्त स्थानों को भरिए।
   क. बोली भाषा का ______________ रूप होती है।
   ख. बातचीत करते समय हम ______________ भाषा का प्रयोग करते हैं।
3. दिए गए शब्दों के लिए वाक्यांश लिखिए।
   क. अल्पाहारी ______________
   ख. मितव्ययी ______________
4. दिए गए शब्दों का वर्ण-विच्छेद कीजिए।
   क. सज्जन ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___
   ख. डॉक्टर ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___
5. दिए गए शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए।
   क. श्रृंगार ______________ ख. भोगोलिक ______________
   ग. गुरू ______________ घ. दवाईयाँ ______________
6. संधि-विच्छेद कीजिए।
   क. उद्धार ________ + ________ ख. चिकित्सालय ________ + ________
   ग. सन्मार्ग ________ + ________ घ. मनोभाव ________ + ________
7. उत्पत्ति के आधार पर शब्द-भेद लिखिए।
   क. घंटिका ______________ ख. तोप ______________
   ग. नाच ______________ घ. खिचड़ी ______________
8. दो-दो पर्यायवाची रूप लिखिए।
   क. हिरण ________ ________ ख. उपहार ________ ________
   ग. काया ________ ________ घ. निपुण ________ ________
9. विलोम शब्द लिखिए।
   क. महात्मा ______________ ख. आस्तिक ______________
   ग. चेतन ______________ घ. निर्माण ______________
10. वाक्य बनाकर अर्थ स्पष्ट कीजिए।
    क. बहुमूल्य ______________
    ख. अमूल्य ______________
11. सही विकल्प से रिक्त स्थानों को भरिए।
    क. खेतों में ______________ लहलहा रहा था। (धन/धान)
    ख. आज मेरी परीक्षा का ______________ आनेवाला है। (परिमाण/परिणाम)
12. वाक्यों को शुद्ध करके पुनः लिखिए।
    क. तुम इस पुरस्कार के योग नहीं हो। ______________
    ख. मेरे मन में आपके लिए समान का भाव है। ______________

11 उपसर्ग

चित्र देखकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- उपर्युक्त सभी शब्दों में कौन-सा शब्द समान है? ____________________
- क्या सभी शब्दों के अर्थ समान हैं? ____________________
- 'फल' शब्द के पहले लगे शब्दांश क्या कहलाते हैं? ____________________

'फल' शब्द के पहले लगे शब्दांश उपसर्ग कहलाते हैं। इनके लगने से शब्द का अर्थ परिवर्तित हो जाता है। इनसे नया सार्थक शब्द बनता है।

> **ऐसे शब्दांश, जो मूल शब्द से पहले जुड़कर उसके अर्थ को परिवर्तित कर देते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं।**

उपसर्ग के प्रकार

उपसर्ग के मुख्य रूप से चार प्रकार हैं—

1. संस्कृत के उपसर्ग
2. हिंदी के उपसर्ग
3. उर्दू के उपसर्ग
4. उपसर्ग की भाँति प्रयोग होनेवाले संस्कृत के अव्यय

1. संस्कृत के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	उपसर्ग लगे शब्द
अति	अधिक, ऊपर	अतिरिक्त, अत्याचार, अत्यंत, अत्यधिक
अधि	श्रेष्ठ, ऊपर	अधिभार, अधिपति, अधिकार, अधिशासी

अनु	पीछे, समान	अनुमान, अनुभव, अनुकूल, अनुराग
अप	हीनता, बुरा	अपव्यय, अपयश, अपकार, अपभ्रंश
अभि	अधिकता, समीपता	अभियोग, अभिशाप, अभिनय, अभिनव
अव	हीनता, अनादर	अवगुण, अवरोह, अवरोध, अवहेलना
आ	तक, ओर, समेत	आमरण, आलेख, आक्रमण, आकर्षण
उत्/उद्	ऊपर, श्रेष्ठ	उत्कर्ष, उद्देश्य, उद्घाटन, उद्योग
उप	सदृश, निकट, हीन	उपग्रह, उपदेश, उपक्रम, उपकरण
दुर्/दुस्	बुरा, दुष्ट, कठिन	दुर्घटना, दुर्गुण, दुर्व्यवहार, दुस्साहस
नि	नीचे, भीतर	निवास, निवेदन, नियम, निपात
निर्/निस्	निषेध, बाहर	निराकार, निर्मल, निर्जल, निस्संदेह
परा	उलटा, पीछे	पराक्रम, परास्त, परावर्ती, परावर्तन
परि	चारों ओर, अतिशय	परिजन, परिकल्पना, परिभाषा, परिचारिका
प्र	अधिक, आगे	प्रभाव, प्रदान, प्रकांड, प्रकट
प्रति	विरुद्ध, सामने	प्रतिक्रिया, प्रतिदिन, प्रतिद्वंद्वी
वि	भिन्न, अभाव, विशेष	विकट, विशेष, विज्ञान, विदेशी
सम्	अच्छा, पूर्णता, साथ	सम्मान, संभव, संविधान, संवाद
सु	अधिक, अच्छा, सहज	सुबोध, सुलभ, सुपुत्र, सुयश

2. हिंदी के उपसर्ग

अ, अन	निषेध	अछूत, अटल, अनपढ़, अनकहा
अध	आधा	अधबुझी, अधकहा, अधजला, अधपेट
उन	एक कम	उन्नीस, उनचास, उनासी, उनहत्तर
औ/अव	हीनता, निषेध	औसत, अवसाद, अवलंब, अवरोध
कु-क	बुरा	कुकर्म, कुमार्ग, कुसंगति, कपूत
दु	बुरा, कम	दुपहिया, दुस्वप्न, दुकाल, दुबला
नि	निषेध, अभाव	निकास, निहाल, निडर, निदान
बिन	निषेध, अभाव	बिनकहा, बिनबुलाया, बिनमाँगा, बिनदेखा
भर	पूरा, ठीक	भरमार, भरपूर, भरपाई, भरसक
सु-स	श्रेष्ठता, साथ	सुराग, सुरुचि, सफल, सप्रेम

सोचो और बताओ

इनमें कौन-सा उपसर्ग लगा है?

परास्त ____________ अपव्यय ____________

अत्याचार ____________ दुर्घटना ____________

3. उर्दू के उपसर्ग

अल	निश्चित	अलबत्ता, अलगरज, अलविदा
कम	थोड़ा, हीन	कमखर्च, कमतर, कमनसीब, कमज़ोर
खुश	अच्छा	खुशनसीब, खुशबू, खुशमिज़ाज, खुशहाल
गैर	भिन्न, विरुद्ध	गैरज़िम्मेदार, गैरसरकारी, गैरमामूली, गैरकानूनी
दर	में	दरहकीकत, दरकिनार, दरबदर, दरअसल
ना	अभाव	नासमझ, नामुमकिन, नालायक, नाकाम
बद	बुरा	बदकिस्मत, बदबू, बदनाम, बद्दुआ
बे	बिना	बेकाबू, बेदम, बेनाम, बेचैन
ला	बिना, अभाव	लापता, लाइलाज, लापरवाह, लाचार
हम	समान, साथ	हमसफ़र, हमराज, हमजोली, हमवतन

4. संस्कृत के अव्यय

अधस्	नीचे	अधोमुख, अधोलिखित, अधोगति, अधोबुद्धि
अंतर्	भीतर	अंतःपुर, अंतर्मन, अंतर्यामी, अंतर्गत
चिर्	बहुत	चिरपरिचित, चिरपुरातन, चिरस्थायी, चिरकाल
तिरस्	तुच्छ	तिरोहित, तिरोभाव, तिरस्कृत, तिरस्कार
पुरा	पहले	पुरालेख, पुरातत्व, पुरातन, पुरावृत्त
सत्	अच्छा	सदाचार, सद्भाव, सत्कर्म, सत्पुरुष
स्व	अपना	स्वभाव, स्वाभिमान, स्वदेश, स्वाध्याय

हमने जाना

- उपसर्ग शब्दांश होते हैं। ये किसी शब्द के पहले लगकर उसके अर्थ को परिवर्तित कर देते हैं।
- इनके प्रयोग से एक नया सार्थक शब्द बनता है।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. 'दुर्गुण' शब्द में लगा उपसर्ग कौन-सा है?

दुर् दुस् दुरह्

ख. 'प्रतिबंध' शब्द में लगा उपसर्ग कौन-सा है?

प्र प्रति प्रतिब

2. वाक्यों से उपसर्गयुक्त शब्द ढूँढ़कर लिखिए।

क. मुझे इस कार्य का बहुत अनुभव है। ______

ख. उसकी बातों का सब पर गहरा प्रभाव पड़ा। ______

ग. निडर बालक शेर के सामने खड़ा था। ______

घ. कूड़े के ढेर से बदबू आ रही थी। ______

ङ. उसके अनुसार, उसने कोई गलत काम नहीं किया। ______

3. उपसर्ग तथा मूल शब्द अलग-अलग करके लिखिए।

क. अनुकूल ______ ______ ख. उनचास ______ ______

ग. उपग्रह ______ ______ घ. खुशनसीब ______ ______

ङ. परिभाषा ______ ______ च. बेकाबू ______ ______

छ. निपात ______ ______ ज. सदाचार ______ ______

4. दिए गए उपसर्गों का प्रयोग कर शब्द बनाइए।

क. उत् ______ ख. चिर् ______

ग. निर् ______ घ. बद ______

ङ. सम् ______ च. गैर ______

5. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. उपसर्ग किसे कहते हैं?

ख. उपसर्ग मुख्यतः कितने प्रकार के होते हैं?

कार्यकलाप

एक गोल आकार का गत्ता काटें। उसपर एक कागज़ चिपकाएँ।
दिए गए तरीके से उसपर उपसर्ग लिखें। बीचवाले हिस्से में उँगली डालकर घुमाएँ। आपके सामने जो शब्दांश आए, उसका प्रयोग करते हुए शब्द बनाएँ।

जाना-समझा

एक शब्द के साथ विभिन्न उपसर्गों के प्रयोग द्वारा अनेक नए शब्द बनाए जा सकते हैं।

12 प्रत्यय

चित्र देखकर अनुमान से शब्द पूरे कीजिए।

» खेल + औना ____________ बिछ + औना ____________

» मथ + नी ____________ ओढ़ + नी ____________

इन शब्दों का उच्चारण करते हुए आपने क्या जाना? ____________

उपर्युक्त शब्दों का उच्चारण करते हुए हमने जाना कि इन शब्दों में मूल शब्दों (धातुओं) के अंत में शब्दांश लगे हैं। इन शब्दांशों के लगने से मूल शब्द का अर्थ परिवर्तित हो गया है। मूल शब्द के पीछे लगे शब्दांश प्रत्यय कहलाते हैं।

ऐसे शब्दांश, जो धातुओं के बाद जुड़कर उसके अर्थ को परिवर्तित कर देते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं।

पुन: स्मरण क्रिया शब्द के अंत में लगा 'ना' हटाने पर जो अंश बचता है, उसे धातु कहते हैं; जैसे—पढ़ना क्रिया पढ़ धातु।

प्रत्यय के प्रकार

प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं—1. कृत् प्रत्यय 2. तद्धित प्रत्यय।

1. कृत् प्रत्यय ऐसे प्रत्यय, जो धातुओं के अंत में प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें 'कृत् प्रत्यय' कहते हैं। कृत् प्रत्ययों से भाववाचक, करणवाचक, कर्तृवाचक संज्ञाएँ तथा विशेषण बनते हैं। कृत् प्रत्ययों से बने शब्द कृदंत कहलाते हैं।

भाववाचक कृदंत संज्ञाएँ

मूल शब्द	प्रत्यय	भाववाचक कृदंत संज्ञाएँ	अन्य शब्द
पढ़	आई	पढ़ाई	लिखाई, लड़ाई
थक	आन	थकान	मिलान, उड़ान
बह	आव	बहाव	छुपाव, कटाव
छल	आवा	छलावा	चढ़ावा, बुलावा
सज	आवट	सजावट	थकावट, मिलावट
चिल्ल	आहट	चिल्लाहट	मुसकराहट, घबराहट
हँस	ई	हँसी	बोली, झिड़की

करणवाचक कृदंत संज्ञाएँ

मूल शब्द	प्रत्यय	करणवाचक कृदंत संज्ञाएँ	अन्य शब्द
झूल	आ	झूला	ठेला
बेल	न	बेलन	झाड़न
छल	नी	छलनी	मथनी
झाड़	ऊ	झाड़ू	चाकू

कर्तृवाचक कृदंत संज्ञाएँ

मूल शब्द	प्रत्यय	कर्तृवाचक कृदंत संज्ञाएँ	अन्य शब्द
लेख	अक	लेखक	पाठक, गायक
तैर	आक / आका	तैराक	लड़ाका
खेल	आड़ी / ओड़	खिलाड़ी	हँसोड़
घूम	अक्कड़	घुमक्कड़	भुलक्कड़, बुझक्कड़
खेना	ऐया	खेवैया	गवैया
रख	वाला	रखवाला	पढ़नेवाला, घरवाला
पालन	हार	पालनहार	होनहार, तारणहार

विशेषण बनानेवाले कृत् प्रत्यय

मूल शब्द	प्रत्यय	विशेषण	अन्य शब्द
बढ़	इया	बढ़िया	घटिया
अड़	इयल	अड़ियल	सड़ियल, मरियल
पठ	अनीय	पठनीय	करणीय
डर	आवना	डरावना	सुहावना

सोचो और बताओ

चढ़ + आई	____________	थक + आन	____________
छल + इया	____________	लिख + आवट	____________

2. **तद्धित प्रत्यय** ऐसे प्रत्यय, जो संज्ञा, सर्वनाम अथवा विशेषण शब्द के साथ प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं। तद्धित प्रत्यय भाववाचक, कर्तृवाचक, लघुतावाचक, संबंधवाचक संज्ञा तथा विशेषण शब्दों का निर्माण करते हैं।

भाववाचक संज्ञा शब्द

मूल शब्द	प्रत्यय	भाववाचक संज्ञा	अन्य शब्द
ऊँचा	आई	ऊँचाई	चतुराई, बुराई
बच्चा	पन	बचपन	लड़कपन, कालापन
मीठा	आस	मिठास	प्यास
कड़वा	आहट	कड़वाहट	चिकनाहट
बूढ़ा	पा	बुढ़ापा	मोटापा, बहनापा
रंग	त/ता	रंगत	शत्रुता, मित्रता

कर्तृवाचक संज्ञा शब्द

मूल शब्द	प्रत्यय	कर्तृवाचक संज्ञा	अन्य शब्द
पान	वाला	पानवाला	सब्ज़ीवाला, दूधवाला
चित्र	कार	चित्रकार	पत्रकार, कलाकार
सोना	आर	सुनार	लुहार
रसोई	इया	रसोइया	मुखिया
तेल	ई/ऐरा	तेली	सँपेरा

लघुतावाचक संज्ञा शब्द

मूल शब्द	प्रत्यय	लघुतावाचक संज्ञा	अन्य शब्द
खाट	इया	खटिया	डिबिया, लुटिया
पहाड़	ई	पहाड़ी	रस्सी, डोरी
ढोल	की	ढोलकी	कनकी
साँप	ओला	सँपोला	खटोला
छाता	री	छतरी	कोठरी

संबंधवाचक संज्ञा शब्द

मूल शब्द	प्रत्यय	संबंधवाचक संज्ञा	अन्य शब्द
मामा	एरा	ममेरा	चचेरा, फुफेरा
नाना	हाल/आल	ननिहाल	खुशहाल, ससुराल
भारत	ईय	भारतीय	पर्वतीय

विशेषण शब्द

मूल शब्द	प्रत्यय	विशेषण शब्द	अन्य शब्द
ईमान	दार	ईमानदार	समझदार, मालदार
रस	ईला	रसीला	भड़कीला, हठीला
भूख	आ	भूखा	प्यासा
सोना	हरा	सुनहरा	एकहरा, तिहरा
स्वर्ण	इम/इन	स्वर्णिम	कुलीन
दया	आलु	दयालु	कृपालु

विशेष अन्य भाषाओं के कुछ शब्दांश भी हिंदी भाषा के शब्दों के साथ प्रत्ययों के रूप में प्रयोग किए जाते हैं। इन्हें 'आगत प्रत्यय' कहते हैं; जैसे—

कलम + दान = कलमदान   अक्ल + मंद = अक्लमंद
जादू + गर = जादूगर   तीर + अंदाज़ = तीरंदाज़
चाल + बाज़ = चालबाज़   सूद + खोर = सूदखोर

हमने जाना

- प्रत्यय शब्दांश होते हैं। ये मूल शब्द के बाद लगते हैं।
- कृत् प्रत्यय क्रिया के साथ तथा तद्धित प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम अथवा विशेषण के साथ लगते हैं।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. प्रत्ययों का प्रयोग कहाँ किया जाता है?

मूल शब्द से पहले   मूल शब्द के बाद   मूल शब्द के बीच में

ख. कृत् प्रत्यय किसके साथ प्रयोग किए जाते हैं?

संज्ञा के साथ   सर्वनाम के साथ   क्रिया के साथ

2. दिए गए शब्दों में लगे प्रत्यय लिखिए।

क. थकान ____________ ख. छलावा ____________

ग. बेलन ____________ घ. खिलाड़ी ____________

ङ. ममेरा ____________ च. कड़वाहट ____________

3. पहचानकर बताएँ, दिए गए शब्द कृत् प्रत्यय के उदाहरण हैं या तद्धित के।

क. सज + आवट = सजावट ____________ प्रत्यय

ख. ऊँचा + आई = ऊँचाई ____________ प्रत्यय

ग. पहाड़ + ई = पहाड़ी ____________ प्रत्यय

घ. चित्र + कार = चित्रकार ____________ प्रत्यय

ङ. झूल + आ = झूला ____________ प्रत्यय

4. **दिए गए अनुच्छेद को पढ़िए। इसमें आए प्रत्यययुक्त शब्दों को रेखांकित कीजिए।**

मेरा ननिहाल पहाड़ी पर है। आज मैं नाना से मिलने उनके घर जा रहा था। ऊँचाई पर चढ़ते हुए जब थकान अनुभव हुई, तब बचपन याद आ गया। पहले तो कभी ऐसा नहीं होता था। बहुत घुमक्कड़ थे हम। मैं और मेरा ममेरा भाई बहुत मज़े करते थे। रात को घर के बाहर खटिया डालकर नानी से ढेरों कहानियाँ सुनते थे। नानी की बातों में कितनी मिठास थी!

5. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. कृत् प्रत्यय तथा तद्धित प्रत्यय में क्या अंतर है?

ख. कृत् प्रत्ययों से किस प्रकार की संज्ञाओं का निर्माण होता है?

कार्यकलाप

कुछ शब्दों का चयन करें तथा उनमें उपसर्ग तथा प्रत्यय लगाकर नए शब्द बनाइए; जैसे—

अ मानव ता अमानवता   अ खंड ता अखंडता   अ धर्म इक अधार्मिक

कु रूप ता कुरूपता   वि शेष ता विशेषता   अ धीर ता अधीरता

जाना-समझा

प्रत्ययों के प्रयोग से संज्ञा तथा विशेषण शब्दों का निर्माण होता है।

13 समास

चित्र देखकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

इनके लिए एक शब्द लिखिए।

- दो पहरों का समाहार __________
- नीला है जो गगन __________
- घोड़े पर सवार __________
- चार हैं पाए जिसके __________

उपर्युक्त शब्द-समूहों के लिए हम दोपहर, नीलगगन, घुड़सवार तथा चारपाई शब्द का प्रयोग करेंगे। शब्द-समूह को संक्षिप्त करके लिखने को समास कहते हैं।

परस्पर संबंधित शब्द-समूह को संक्षिप्त करके नया शब्द बनाने की प्रक्रिया समास कहलाती है।

समास की क्रिया से बना शब्द समस्तपद कहलाता है। समस्तपद को अलग करके लिखना समास-विग्रह कहलाता है। समस्तपद में दो पद होते हैं—पहला पद पूर्वपद तथा बाद का पद उत्तरपद कहलाता है; जैसे—

रसोईघर → समस्तपद

रसोई के लिए घर → समास-विग्रह

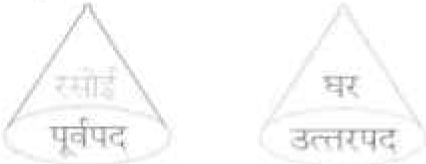

सोचो और बताओ

वनगमन	पूर्वपद	__________	उत्तरपद	__________
अमृतवचन	पूर्वपद	__________	उत्तरपद	__________

समास के भेद

समास के प्रमुख छह भेद हैं— 1. अव्ययीभाव समास 2. तत्पुरुष समास 3. कर्मधारय समास 4. द्विगु समास 5. द्वंद्व समास 6. बहुव्रीहि समास

1. अव्ययीभाव समास

अव्ययीभाव समास में समस्तपद क्रियाविशेषण अव्यय होता है। इसका पहला पद प्रधान होता है; जैसे—

यथासमय	समय के अनुसार	बेकसूर	कसूर के बिना
भरपेट	पेट भरकर	आमरण	मरने तक
बखूबी	खूबी के साथ	आजन्म	जन्म से लेकर
प्रतिपल	पल-पल	यथाविधि	विधि के अनुसार

यदि एक ही शब्द दो बार प्रयोग होता है और दोनों शब्द मिलकर अव्यय की भाँति प्रयोग होते हैं, वहाँ भी अव्ययीभाव समास होता है; जैसे—

घर-घर	हर घर में	बातोंबात	बात-ही-बात में
धड़ाधड़	धड़-धड़ की आवाज़ के साथ (शीघ्रता से)	कानोंकान	कान-ही-कान में

2. तत्पुरुष समास

तत्पुरुष समास में उत्तरपद प्रधान होता है। इसमें कर्ता कारक तथा संबोधन कारक को छोड़कर सभी कारकों की विभक्तियाँ लगती हैं। समस्तपद बनाते समय इन विभक्तियों का लोप हो जाता है। विभक्तियों के आधार पर ही तत्पुरुष समास के छह भेद हैं।

कर्म तत्पुरुष (विभक्ति को)

सर्वप्रिय	सबको प्रिय	शरणागत	शरण को आया हुआ
स्वर्गप्राप्त	स्वर्ग को प्राप्त	यशप्राप्त	यश को प्राप्त
ग्रामगत	ग्राम को गया हुआ	रथचालक	रथ को चलानेवाला
माखनचोर	माखन को चुरानेवाला	गगनचुंबी	गगन को चूमनेवाला

करण तत्पुरुष (विभक्ति से, के द्वारा)

रेखांकित	रेखा से अंकित	रोगग्रस्त	रोग से ग्रस्त
अकालपीड़ित	अकाल से पीड़ित	मनचाहा	मन से चाहा
शोकाकुल	शोक से आकुल	रसभरी	रस से भरी
स्वरचित	स्वयं द्वारा रचित	मुँहमाँगा	मुँह से माँगा

संप्रदान तत्पुरुष (विभक्ति के लिए)

सत्याग्रह	सत्य के लिए आग्रह	मालगाड़ी	माल के लिए गाड़ी
राहखर्च	राह के लिए खर्च	रसोईघर	रसोई के लिए घर
विश्रामगृह	विश्राम के लिए गृह	हथकड़ी	हाथ के लिए कड़ी
गौशाला	गौ के लिए शाला	देशभक्ति	देश के लिए भक्ति

अपादान तत्पुरुष (विभक्ति से, अलग होने का भाव)

देशनिकाला	देश से निकाला	रोगमुक्त	रोग से मुक्त
जन्मांध	जन्म से अंधा	कर्महीन	कर्म से हीन
ऋणमुक्त	ऋण से मुक्त	भयभीत	भय से भीत
पथभ्रष्ट	पथ से भ्रष्ट	बंधनमुक्त	बंधन से मुक्त

संबंध तत्पुरुष (विभक्ति का, की, के)

देवमूर्ति	देव की मूर्ति	स्वाधीन	स्व के अधीन
सेनाध्यक्ष	सेना का अध्यक्ष	घुड़दौड़	घोड़ों की दौड़
मूर्तिपूजा	मूर्ति की पूजा	राजभवन	राजा का भवन
राजकुमारी	राजा की कुमारी	जलधारा	जल की धारा

अधिकरण तत्पुरुष (विभक्ति में, पर)

वनवास	वन में वास	आपबीती	आप पर बीती
सिरदर्द	सिर में दर्द	घुड़सवार	घोड़े पर सवार
ध्यानमग्न	ध्यान में मग्न	आत्मनिर्भर	आत्म (स्वयं) पर निर्भर
लोकप्रिय	लोक में प्रिय	कार्यकुशल	कार्य में कुशल

सोचो और बताओ

समस्तपद बनाएँ— शक्ति के अनुसार ____________ बिना खबर के ____________

बात-ही-बात में ____________ हाथ से लिखित ____________

3. कर्मधारय समास

कर्मधारय समास में उपमेय-उपमान अथवा विशेषण-विशेष्य का संबंध होता है। इसमें पूर्वपद गौण तथा उत्तरपद प्रधान होता है; जैसे—

विशेषण-विशेष्य		उपमेय-उपमान	
पीतांबर	पीला है जो अंबर	मृगनयन	मृग जैसे नयन
महात्मा	महान है जो आत्मा	चंद्रमुख	चंद्र जैसा मुख
नीलगगन	नीला है जो गगन	नरसिंह	सिंह जैसा नर
लालकिला	लाल है जो किला	पदपंकज	पंकज जैसे पद

4. द्विगु समास

द्विगु समास में पूर्वपद संख्यावाची होता है तथा उत्तरपद प्रधान होता है। समस्तपद समूह का ज्ञान करवाता है; जैसे—

दोपहर	दो पहरों का समाहार	नवरस	नौ रसों का समाहार
त्रिकोण	तीन कोणों का समूह	त्रिभुवन	तीन भवनों का समूह

पंजाब	पाँच आबों (नदियों) का समूह	त्रिफला	तीन फलों का समाहार
सप्तऋषि	सात ऋषियों का समूह	सप्तपदी	सात पदों का समूह

5. द्वंद्व समास

द्वंद्व समास में समस्तपद के दोनों पद प्रधान होते हैं। इनमें योजक चिह्न लगा होता है। विग्रह करने पर इनमें और, या, अथवा आदि योजक शब्द लगाते हैं; जैसे—

भूख-प्यास	भूख और प्यास	ठंडा-गरम	ठंडा अथवा गरम
घी-शक्कर	घी और शक्कर	आगे-पीछे	आगे और पीछे
आना-जाना	आना और जाना	हानि-लाभ	हानि और लाभ
रुपया-पैसा	रुपया और पैसा	चाय-काफ़ी	चाय या काफ़ी

सोचो और बताओ

समास-विग्रह करें— नीलगगन __________ चौमासा __________

माता-पिता __________ ऊपर-नीचे __________

6. बहुव्रीहि समास

बहुव्रीहि समास में समस्तपद के दोनों पदों में से कोई भी पद प्रधान नहीं होता। दोनों पद मिलकर किसी अन्य पद की ओर संकेत करते हैं; जैसे—

मुरलीधर	मुरली को धारण किया है जिसने, अर्थात	श्रीकृष्ण
त्रिनेत्र	तीन हैं नेत्र जिसके, अर्थात	शिव
गजानन	गज जैसा आनन है जिसका, अर्थात	गणेश
सुलोचना	सुंदर है लोचन जिसके, अर्थात	मेघनाद की पत्नी
मृगनयनी	मृग के समान नेत्र हैं जिसके, अर्थात	कोई स्त्री विशेष
चतुरानन	चार हैं आनन जिसके, अर्थात	ब्रह्मा
चक्रपाणि	चक्र है पाणि में जिसके, अर्थात	विष्णु
दशानन	दस हैं आनन जिसके, अर्थात	रावण

कर्मधारय तथा बहुव्रीहि समास में अंतर

कर्मधारय समास में समस्तपद के दोनों पदों में विशेषण-विशेष्य तथा उपमेय-उपमान का संबंध होता है। बहुव्रीहि समास में दोनों पद मिलकर किसी अन्य पद की ओर संकेत करते हैं; जैसे—

पीतांबर	पीले रंग का है जो अंबर	कर्मधारय समास
पीतांबर	पीला है अंबर जिसका, अर्थात विष्णु	बहुव्रीहि समास
नीलकंठ	नीला है जो कंठ	कर्मधारय समास
नीलकंठ	नीला है कंठ जिसका, अर्थात शिव	बहुव्रीहि समास

हमने जाना

- परस्पर संबंधित शब्द-समूह को संक्षिप्त करके नया शब्द बनाने की प्रक्रिया समास कहलाती है।
- समास के प्रमुख छह भेद हैं—अव्ययीभाव समास, तत्पुरुष समास, कर्मधारय समास, द्विगु समास, द्वंद्व समास तथा बहुव्रीहि समास।

आओ कुछ करें

1. **सही विकल्प पर गोला लगाइए।**

क. किस समास में समस्तपद बनाते समय कारकीय विभक्तियों का लोप हो जाता है?

अव्ययीभाव समास में   तत्पुरुष समास में   कर्मधारय समास में

ख. किस समास में समस्तपद का प्रथम पद संख्यावाची होता है?

द्वंद्व समास में   द्विगु समास में   बहुव्रीहि समास में

2. **सही कथन के आगे ✓ तथा गलत कथन के आगे × लगाइए।**

क. समस्तपद का विग्रह समास-विग्रह कहलाता है।

ख. अव्ययीभाव समास में विशेषण-विशेष्य का संबंध होता है।

ग. द्विगु समास में पूर्वपद संख्यावाची होता है।

घ. बहुव्रीहि समास में समस्तपद के दोनों पदों में योजक चिह्न लगाते हैं।

ङ. दशानन अव्ययीभाव समास का उदाहरण है।

3. **समस्तपद का विग्रह करके समास का नाम लिखिए।**

क. यथाशक्ति ________ ________   ख. भयमुक्त ________ ________

ग. हाथोंहाथ ________ ________   घ. नीलकमल ________ ________

ङ. चंद्रमुख ________ ________   च. लंबोदर ________ ________

4. **वाक्यों में दिए गए रंगीन शब्दों का समस्तपद बनाकर लिखिए।**

क. प्रकृति के सभी कार्य समय के अनुसार होते हैं। ________

ख. उसने कान-ही-कान में किसी को खबर नहीं होने दी। ________

ग. इस महानगर में अनेक गगन को चूमनेवाली इमारतें हैं। ________

घ. आज सुबह से ही मुझे सबकुछ मन से चाहा मिल रहा है। ____________

ङ. कार्य में कुशल होकर ही आत्म पर निर्भर हुआ जा सकता है। ____________

च. मेरे आगे और पीछे काफ़ी अनजान लोग खड़े थे। ____________

5. दो-दो उदाहरण लिखिए।

क. अव्ययीभाव समास ____________ ____________

ख. तत्पुरुष समास ____________ ____________

ग. कर्मधारय समास ____________ ____________

घ. द्विगु समास ____________ ____________

ङ. द्वंद्व समास ____________ ____________

6. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. समास किसे कहते हैं? समास के प्रमुख भेदों के नाम बताइए।

ख. तत्पुरुष समास के प्रमुख भेदों को उदाहरणों द्वारा स्पष्ट कीजिए।

ग. द्विगु समास तथा द्वंद्व समास में क्या अंतर है?

कार्यकलाप

नीचे दिए गए गोले में से यथा शब्द को पूर्वपद के रूप में लीजिए तथा अन्य शब्द उत्तरपद के स्थान पर रखिए। समस्तपद बनाइए और समास-विग्रह कीजिए।

समस्तपद	समास-विग्रह	समस्तपद	समास-विग्रह
यथास्थिति	स्थिति के अनुसार		

जाना-समझा

संधि से जुड़े शब्दों को अलग करना संधि-विच्छेद कहलाता है। समस्तपद के पदों को अलग करके लिखना समास-विग्रह कहलाता है।

14 संज्ञा

चित्र देखकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- दोनों विद्यार्थियों के लिए अपनी पसंद के नाम लिखिए। ____________________
- चित्र में दिखाई देनेवाले प्राणियों तथा स्थानों के नाम लिखिए। ____________________
- विद्यार्थियों ने क्या-क्या उठा रखा है? ____________________
- बगीचे में क्या फैली है? शांति तथा हरियाली

इस चित्र में ________ तथा ________ व्यक्तियों के नाम हैं। गिलहरी तथा चिड़िया प्राणियों के नाम हैं। विद्यालय तथा बगीचा स्थान के नाम हैं। बस्ता तथा पुस्तक वस्तुओं के नाम हैं। शांति तथा हरियाली भाव के नाम हैं। ये सभी नाम ही संज्ञा हैं।

किसी व्यक्ति, प्राणी, स्थान, वस्तु या भाव के नाम को बतानेवाले शब्द संज्ञा कहलाते हैं।

संज्ञा के भेद

संज्ञा के प्रमुख तीन भेद हैं—1. व्यक्तिवाचक संज्ञा 2. जातिवाचक संज्ञा 3. भाववाचक संज्ञा।

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा

मानस फोर्ड लेकर दिल्ली गया।

उपर्युक्त वाक्य में 'मानस' व्यक्ति, 'फोर्ड' वस्तु तथा 'दिल्ली' स्थान विशेष के नाम हैं।

किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध करवानेवाले शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा कहलाते हैं।

सोचो और बताओ

दिए गए वाक्यों को पढ़कर व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्दों को छाँटकर लिखिए।

- हरिद्वार में गंगा नदी बहती है। ____________ ____________
- चाँदनी चौक के पास ही लाल किला है। ____________ ____________
- हिमालय पर्वत भारत में स्थित है। ____________ ____________
- विक्रम साराभाई का जन्म अहमदाबाद में हुआ था। ____________ ____________

2. **जातिवाचक संज्ञा**

बच्चे झूला झूल रहे हैं।

उपर्युक्त वाक्य में बच्चे शब्द से किसी भी बच्चे तथा झूला शब्द से किसी भी प्रकार के झूले का बोध हो रहा है। ये शब्द किसी विशेष बच्चे या विशेष झूले के बारे में न बताकर उनकी पूरी जाति की ओर संकेत कर रहे हैं।

ऐसे शब्द, जो किसी विशेष व्यक्ति, प्राणी, स्थान या वस्तुओं के बारे में न बताकर उनकी पूरी जाति का बोध कराते हैं, जातिवाचक संज्ञा कहलाते हैं।

सोचो और बताओ

दिए गए वाक्यों में आए जातिवाचक संज्ञा शब्दों को छाँटकर लिखिए।

- बकरी घास खा रही है। ____________ ____________
- लड़की पतंग उड़ा रही है। ____________ ____________
- स्त्री खिड़की से झाँक रही है। ____________ ____________
- हथौड़ा स्कूटर पर रख दो। ____________ ____________

3. **भाववाचक संज्ञा**

बच्चे की हँसी ने मेरी सारी थकान दूर कर दी।

उपर्युक्त वाक्य में हँसी तथा थकान शब्द मन के भावों को बता रहे हैं। इन्हें केवल अनुभव किया जा सकता है। इन्हें स्पर्श नहीं कर सकते।

ऐसे संज्ञा शब्द, जो भाव अथवा गुणों को बताते हैं, भाववाचक संज्ञा शब्द कहलाते हैं।

सोचो और बताओ

दिए गए वाक्यों में आए भाववाचक संज्ञा शब्दों को छाँटकर लिखिए।

- देशभक्त सरदी-गरमी की चिंता नहीं करते। ____________ ____________
- ईमानदारी से काम करके सफलता अवश्य मिलती है। ____________ ____________
- बचपन में मैं तेज़ दौड़ लेता था। ____________ ____________
- आपका अपनापन देख मुझे खुशी हुई। ____________ ____________

संज्ञा के दो अन्य भेद भी स्वीकार किए जाते हैं—1. समुदायवाचक संज्ञा 2. द्रव्यवाचक संज्ञा।

1. समुदायवाचक संज्ञा

मैं अपने परिवार के साथ मसूरी गया।

उपर्युक्त वाक्य में आया परिवार शब्द एक समूह या समुदाय का बोध करा रहा है।

समूह या समुदाय का बोध करवानेवाले शब्द समुदायवाचक संज्ञा कहलाते हैं। इनका प्रयोग सदैव एकवचन में होता है।

सोचो और बताओ

दिए गए वाक्यों में से समुदायवाचक शब्दों को पहचानकर लिखिए।

- कक्षा में सभी बच्चे चुपचाप बैठे हैं। ____________
- नेताजी सभा को संबोधित कर रहे हैं। ____________
- लोमड़ी अंगूरों के गुच्छे पर झपटी। ____________
- सड़क पर भीड़ लगी थी। ____________

2. द्रव्यवाचक संज्ञा

घर के बाहर लोहे का गेट लगा है।

मैंने पकौड़े बनाने के लिए घी गरम किया।

उपर्युक्त वाक्यों में लोहे तथा घी शब्द क्रमशः पदार्थ तथा द्रव्य के सूचक हैं।

पदार्थ अथवा द्रव्य का बोध करवानेवाले शब्द द्रव्यवाचक संज्ञा होते हैं। इन्हें गिना नहीं जा सकता। इन्हें नापा अथवा तौला जाता है। इनका प्रयोग एकवचन में होता है।

सोचो और बताओ

कौन-से शब्द पदार्थ का तथा कौन-से शब्द द्रव्य का बोध करा रहे हैं?

- आजकल पेट्रोल के दाम बढ़ गए हैं। ____________
- सोना तो दिनोंदिन महँगा होता जा रहा है। ____________
- लकड़हारे ने कुल्हाड़ी में लकड़ी का हत्था लगाया। ____________
- तेल गरम हो गया है, आँच धीमी करो। ____________

जातिवाचक संज्ञा का व्यक्तिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग

जब जातिवाचक संज्ञा किसी जाति का बोध न करवाकर किसी व्यक्ति विशेष का बोध करवाती है, तब वहाँ जातिवाचक संज्ञा का व्यक्तिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग होता है।

जैसे—निराला की कविताएँ मन को छू लेती हैं।

'निराला' जातिवाचक संज्ञा है। यहाँ इसका प्रयोग कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के लिए हुआ है। यह जाति का बोध न करवाकर एक व्यक्ति विशेष का बोध करवा रही है। इस प्रकार जातिवाचक संज्ञा एक व्यक्तिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग हुई है।

व्यक्तिवाचक संज्ञा का जातिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग

जब व्यक्तिवाचक संज्ञा किसी व्यक्ति का बोध न करवाकर किसी जाति का बोध करवाती है, तब वहाँ व्यक्तिवाचक संज्ञा को जातिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग किया जाता है।

जैसे—हरिश्चंद्रों का सर्वत्र सम्मान होता है।

यहाँ हरिश्चंद्र व्यक्तिवाचक संज्ञा है, परंतु इसका प्रयोग यहाँ हरिश्चंद्र के सत्यवादिता के गुण को प्रकट करने के लिए किया गया है। इस प्रकार व्यक्तिवाचक संज्ञा का प्रयोग जातिवाचक संज्ञा के रूप में हुआ है।

भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण

भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया तथा अव्यय से किया जाता है।

जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा बनाना

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
प्रभु	प्रभुता	राष्ट्र	राष्ट्रीयता
सज्जन	सज्जनता	संस्कृति	संस्कार
शत्रु	शत्रुता	विद्वान	विद्वता
मानव	मानवता	कंजूस	कंजूसी
शहर	शहरी	माता	मातृत्व
बंधु	बंधुत्व	अतिथि	आतिथ्य
स्त्री	स्त्रीत्व	इनसान	इनसानियत
नारी	नारीत्व	देव	देवत्व
गुरु	गुरुत्व	भाई	भाईचारा

सर्वनाम से भाववाचक संज्ञा बनाना

सर्वनाम	भाववाचक संज्ञा	सर्वनाम	भाववाचक संज्ञा
सर्व	सर्वस्व	पराया	परायापन
अपना	अपनापन	मम	ममत्व
अहं	अहंकार	निज	निजत्व

विशेषण शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाना

विशेषण	भाववाचक संज्ञा	विशेषण	भाववाचक संज्ञा
आलसी	आलस्य	बड़ा	बड़प्पन
मीठा	मिठास	गरीब	गरीबी
चालाक	चालाकी	चंचल	चंचलता
निपुण	निपुणता	दुर्बल	दुर्बलता
धीर	धैर्य	ठंडा	ठंडक
वीर	वीरता	चतुर	चतुराई
लंबा	लंबाई	अच्छा	अच्छाई
बुरा	बुराई	मधुर	मधुरता / माधुर्य
अकेला	अकेलापन	गंभीर	गंभीरता

क्रिया शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाना

क्रिया	भाववाचक संज्ञा	क्रिया	भाववाचक संज्ञा
लिखना	लेख	थकना	थकावट
हँसना	हँसी	दौड़ना	दौड़
रोना	रुलाई	पढ़ना	पढ़ाई
डरना	डर	हारना	हार
काटना	कटाई	धोना	धुलाई
सिलना	सिलाई	लड़ना	लड़ाई
टकराना	टकराव	पीटना	पिटाई
देखना	दिखावा	कमाना	कमाई
खोदना	खुदाई	बहना	बहाव
छटपटाना	छटपटाहट	बदलना	बदलाव

अव्ययों से भाववाचक संज्ञा बनाना

अव्यय	भाववाचक संज्ञा	अव्यय	भाववाचक संज्ञा
देर	देरी	निकट	निकटता
शीघ्र	शीघ्रता	मना	मनाही
नीचे	निचाई	दूर	दूरी
शाबाश	शाबाशी	बहुत	बहुतायत
जल्दी	जल्दबाजी	धिक्	धिक्कार

हमने जाना

- संज्ञा शब्द किसी व्यक्ति, प्राणी, स्थान, वस्तु या भाव के नाम होते हैं।
- व्यक्तिवाचक संज्ञा व्यक्ति, वस्तु तथा स्थान विशेष का, जातिवाचक संज्ञा जाति का और भाववाचक संज्ञा भावों का बोध कराती है।
- भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया तथा अव्यय से होता है।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

   क. 'गाय' शब्द किस संज्ञा का उदाहरण है?

   जातिवाचक संज्ञा का   व्यक्तिवाचक संज्ञा का   भाववाचक संज्ञा का

   ख. 'मीठा' शब्द से बनी भाववाचक संज्ञा कौन-सी है?

   मीठी   मिठास   मिठाई

2. व्यक्तिवाचक संज्ञा को जातिवाचक संज्ञा में बदलकर लिखिए।

   क. यमुना नदी का जलस्तर बढ़ गया है। ____________________

   ख. मयंक ने आम का पौधा लगाया। ____________________

   ग. गुलाब पर तितलियाँ मँडरा रही थीं। ____________________

   घ. किले पर तिरंगा झंडा फहराया गया। ____________________

   ङ. आदित्य ने कक्षा में निबंध पढ़कर सुनाया। ____________________

3. जातिवाचक संज्ञा को व्यक्तिवाचक संज्ञा में बदलकर लिखिए।

   क. मैंने नई कार खरीदी है। ____________________

   ख. मुझे फूल की खुशबू बहुत पसंद है। ____________________

   ग. नदी को प्रदूषित मत करो। ____________________

   घ. पुस्तक को ध्यान से पढ़ो। ____________________

   ङ. स्टेशन पर बहुत भीड़ लगी थी। ____________________

4. कोष्ठक में दिए गए शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाकर रिक्त स्थानों को भरिए।

क. मुझे प्रसन्नता होगी यदि आप मेरा ____________ स्वीकार करेंगे। (अतिथि)

ख. मैंने अपना ____________ देश पर अर्पण कर दिया है। (सर्व)

ग. वाणी की ____________ बिगड़े काम बना देती है। (मीठा)

घ. मेरा ____________ एक प्रसिद्ध पत्रिका में छपा है। (लिखना)

ङ. स्वस्थ रहने के लिए आपको अपनी दिनचर्या में ____________ करना होगा। (बदलना)

5. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. संज्ञा किसे कहते हैं? संज्ञा के प्रमुख भेद कौन-से हैं?

ख. भाववाचक संज्ञा का निर्माण किस प्रकार किया जाता है?

ग. एक व्यक्तिवाचक संज्ञा जातिवाचक संज्ञा कब बन जाती है?

कार्यकलाप

व्यक्तिवाचक संज्ञा → व्यक्ति, प्राणी, वस्तु, स्थान का नाम

जातिवाचक संज्ञा → पूरी जाति का बोध करवानेवाले शब्द

भाववाचक संज्ञा → भाव का बोध करवानेवाले शब्द

दिए गए वार्तालाप को पढ़िए तथा संज्ञा शब्द रेखांकित करके उसके भेद का नाम लिखिए।

वाणी	मेरा नाम वाणी है।	____________
विद्या	मैंने तुम्हें पहले इस विद्यालय में नहीं देखा।	____________
वाणी	पहले मैं सहारनपुर में पढ़ती थी।	____________
विद्या	तुम्हें दिल्ली क्यों आना पड़ा?	____________
वाणी	मेरे पिताजी यहाँ आ गए थे।	____________
विद्या	तुम्हारा घर कहाँ है?	____________
वाणी	नोएडा में	____________
विद्या	क्या तुम्हें यहाँ आकर खुशी हुई?	____________
वाणी	हाँ, मुझे यहाँ आकर बहुत प्रसन्नता हुई।	____________

जाना-समझा

संज्ञा एक विकारी शब्द है। संज्ञा के रूप लिंग, वचन और कारक के कारण बदलते हैं।

15 लिंग

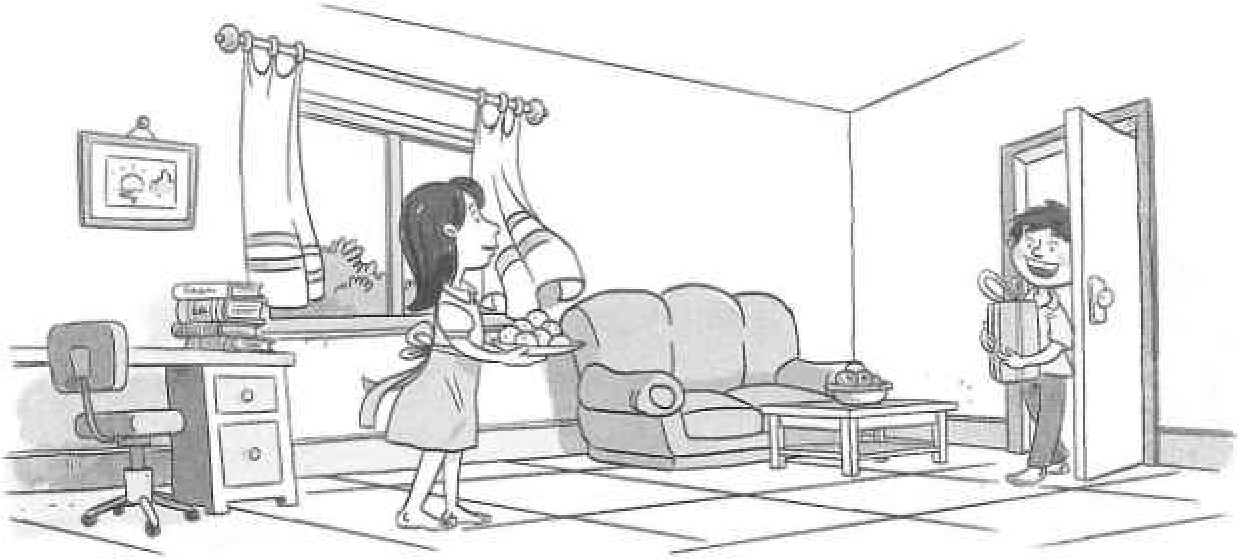

चित्र देखकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- चित्र के आधार पर ऐसे चार शब्द लिखिए, जो स्त्रीवाचक हों। ______ लड़की ______
- चित्र के आधार पर ऐसे चार शब्द लिखिए, जो पुरुषवाचक हों। ______________
- 'थाली' शब्द स्त्रीवाचक है या पुरुषवाचक? ______________

उपर्युक्त चित्र के आधार पर कुछ संज्ञा शब्द स्त्री जाति का बोध करवा रहे हैं और कुछ पुरुष जाति का। स्त्री अथवा पुरुष जाति का बोध करवानेवाले संज्ञा शब्द लिंग कहलाते हैं।

संज्ञा के जिस रूप से उसके स्त्री या पुरुष जाति के होने का बोध हो, उसे लिंग कहते हैं।

लिंग के भेद

लिंग के प्रमुख दो भेद हैं—1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग।

1. पुल्लिंग
   संज्ञा के जिस रूप से उसके पुरुष जाति का होने का बोध हो, उसे पुल्लिंग कहते हैं। लड़का, दरवाज़ा, हाथ, उपहार, मेज़, परदा, चित्र, सेब, लड्डू आदि पुल्लिंग हैं।

2. स्त्रीलिंग
   संज्ञा के जिस रूप से उसके स्त्री जाति का होने का बोध हो, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं। लड़की, थाली, कुरसी, खिड़की, मिठाई, पुस्तकें आदि स्त्रीलिंग हैं।

पुल्लिंग शब्द

	पुल्लिंग	अपवाद (स्त्रीलिंग)
शरीर के अंगों के नाम	दाँत, ओठ, पाँव, गाल, हाथ, मस्तिष्क, तालु, बाल, अँगूठा, नाखून, कान, मुँह	नाक, आँख, कोहनी, बाँह, हड्डी, ठोड़ी आदि।
देशों के नाम	भारत, अमेरिका, इंग्लैंड, आस्ट्रेलिया	श्रीलंका
धातुओं के नाम	ताँबा, सोना, लोहा, काँसा, पीतल	चाँदी
द्रव्य पदार्थों के नाम	पानी, घी, तेल, शरबत, इत्र, रायता, पेट्रोल, सिरका, अर्क	चाय, कॉफी, लस्सी
पेड़ों के नाम	आम, बरगद, शीशम, अशोक, सेब, पीपल	लीची, नाशपाती, नारंगी
अनाज के नाम	चावल, मटर, गेहूँ, जौ, चना, बाजरा, तिल	मकई, जुआर, मूँग, मसूर
रत्नों के नाम	हीरा, पन्ना, मोती, पुखराज, माणिक, नीलम, जवाहर, मूँगा	नीली, मणि
महीनों/दिनों के नाम	मार्च, अप्रैल, सोमवार, मंगलवार, बुधवार	जनवरी, फरवरी, जुलाई
पहाड़ों और समुद्रों के नाम	हिमालय, प्रशांत महासागर, अरब सागर	नीलगिरि

स्त्रीलिंग शब्द

	स्त्रीलिंग	अपवाद (पुल्लिंग)
नदियों के नाम	गंगा, यमुना, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी, महानदी	सिंधु, ब्रह्मपुत्र
नक्षत्रों के नाम	रोहिणी, अश्विनी, भरणी	अभिजित, पुष्य
मसालों के नाम	हल्दी, इलायची, मेथी, हींग, दालचीनी, मिर्च	लौंग, धनिया, गरम मसाला, केसर, तेजपत्ता
खाने की वस्तुएँ	खीर, पूरी, कचौड़ी, दाल, रोटी, खिचड़ी, चपाती	पराँठा, हलवा, दही, रायता

प्रत्ययों के आधार पर लिंग-निर्णय

प्रत्यय	पुल्लिंग	प्रत्यय	स्त्रीलिंग
आ/अक्कड़	घेरा, फेरा, घुमक्कड़	आई	पढ़ाई, लिखाई, मिठाई
आक/आका/आकू	तैराक, लड़ाका, लड़ाकू	आवट	सजावट, थकावट, दिखावट
आव/आवा	बहाव, छलावा, छिपाव	आस	प्यास, मिठास, खटास
आर	सुनार, व्यापार	आहट	चिल्लाहट, चिकनाहट, घबराहट
एरा	सँपेरा, अँधेरा	इमा	कालिमा, गरिमा, लालिमा
पा	बुढ़ापा, पुजापा, मोटापा	औती/ई	फिरौती, मनौती, रेती, भलाई
पन	बचपन, लड़कपन, छुटपन	क/की	बैठक, बैठकी
वान/वाला	गाड़ीवान, धनवान, दूधवाला	ता/नी	मित्रता, सुंदरता, मथनी, ओढ़नी

लिंग परिवर्तन के नियम

अंत में 'आ' लगाकर

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
अनुज	अनुजा
भवदीय	भवदीया
छात्र	छात्रा
सदस्य	सदस्या
बाल	बाला

अंत में 'अ' को 'ई' करके

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
नर	नारी
ब्राह्मण	ब्राह्मणी
देव	देवी
हिरण	हिरणी
पुत्र	पुत्री

अंत में 'इन' लगाकर

नाती	नातिन
दरजी	दरजिन
सुनार	सुनारिन
नाग	नागिन
ग्वाला	ग्वालिन

अंत में 'आइन' लगाकर

बाबू	बबुआइन
पंडित	पंडिताइन
ठाकुर	ठकुराइन
गुरु	गुरुआइन
लाला	ललाइन

अंत में 'नी' लगाकर

रीछ	रीछनी
सिंह	सिंहनी
जाट	जाटनी
चोर	चोरनी
भील	भीलनी

अंत में 'आनी' लगाकर

भव	भवानी
क्षत्रिय	क्षत्राणी
जेठ	जेठानी
नौकर	नौकरानी
सेठ	सेठानी

अंत में 'आ' को 'इया' करके

बुड्ढा	बुढ़िया
बछड़ा	बछिया
बेटा	बिटिया
लोटा	लुटिया
चूहा	चुहिया

अंत में 'अक' को 'इका' करके

नायक	नायिका
अध्यापक	अध्यापिका
संपादक	संपादिका
सेवक	सेविका
दर्शक	दर्शिका

अंत में 'वान' को 'वती' करके

धनवान	धनवती
पुत्रवान	पुत्रवती
बलवान	बलवती
भगवान	भगवती

अंत में 'मान' को 'मती' करके

श्रीमान	श्रीमती
आयुष्मान	आयुष्मती
बुद्धिमान	बुद्धिमती
शक्तिमान	शक्तिमती

'ता' के स्थान पर 'त्री' लगाकर

अभिनेता	अभिनेत्री
निर्माता	निर्मात्री
नेता	नेत्री
दाता	दात्री

अंत में 'इनी' लगाकर

मनस्वी	मनस्विनी
हाथी	हथिनी
स्वामी	स्वामिनी
तपस्वी	तपस्विनी

सोचो और बताओ

लिंग बदलकर लिखिए—गायक ____________ तेली ____________

सुत ____________ बालक ____________

भिन्न रूपवाले शब्द

हिंदी भाषा में अनेक ऐसे शब्द हैं, जिनका लिंग परिवर्तित करने पर उनका स्वरूप भिन्न हो जाता है।

पति	पत्नी	पुरुष	स्त्री
पुत्र	पुत्रवधू	राजा	रानी
युवक	युवती	साधु	साध्वी
फूफा	बुआ	विधुर	विधवा

नित्य पुल्लिंग

कुछ शब्द ऐसे होते हैं, जो सदैव पुल्लिंग रूप में ही प्रयोग किए जाते हैं। इनका स्त्रीलिंग रूप बनाने के लिए इनसे पहले 'मादा' शब्द जोड़ा जाता है।

जैसे—भालू मादा भालू मच्छर मादा मच्छर बिच्छू मादा बिच्छू कछुआ मादा कछुआ

नित्य स्त्रीलिंग

कुछ शब्द ऐसे होते हैं, जो सदैव स्त्रीलिंग रूप में ही प्रयोग किए जाते हैं। इनका पुल्लिंग रूप बनाने के लिए इनसे पहले 'नर' शब्द जोड़ा जाता है।

जैसे— गौरैया नर गौरैया | मक्खी नर मक्खी | गिलहरी नर गिलहरी
तितली नर तितली | मकड़ी नर मकड़ी | चील नर चील

विशेष कुछ ऐसे शब्द होते हैं, जो स्त्रीलिंग तथा पुल्लिंग दोनों रूपों में प्रयोग किए जाते हैं। ऐसे शब्दों के लिंग का परिचय क्रिया या विशेषण द्वारा प्राप्त होता है।

जैसे—डॉक्टर, राज्यपाल, राजदूत, वकील, मैनेजर, प्रधानमंत्री, इंजीनियर इत्यादि।

राष्ट्रपति भाषण देंगे। राष्ट्रपति भाषण देंगी। क्रिया

वह बुद्धिमान मैनेजर है। वह बुद्धिमती मैनेजर है। विशेषण

हमने जाना

- स्त्री-पुरुष जाति का बोध करवानेवाले संज्ञा शब्दरूप लिंग कहलाते हैं।
- स्त्री जाति का बोध करवानेवाले संज्ञा शब्दरूप स्त्रीलिंग कहलाते हैं।
- पुरुष जाति का बोध करवानेवाले संज्ञा शब्दरूप पुल्लिंग कहलाते हैं।

आओ कुछ करें

1. **सही विकल्प पर गोला लगाइए।**

क. नित्य स्त्रीलिंग शब्द कौन-से हैं?

गौरैया खरगोश कछुआ

ख. नित्य पुल्लिंग शब्द कौन-से हैं?

तितली छिपकली भालू

2. **रंगीन शब्द पहचानकर लिखिए कि वे स्त्रीलिंग हैं या पुल्लिंग।**

क. मेरे नाखून बहुत जल्दी बढ़ जाते हैं। ____________

ख. स्कूटर से पेट्रोल रिस रहा था। ____________

ग. यह बरगद का पेड़ वर्षों पुराना है। ____________

घ. खीर में इलायची मिलाई है। ____________

ङ. गंगा नदी मैदानों में धीमी गति से बहती है। ____________

3. कोष्ठक से सही शब्द का चयन कर रिक्त स्थानों को भरिए।

क. ______________ बीन बजा रहा था। (सँपेरा/सँपेरन)

ख. सब्ज़ी में थोड़ा ______________ मिला दो। (गरम मसाला/हल्दी)

ग. मैं भी अपने विद्यालय के क्लब की ______________ बन गई हूँ। (सदस्य/सदस्या)

घ. ______________ जी प्रवचन दे रहे हैं। (पंडित/पंडिताइन)

ङ. ______________ हाथ में भोजन की थाली लिए आई। (सेवक/सेविका)

4. रंगीन शब्दों के लिंग बदलकर वाक्य दोबारा लिखिए।

क. झाड़ी के पीछे हिरण की आँखें दिखाई दे रही थीं। ______________

ख. ग्वालिन ने दूध का घड़ा सिर पर रखा। ______________

ग. चोर चोरी करके नौ-दो ग्यारह हो गया। ______________

घ. भील ने जंगल से जड़ी-बूटियाँ एकत्र की। ______________

ङ. वे 'नई कथा' के संपादक हैं। ______________

5. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. स्त्रीलिंग तथा पुल्लिंग में क्या अंतर है?

ख. नित्य स्त्रीलिंग तथा नित्य पुल्लिंग शब्द कौन-से होते हैं?

कार्यकलाप

सर्वनाम शब्दों का लिंग परिवर्तन मात्रा में परिवर्तन के आधार पर होता है। सर्वनाम शब्दों के स्त्रीलिंग तथा पुल्लिंग रूप पढ़िए तथा उनके प्रयोग द्वारा वाक्य बनाइए।

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
मेरा	मेरी	हमारा	हमारी
तुम्हारा	तुम्हारी	आपका	आपकी
उसका	उसकी	उनका	उनकी

जाना-समझा

वे शब्द, जिनके अंत में 'ना' लगा हो, पुल्लिंग होते हैं; जैसे—पढ़ना, लिखना, भागना, घबराना इत्यादि।

16 वचन

चित्र देखकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- मेज़ पर कितने गुलदस्ते रखे हैं? — एक/एक से अधिक (अनेक)
- कितने बच्चे गाना गा रहे हैं? — एक/एक से अधिक
- कुरसियाँ कितनी हैं? — एक/अनेक
- चित्र में कौन-सी वस्तुएँ एक हैं और कौन-सी अनेक? ____________________

उपर्युक्त चित्र में कुछ वस्तुएँ एक का तथा कुछ वस्तुएँ अनेक का बोध करवा रही हैं। एक तथा अनेक का बोध करवानेवाला शब्द वचन कहलाता है।

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण अथवा क्रिया का वह रूप, जिससे संख्या का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं।

वचन के भेद

वचन के प्रमुख दो भेद हैं—1. एकवचन 2. बहुवचन।

1. **एकवचन** जिस विकारी शब्द से उसके संख्या में एक होने का पता चले, उसे एकवचन कहते हैं।
2. **बहुवचन** जिस विकारी शब्द से उसके संख्या में एक से अधिक होने का पता चले, उसे बहुवचन कहते हैं।

जैसे—आसमान में चाँद चमक रहा है। (एक एकवचन)

आसमान में तारे चमक रहे हैं। (अनेक बहुवचन)

सोचो और बताओ

रंगीन शब्द एकवचन हैं या बहुवचन?

बच्चा गाना गा रहा है। ____________ बच्चे गाने गा रहे हैं। ____________

वचन की पहचान

वचन की पहचान वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा, सर्वनाम तथा क्रिया शब्दों से होती है; जैसे—

- दीवार पर चित्र टँगा है। (संज्ञा → एक → एकवचन)
- चिड़ियाँ चहचहा रही हैं। (संज्ञा → अनेक → बहुवचन)
- वह नदी के किनारे खड़ा है। (सर्वनाम → एक → एकवचन)
- वे नदी के किनारे खड़े हैं। (सर्वनाम → अनेक → बहुवचन)
- माली इधर आ रहा है। (क्रिया → एक → एकवचन)
- कुत्ते दौड़ रहे हैं। (क्रिया → अनेक → बहुवचन)

सोचो और बताओ

रंगीन शब्दों के आधार पर बताइए कि एकवचन है या बहुवचन।

- वर्षा ऋतु में घनघोर वर्षा हो रही है। ____________
- मच्छरों ने गंदगी फैला रखी है। ____________
- हम जल्दी घर आएँगे। ____________
- मैं उससे कल ही मिला हूँ। ____________
- वहाँ बहुत-से शेर सोए हुए हैं। ____________
- रोगी बेहोश होकर गिर पड़ा। ____________

वचन का परिवर्तन

एकवचन को बहुवचन में परिवर्तित करने के कुछ सामान्य नियम इस प्रकार हैं—

पुल्लिंग शब्दों के अंत में 'आ' को 'ए' करके

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
गमला	गमले	बेटा	बेटे
तोता	तोते	छाता	छाते
कौआ	कौए	तारा	तारे
रास्ता	रास्ते	संतरा	संतरे
नाला	नाले	घड़ा	घड़े

स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'अ' को 'एँ' करके

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
कमीज़	कमीज़ें	बात	बातें
बहन	बहनें	कलम	कलमें
कीमत	कीमतें	आँख	आँखें
पतंग	पतंगें	रात	रातें
सड़क	सड़कें	पुस्तक	पुस्तकें
भैंस	भैंसें	भेड़	भेड़ें

स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'आ' के साथ 'एँ' लगाकर

कथा	कथाएँ	कला	कलाएँ
भाषा	भाषाएँ	कन्या	कन्याएँ
कविता	कविताएँ	सभा	सभाएँ
गाथा	गाथाएँ	सेना	सेनाएँ
शिला	शिलाएँ	बालिका	बालिकाएँ
महिला	महिलाएँ	लेखिका	लेखिकाएँ

स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'इ' या 'ई' को 'इयाँ' करके

नाली	नालियाँ	शक्ति	शक्तियाँ
सीढ़ी	सीढ़ियाँ	संधि	संधियाँ
मक्खी	मक्खियाँ	जाति	जातियाँ
मिठाई	मिठाइयाँ	दवाई	दवाइयाँ
कहानी	कहानियाँ	छुट्टी	छुट्टियाँ
पत्नी	पत्नियाँ	चाबी	चाबियाँ

स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'या' को 'याँ' करके

डिबिया	डिबियाँ	बिटिया	बिटियाँ
पुड़िया	पुड़ियाँ	बुढ़िया	बुढ़ियाँ
गुड़िया	गुड़ियाँ	चुहिया	चुहियाँ
बंदरिया	बंदरियाँ	लुटिया	लुटियाँ

स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'उ', 'ऊ' अथवा 'औ' के साथ 'एँ' लगाकर तथा 'ऊ' को 'उ' करके

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
ऋतु	ऋतुएँ	धेनु	धेनुएँ
जूँ	जुएँ	गौ	गौएँ
बहू	बहुएँ	लू	लुएँ
वधू	वधुएँ	वस्तु	वस्तुएँ

वृंद, गण, जन, वर्ग, दल, लोग जोड़कर

ऋषि	ऋषिवृंद	पक्षी	पक्षीवृंद
शिक्षक	शिक्षकगण	छात्र	छात्रगण
गुरु	गुरुजन	प्रिय	प्रियजन
युवा	युवावर्ग	पाठक	पाठकवर्ग
सैनिक	सैनिकदल	नर्तक	नर्तकदल
आप	आपलोग	हम	हमलोग

सदा एकवचन में प्रयुक्त होनेवाले शब्द

कुछ संज्ञा शब्द ऐसे हैं, जिनका प्रयोग सदा एकवचन में किया जाता है; जैसे—

द्रव्यवाचक संज्ञा शब्द पानी, तेल, दूध, घी, लोहा, सोना, चाँदी, ताँबा इत्यादि।

- नल से बूँद-बूँद पानी टपक रहा है।
- मिट्टी का तेल सस्ता हो गया है।
- उसने पकौड़े तलने के लिए कड़ाही में घी डाला।
- चाँदी दिन-प्रतिदिन महँगी होती जा रही है।

भाववाचक संज्ञा शब्द सज्जनता, मित्रता, सरदी, सत्य, ईमानदारी इत्यादि।

- सभी उसकी सज्जनता से प्रभावित हैं।
- कृष्ण तथा सुदामा में गहरी मित्रता थी।
- आज सरदी बहुत अधिक पड़ रही है।
- सदा सत्य बोलना चाहिए।
- ईमानदारी बहुत बड़ा गुण है।

समूहवाचक संज्ञा शब्द जनता, दल, समूह इत्यादि।

- प्रधानमंत्री का जनता ने भव्य स्वागत किया।

- शहर में ठगों का दल सक्रिय है।
- विद्यार्थियों का समूह नदी में उतर गया।

प्रत्येक, हर तथा हर एक, शब्द

- प्रत्येक छात्र अपनी पुस्तक में ध्यान दे।
- हर व्यक्ति को समय का महत्व पहचानना चाहिए।
- हर एक मनुष्य जिज्ञासु होता है।

सदा बहुवचन में प्रयुक्त होनेवाले शब्द

कुछ संज्ञा शब्द सदा बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं; जैसे—बाल, लोग, दर्शन, आँसू, हस्ताक्षर, दाम, ओठ आदि।

- मेरे बाल बहुत छोटे हैं।
- सुखद संयोग है कि आपके दर्शन हो गए।
- मैंने रिपोर्ट कार्ड पर हस्ताक्षर कर दिए हैं।
- लोग तेज़ी से धमाके की दिशा में भागे।
- मेरे आँसू लगातार बह रहे थे।
- प्याज़ के दाम बढ़ गए हैं।

एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग

आदर या सम्मान प्रकट करने के लिए

- दादाजी मेरे अध्यापक से बात कर रहे हैं।
- नेताजी भाषण दे रहे हैं।

बड़प्पन दिखाने के लिए

- हम किसी से नहीं डरते।
- हमारे पास आपकी सभी समस्याओं का हल है।

सोचो और बताओ

दिए गए शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

सोना (स्वर्ण) ______________________

आँसू ______________________

विभक्ति (कारक-चिह्नों) के साथ बहुवचन रूप

कारक-चिह्नों के प्रयोग द्वारा भी संज्ञा शब्दों का बहुवचन रूप बनाया जाता है। कारक-चिह्नों के प्रयोग द्वारा संज्ञा का रूप बदल जाता है; जैसे—

फूल	बाग में फूल खिला है।	(एकवचन)
	बाग में फूल खिले हैं।	(बहुवचन)
	फूलों पर तितलियाँ मँडरा रही हैं।	(कारक-चिह्न)

गरीब सरकार ने गरीबों के लिए अनेक योजनाएँ बनाई हैं।

पर्वत पर्वतों पर बर्फ़ जमी है।

छात्र छात्रों ने सुंदर अभिनय किया।

साधु साधुओं ने सभी के कल्याण की कामना की।

हमने जाना

- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण अथवा क्रिया का वह रूप, जिससे संख्या का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं।
- एकवचन संख्या में एक का तथा बहुवचन संख्या में अनेक का बोध करवाते हैं।
- वचन की पहचान संज्ञा, सर्वनाम तथा क्रिया शब्दों से होती है।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. कौन-सा शब्द एकवचन में है?

तोते नाली पुस्तकें

ख. कौन-सा शब्द बहुवचन में है?

छात्रगण जनता कौआ

2. रंगीन शब्द एकवचन हैं या बहुवचन?

क. मैंने एक लोटे में पानी डाला। __________

ख. ईमानदारी सफलता की सीढ़ी है। __________

ग. बाहर बहुत-से लोग खड़े हैं। __________

घ. सत्य की सदा जीत होती है। __________

ङ. प्रत्येक वस्तु का अलग मूल्य है। __________

3. रंगीन शब्दों का वचन परिवर्तित करके वाक्यों को पुनः लिखिए।

क. कुम्हार ने बहुत सुंदर घड़ा बनाया। __________

ख. मेरी आँख दर्द कर रही है। __________

ग. समुद्र के किनारे शिला पड़ी थी। __________

घ. मिठाई पर मक्खी भिनभिना रही है। ______

ङ. छुट्टी होनेवाली है। घर चलेंगे। ______

च. तुम्हें कौन-सी ऋतु पसंद है? ______

4. दिए गए शब्दों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

क. दूध ______

ख. हस्ताक्षर ______

ग. ताँबा ______

घ. दर्शन ______

ङ. मित्रता ______

5. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. वचन की परिभाषा देते हुए उसके भेदों को स्पष्ट कीजिए।

ख. ऐसे कौन-से संज्ञा शब्द हैं, जो सदा एकवचन में प्रयुक्त होते हैं?

कार्यकलाप

दिए गए चित्र को देखकर एक अनुच्छेद लिखिए, जिसमें एकवचन तथा बहुवचन का प्रयोग किया गया हो।

जाना-समझा

संबंधवाचक संज्ञा शब्द; जैसे—चाचा, मामा, दादा इत्यादि दोनों वचनों में समान रहते हैं।

उदाहरण— आदित्य का चाचा रोहिणी में रहता है। (एकवचन)

हरभजन और श्यामलाल मेरे चाचा हैं। (बहुवचन)

17 कारक

चित्र देखकर दिए गए वाक्यों को सही करके लिखिए।

- लड़के गेंद खेल रहे हैं। ____________________
- पक्षी आसमान उड़ रहे हैं। ____________________
- बड़ी लड़की छोटी लड़की आइसक्रीम दे रही है। ____________________

इन वाक्यों में क्रमशः से, में, को आदि का प्रयोग होगा। इनके प्रयोग से वाक्य पूर्ण हो जाएगा तथा संज्ञा शब्दों का संबंध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ स्पष्ट हो जाएगा। इन्हें विभक्तियाँ कहते हैं। विभक्तियों के साथ संज्ञा शब्दरूप कारक कहलाता है।

जैसे—गेंद से, आसमान में, लड़की को।

संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्यों में प्रयुक्त क्रिया तथा अन्य शब्दों से जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं।

कारक के भेद

कारक के प्रमुख आठ भेद हैं। प्रत्येक कारक का विभक्ति चिह्न अलग होता है। प्रमुख कारक तथा उनके विभक्ति चिह्न इस प्रकार हैं—

कारक	विभक्ति चिह्न	कारक-प्रयोग
कर्ता	ने	मधुर ने पियानो बजाया।
कर्म	को	माँ बच्चे को बुला रही हैं।
करण	से, के द्वारा	अक्षय पेंसिल से लिख रहा है।
संप्रदान	के लिए, को	माधुरी आहना के लिए गुड़िया लाई।
अपादान	से	स्त्री ने कुएँ से पानी निकाला।
संबंध	का, के, की	'निराला' की कविताएँ प्रसिद्ध हैं।
अधिकरण	में, पर	पेड़ पर पक्षी चहचहा रहे हैं।
संबोधन	हे, अरे	अरे! ठहरो, मेरी बात सुनो।

कर्ता कारक

कर्ता, अर्थात क्रिया को करनेवाला। वाक्य में जो पद क्रिया को करता है, उसे कर्ता कारक कहते हैं। कर्ता कारक में संज्ञा या सर्वनाम के साथ 'ने' विभक्ति लगी होती है। 'ने' विभक्ति का प्रयोग अधिकतर भूतकाल की क्रियाओं के साथ होता है। विभक्तिरहित कर्ता कारक की पहचान के लिए क्रिया के साथ कौन अथवा किसने लगाकर प्रश्न करने पर जो उत्तर आए, वही कर्ता कारक होगा।

उदाहरण
- राजा ने सिपाही बुलाया।
  प्रश्न किसने बुलाया? उत्तर राजा ने कर्ता कारक राजा ने
- हलवाई पकौड़े तल रहा है।
  प्रश्न कौन तल रहा है? उत्तर हलवाई कर्ता कारक हलवाई

सोचो और बताओ

कर्ता कारक कौन-सा है?

- लड़की मिठाई खाती है। कौन खाती है? ____________
- आनंदी ने मधुर गीत गाया। किसने मधुर गीत गाया? ____________
- शिक्षक ने प्रश्न हल करवाए। किसने प्रश्न हल करवाए? ____________
- दरज़ी कपड़े सिलता है। कौन कपड़े सिलता है? ____________

कर्म कारक

वाक्य में क्रिया का फल जिस शब्द पर पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं। कर्म कारक के साथ 'को' विभक्ति लगी होती है। कर्म कारक में 'को' विभक्ति का प्रयोग प्राणिवाचक संज्ञाओं के साथ होता है। अप्राणिवाचक संज्ञाओं के साथ विभक्ति का प्रयोग नहीं होता है। कर्म कारक की पहचान के लिए क्या अथवा किसे प्रश्नवाचक शब्द लगाकर प्रश्न करना चाहिए। जो उत्तर आएगा, वही कर्म कारक होगा।

उदाहरण ▪ माँ ने बच्चे को सुलाया।

प्रश्न किसे सुलाया? उत्तर बच्चे को कर्म कारक बच्चे को

▪ आदित्य ने झाड़कर दरी बिछाई।

प्रश्न क्या बिछाई? उत्तर दरी कर्म कारक दरी

सोचो और बताओ

इन वाक्यों में कर्म कारक कौन-सा है?

- पहलवान ने मुक्का मारा। क्या मारा? ____________
- नेहा ने फूल सजाए। क्या सजाए? ____________
- शिक्षक ने अभिभावक को बुलाया। किसे बुलाया? ____________
- अनंत ने भागते कछुए को पकड़ा। किसे पकड़ा? ____________

करण कारक

वाक्य में कर्ता जिस साधन के द्वारा कार्य करता है, उसे करण कारक कहते हैं। करण कारक के साथ 'से', 'के द्वारा' विभक्ति लगी होती है। करण कारक की पहचान के लिए क्रिया के साथ किससे अथवा किसके द्वारा लगाकर प्रश्न करना चाहिए। जो उत्तर आए, वही करण कारक है।

उदाहरण ▪ अंशुल साइकिल से जा रहा है।

प्रश्न किससे जा रहा है? उत्तर साइकिल से करण कारक साइकिल से

▪ रामायण वाल्मीकि के द्वारा लिखी गई।

प्रश्न किसके द्वारा लिखी गई? उत्तर वाल्मीकि के द्वारा करण कारक वाल्मीकि के द्वारा

सोचो और बताओ

इन वाक्यों में करण कारक कौन-सा है?

- बंदर डाली से झूल रहा है। किससे झूल रहा है? ____________
- बल्ब तार से जुड़े हुए हैं। किससे जुड़े हुए हैं? ____________
- बच्चों ने हाथ से ताली बजाई। किससे ताली बजाई? ____________
- बाज ने पंजे के द्वारा पक्षी को पकड़ा। किसके द्वारा पकड़ा? ____________

संप्रदान कारक

वाक्य में कर्ता जिसके लिए कोई क्रिया संपन्न करता है अथवा जिसे कुछ देता है, उसे संप्रदान कारक कहते हैं। संप्रदान कारक का विभक्ति चिह्न 'के लिए' तथा 'को' है। क्रिया के साथ किसके लिए, किसको लगाकर प्रश्न करने पर जो उत्तर मिलता है, उसे संप्रदान कारक कहते हैं।

उदाहरण ■ भूकंप पीड़ितों के लिए राहत सामग्री भेज दी है।
प्रश्न किसके लिए भेज दी है? उत्तर भूकंप पीड़ितों के लिए
संप्रदान कारक भूकंप पीड़ितों के लिए

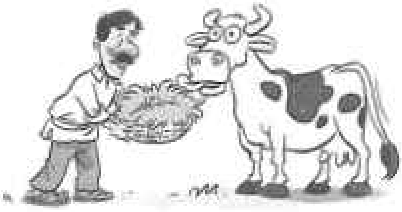

■ अजय ने गाय को चारा खिलाया।
प्रश्न किसको चारा खिलाया? उत्तर गाय को
संप्रदान कारक गाय को

सोचो और बताओ

दिए गए वाक्यों में संप्रदान कारक कौन-सा है?

- बच्चों के लिए फल खरीद लो। किसके लिए फल खरीद लो? ____________
- सक्षम खिलौनों के लिए मचलने लगा। किसके लिए मचलने लगा? ____________
- दादाजी ने मानव को आशीर्वाद दिया। किसको आशीर्वाद दिया? ____________
- बीमार के लिए दवा लाओ। किसके लिए दवा लाओ? ____________

अपादान कारक

वाक्य में जिस संज्ञा अथवा सर्वनाम पद से अलग होने का भाव प्रकट होता है, उसे अपादान कारक कहते हैं। अपादान कारक के साथ 'से' विभक्ति लगी होती है। अपादान कारक की पहचान करने के लिए क्रिया के साथ किससे अथवा कहाँ से लगाकर प्रश्न करना चाहिए। जो उत्तर प्राप्त हो, वही अपादान कारक होता है।

उदाहरण ■ सियार बिल से निकल भागा।
प्रश्न कहाँ से निकल भागा? उत्तर बिल से अपादान कारक बिल से

■ दूध लोटे से गिर गया।
प्रश्न किससे गिर गया? उत्तर लोटे से अपादान कारक लोटे से

सोचो और बताओ

दिए गए वाक्यों में अपादान कारक कौन-सा है?

- नल से पानी टपक रहा था। कहाँ से टपक रहा था? ____________
- मेरे हाथ से चाय गिर गई। किससे गिर गई? ____________
- गंगा हिमालय से निकलती है। किससे निकलती है? ____________
- जिराफ़ बाड़े से भाग गया। कहाँ से भाग गया? ____________

विशेष डर, प्रेम, घृणा, तुलना, ईर्ष्या इत्यादि भाव भी अपादान कारक द्वारा प्रकट होते हैं।

संबंध कारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से वाक्य में आए अन्य शब्दों से उसका संबंध प्रकट हो, उसे संबंध कारक कहते हैं। संबंध कारक की विभक्ति का/के/की, रा/रे/री अथवा ना/ने/नी है। संबंध कारक की पहचान के लिए किसका, किसके, किसकी लगाकर प्रश्न करने पर जो उत्तर मिलता है, उसे संबंध कारक कहते हैं।

उदाहरण
- पशमीना का शाल गरम होता है।
  प्रश्न किसका शाल गरम होता है? उत्तर पशमीना का संबंध कारक पशमीना का
- गणित के प्रश्न कठिन लगते हैं।
  प्रश्न किसके प्रश्न कठिन लगते हैं? उत्तर गणित के संबंध कारक गणित के

सोचो और बताओ

दिए गए वाक्यों में संबंध कारक कौन-सा है?
- मोरपंख की बनावट सुंदर होती है। किसकी बनावट सुंदर होती है? ________
- मेरा घर बहुत दूर है। किसका घर दूर है? ________
- हमारी पृथ्वी बहुत बड़ी है। किसकी पृथ्वी बड़ी है? ________
- अपनी किताब निकालो। किसकी किताब निकालो? ________

अधिकरण कारक

संज्ञा का जो रूप वाक्य में क्रिया होने के आधार, स्थान अथवा समय के बारे में बताता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं। अधिकरण कारक के साथ 'में' अथवा 'पर' विभक्ति लगी होती है। अधिकरण कारक की पहचान के लिए क्रिया के साथ कहाँ अथवा किसमें लगाकर प्रश्न करने पर जो उत्तर मिले, उसे अधिकरण कारक कहते हैं।

उदाहरण
- सड़क पर मत चलो।
  प्रश्न कहाँ मत चलो? उत्तर सड़क पर अधिकरण कारक सड़क पर
- दूध में उफान आ गया है।
  प्रश्न किसमें उफान आ गया है? उत्तर दूध में अधिकरण कारक दूध में

सोचो और बताओ

दिए गए वाक्यों में अधिकरण कारक कौन-सा है?
- कार्ड पर फूल सजे हैं। कहाँ फूल सजे हैं? ________
- खिड़की पर ब्रश रखा है। कहाँ ब्रश रखा है? ________
- मेंढक ने पानी में छलाँग लगाई। किसमें छलाँग लगाई? ________

संबोधन कारक

संज्ञा का वह रूप जिससे किसी को पुकारने का भाव प्रकट हो, उसे संबोधन कारक कहते हैं। संबोधन कारक के चिह्न 'हे', 'अरे' हैं। इसकी पहचान इसके बाद लगे '!' चिह्न से की जा सकती है।

उदाहरण
- अरे! तुम अभी तक गए नहीं।
- हे भगवान! हमारी चिंता दूर करें।
- हे बाबूजी! भूखे को कुछ देते जाओ।
- अरे! ज़रा रुको, मेरी चप्पल टूट गई है।

हमने जाना

- संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्यों में प्रयुक्त क्रिया तथा अन्य शब्दों से जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं।
- कारक के प्रमुख आठ भेद हैं—कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, संबंध, अधिकरण तथा संबोधन।

आओ कुछ करें

1. **सही विकल्प पर गोला लगाइए।**

   क. कर्ता कारक में संज्ञा के साथ कौन-सी विभक्ति लगी होती है?

   में   ने   से

   ख. कर्म कारक की 'को' विभक्ति का प्रयोग किस प्रकार की संज्ञा के साथ होता है?

   प्राणिवाचक   अप्राणिवाचक   सभी प्रकार की

2. **दिए गए वाक्यांशों के लिए एक शब्द में कारक का नाम लिखिए।**

   क. जो वाक्य में क्रिया को करनेवाला हो ____कर्ता____

   ख. जिसपर क्रिया का फल पड़े ____________

   ग. जिस साधन द्वारा कर्ता क्रिया करे ____________

   घ. जिसके लिए कार्य किया जाए ____________

   ङ. जो अलगाव को दर्शाता हो ____________

   च. जो संबंध को दिखाता हो ____________

छ. जो क्रिया के आधार के बारे में बताए ____________

ज. जिस संबोधन से किसी को पुकारा जाए ____________

3. दिए गए वाक्यों में आए कारकों को रेखांकित कर उनके नाम लिखिए।

क. कृष्ण ने नया कार्य आरंभ किया। ____कर्ता कारक____

ख. खाद खेतों को उपजाऊ बनाती है। ____________

ग. हिमांशु चाकू से फल काट रहा है। ____________

घ. संस्था के लिए सहयोग करें। ____________

ङ. पायलट जहाज़ से कूद पड़ा। ____________

च. भारत के सैनिक वीर योद्धा हैं। ____________

4. कारक-चिह्न का प्रयोग कर वाक्य पुनः लिखिए।

क. देवता समुद्र मंथन गए। ____________

ख. मेरे भाई कार अच्छी है। ____________

ग. पूर्ण निष्ठा कार्य करते रहो। ____________

घ. महात्मा बुद्ध अहिंसा उपदेश दिया। ____________

ङ. भगवान! इनको कब समझ आएगी। ____________

च. सभी रंगों होली खेलते हैं। ____________

5. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. कारक किसे कहते हैं? कारक के प्रमुख भेदों के नाम बताइए।

ख. करण कारक तथा अपादान कारक में क्या अंतर है?

ग. कर्म कारक तथा संप्रदान कारक में क्या अंतर है?

कार्यकलाप

सभी विभक्तियों का प्रयोग करते हुए एक अनुच्छेद लिखिए।

जाना-समझा

विभक्तियों का प्रयोग प्रायः संज्ञा या सर्वनाम के साथ ही होता है।

18 सर्वनाम

चित्र देखकर नीचे दी गई पंक्तियों के आधार पर एक अनुच्छेद लिखिए।

- अक्षय, अक्षय की बहन तथा अक्षय के पिताजी के साथ खाना खा रहा है।
- अक्षय, अक्षय की माँ से खाना ले रहा है।
- अक्षय का कुत्ता, अक्षय की माँ के पीछे खड़ा है।
- अक्षय, अक्षय के परिवार के साथ खुश है।

अक्षय अपनी बहन तथा अपने पिताजी ...

अनुच्छेद लिखते समय आपने बार-बार अक्षय का प्रयोग नहीं किया। उसके स्थान पर अपनी, अपने आदि शब्दों का प्रयोग किया। इससे संज्ञा शब्द अक्षय की पुनरावृत्ति नहीं हुई। वाक्य सुगठित हो गया तथा पढ़ने में अधिक आकर्षक एवं रुचिकर लगने लगा। भाषा को स्पष्ट, सुंदर तथा आकर्षक बनाने के लिए हम संज्ञा शब्दों के स्थान पर जिन शब्दों का प्रयोग करते हैं, उन्हें सर्वनाम कहते हैं; जैसे–

अक्षय, अक्षय की बहन तथा अक्षय के पिताजी के साथ खाना खा रहा है।

अक्षय अपनी बहन तथा अपने पिताजी के साथ खाना खा रहा है।

यहाँ 'अपनी' तथा 'अपने' सर्वनाम हैं।

वह विकारी शब्द, जो वाक्य में संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होता है, सर्वनाम कहलाता है।

सर्वनाम के भेद

सर्वनाम के प्रमुख छह भेद हैं—1. पुरुषवाचक सर्वनाम 2. निश्चयवाचक सर्वनाम 3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम 4. प्रश्नवाचक सर्वनाम 5. संबंधवाचक सर्वनाम 6. निजवाचक सर्वनाम।

1. पुरुषवाचक सर्वनाम

वे सर्वनाम शब्द, जिन्हें वक्ता, श्रोता अथवा अन्य व्यक्ति (जिसके विषय में बात की जा रही है) के लिए प्रयोग किया जाता है, पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

जैसे— मैं, तुम्हें समझाकर थक गया कि उसपर भरोसा मत करो।

मैं वक्ता (बोलनेवाला)

तुम्हें श्रोता (जिससे वक्ता बात कर रहा है)

उसपर अन्य व्यक्ति (वक्ता जिसके बारे में श्रोता से बात कर रहा है)

पुरुषवाचक सर्वनाम के भेद

वक्ता, श्रोता तथा अन्य व्यक्ति के आधार पर पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद हैं—

वक्ता उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम

श्रोता मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम

अन्य अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम

उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम वे सर्वनाम शब्द, जिनका प्रयोग बोलनेवाला अपने लिए करता है, उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। मैं, हम उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम हैं; जैसे—

- मैं आज घर पर ही रहूँगा।
- मुझे चित्र बनाना अच्छा लगता है।
- मुझसे इतना बोझ नहीं उठाया जाएगा।
- मैंने तो किसी को नहीं बुलाया।

कारकों की विभक्तियाँ लगने से सर्वनामों का रूप बदल जाता है।

उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम के कारकों के साथ परिवर्तित रूप

मैं, मैंने, मुझे, मुझको, मुझसे, मुझपर, मेरा, मेरी, मेरे, मेरे लिए, हम, हमने, हमें, हमको, हमसे, हमपर, हमारे लिए

मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम वे सर्वनाम शब्द, जिन्हें वक्ता, श्रोता के लिए प्रयोग करता है, मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। तू, तुम, आप मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम हैं; जैसे—

- तुम अपना ध्यान क्यों नहीं रखते हो?
- तुम्हारे गणित के सभी प्रश्न सही हैं।

- तुम्हें इस पुस्तक की बहुत आवश्यकता है।
- तुमपर सभी को नाज़ है।

मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम के कारकों के साथ परिवर्तित रूप

तुम, तुमने, तुम्हें, तुमको, तुमसे, तुम्हारे लिए, तुमपर, तुममें, तुम्हारा, तुम्हारे, तुम्हारी
आप, आपने, आपको, आपसे, आपके लिए, आपपर, आपमें, आपका, आपकी, आपके

अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम वे सर्वनाम शब्द, जो वक्ता श्रोता से बात करते हुए किसी अन्य व्यक्ति के लिए प्रयोग करता है, अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। वह, वे, यह, ये अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम हैं; जैसे—

- वह संस्कृत का प्रकांड विद्वान है।
- वे पहाड़ी पर चढ़कर प्रकृति का आनंद ले रहे हैं।
- उसे खेलने के सिवा कुछ अच्छा नहीं लगता।
- दादी उसके लिए स्वेटर बुन रही हैं।

अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम के कारकों के साथ परिवर्तित रूप

वह, उसने, उसे, उसको, उससे, उसके, उसके लिए, उसका, उसकी, उसमें, उसपर, वे, उन्होंने, उन्हें, उनको, उनसे, उनके लिए, उनका, उनकी, उनके, उनमें, उनपर इत्यादि।

सोचो और बताओ

सर्वनाम रेखांकित कर भेद का नाम लिखिए।

- हमारे लिए नए-नए उपहार आए हैं। ____________
- आपपर पूरा भरोसा किया जा सकता है। ____________
- उन्हें ज़रूरी काम था, इसलिए चले गए। ____________

2. निश्चयवाचक सर्वनाम

किसी पदार्थ या व्यक्ति का निश्चयपूर्वक ज्ञान करवानेवाले सर्वनाम निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। इनसे निकटवर्ती तथा दूरवर्ती पदार्थों का निश्चयात्मक रूप से बोध होता है। यह, वह निश्चयवाचक सर्वनाम हैं; जैसे—

- यह हमारे घर की चाबी है।
- वह भी तुम्हें ढूँढ़ रहा है।
- उसे ही कल प्रथम पुरस्कार मिला था।
- इनपर विश्वास करो। ये सच कह रहे हैं।

निश्चयवाचक सर्वनाम के कारकों के साथ परिवर्तित रूप

यह, इसने, इसे, इसको, इससे, इसके द्वारा, इसके लिए, इसका, इसके, इसकी, इसमें, इसपर, ये, इन्होंने, इन्हें, इनसे, इनके लिए, इनका, इनकी, इनमें, इनपर इत्यादि।

3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम

वे सर्वनाम शब्द, जो किसी पदार्थ या वस्तु का निश्चित रूप से बोध नहीं करवाते, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। कोई, कुछ अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं; जैसे–

- उसके मन में कुछ बात ज़रूर है।
- काश! कोई मुझे यह प्रश्न समझा दे।
- कुछ खा लो, कब तक भूखी रहोगी।
- इस कमरे में कुछ तो नया है।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम के कारकों के साथ परिवर्तित रूप

कुछ, कोई, किसी, किन्हीं, किसी से, किन्हीं से, किसी के लिए, किन्हीं के लिए, किसी पर, किन्हीं पर इत्यादि।

4. प्रश्नवाचक सर्वनाम

वे सर्वनाम शब्द, जिनका प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है, प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। कौन, क्या प्रश्नवाचक सर्वनाम हैं; जैसे–

- कौन आसमान से पानी बरसाता है?
- सारे रंग किसके लिए हैं?
- छिपकर किसकी बात सुन रहे हो?
- आज घर में किसे बुलाया है?

प्रश्नवाचक सर्वनाम के कारकों के साथ परिवर्तित रूप

कौन, किसने, किन्होंने, किसे, किसको, किससे, किसके लिए, किनके लिए, किसपर, किनपर, किनका इत्यादि।

सोचो और बताओ

एक-एक उदाहरण लिखिए।

- निश्चयवाचक सर्वनाम ____________________
- अनिश्चयवाचक सर्वनाम ____________________
- प्रश्नवाचक सर्वनाम ____________________

5. संबंधवाचक सर्वनाम

वे सर्वनाम शब्द, जिनसे वाक्य में आए किसी दूसरे सर्वनाम शब्द से संबंध स्थापित किया जाए, उन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं। जो, सो संबंधवाचक सर्वनाम हैं; जैसे—

- जो पढ़ेगा, वही सफल होगा।
- जिसकी लाठी उसकी भैंस।
- जो बोएगा, वही काटेगा।

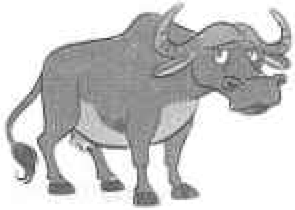

संबंधवाचक सर्वनाम के कारकों के साथ परिवर्तित रूप

जो, जिसका, जिसकी, जिसके, जिसे, जिसने, जिससे, जिसके लिए, जिसपर, जिन्हें, जिन्होंने, जिनसे, जिनका इत्यादि।

6. निजवाचक सर्वनाम

वे सर्वनाम शब्द, जो स्वयं (कर्ता) का बोध करवाते हैं, परंतु कर्ता का कार्य नहीं करते, निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। आप निजवाचक सर्वनाम है; जैसे—

- मैं स्वयं चला जाऊँगा।
- अपने से छोटों से प्यार करो।
- अपना काम करना सीखो।
- मैंने जूते के फ़ीते अपने-आप बाँध लिए।

निजवाचक सर्वनाम के कारकों के साथ परिवर्तित रूप

अपने, अपना, आप, अपने-आप, स्वयं, खुद इत्यादि।

हमने जाना

- सर्वनाम, संज्ञा के स्थान पर आनेवाले विकारी शब्द हैं।
- सर्वनाम के प्रमुख छह भेद हैं—
  पुरुषवाचक सर्वनाम, निश्चयवाचक सर्वनाम, अनिश्चयवाचक सर्वनाम, प्रश्नवाचक सर्वनाम, संबंधवाचक सर्वनाम तथा निजवाचक सर्वनाम।
- पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद हैं—
  उत्तम पुरुषवाचक, मध्यम पुरुषवाचक तथा अन्य पुरुषवाचक।

आओ कुछ करें

1. **सही विकल्प पर गोला लगाइए।**

   क. 'शिमला में बर्फ़ पर मेरा पैर फिसल गया' में प्रयुक्त सर्वनाम कौन-सा है?

   पुरुषवाचक   निजवाचक   संबंधवाचक

   ख. 'जो पेड़ मैंने लगाया था, वह यही है' वाक्य में संबंधवाचक सर्वनाम कौन-सा है?

   मैंने   जो, वह   यही

2. **रिक्त स्थानों को भरिए।**

   क. सर्वनाम शब्द ________ के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं।

   ख. वक्ता के लिए प्रयोग किया जानेवाला सर्वनाम ________ सर्वनाम होता है।

   ग. ________ सर्वनाम निकटवर्ती तथा दूरवर्ती पदार्थों का निश्चयात्मक रूप से बोध करवाता है।

   घ. प्रश्न पूछने के लिए प्रयोग किए गए सर्वनाम ________ सर्वनाम होते हैं।

   ङ. ________ सर्वनाम, दो सर्वनामों में संबंध स्थापित करने का कार्य करते हैं।

3. **सर्वनाम शब्दों को रेखांकित कर उनके भेदों के नाम लिखिए।**

   क. मेरा घोड़ा सबसे तेज़ दौड़ता है। ________

   ख. तुम्हारे लिए हरी सब्जियाँ खरीदी हैं। ________

   ग. यह मनोज का ही भाई है। ________

   घ. कौन शोर मचा रहा है? ________

   ङ. जो अच्छा लगे, वह करो। ________

4. **सर्वनाम-संबंधी अशुद्धियों को दूर करके वाक्य पुनः लिखिए।**

   क. वह बहुत दिनों से दिखाई नहीं दिए। ________

   ख. ऐसा लगता है कुछ रो रहा है। ________

   ग. मुझको सभी भाषाएँ आती हैं। ________

   घ. वह खेलेगा, वह जीतेगा। ________

   ङ. मुझे सभी कार्य आपसे करने अच्छे लगते हैं। ________

5. दिए गए सर्वनाम शब्दों से वाक्य बनाइए।

क. मेरे ____________________

ख. आप ____________________

ग. उसे ____________________

घ. इनका ____________________

ङ. कौन ____________________

च. अपने-आप ____________________

6. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. सर्वनाम की परिभाषा देते हुए उसके भेदों के नाम लिखिए।

ख. पुरुषवाचक सर्वनाम के प्रमुख भेद स्पष्ट कीजिए।

ग. निश्चयवाचक तथा अनिश्चयवाचक सर्वनाम में क्या अंतर है?

कार्यकलाप

विद्यार्थी कागज़ पर दिए गए तरीके से खाने बनाएँगे तथा उनपर सर्वनाम के भेदों के नाम लिखेंगे। एक पासा उछालेंगे। पासे में जो अंक आएगा, उस अंक में लिखे सर्वनाम से संबंधित तीन वाक्य बनाएँगे।

इस प्रकार सभी विद्यार्थी बारी-बारी से इस खेल को खेलेंगे।

पुरुषवाचक सर्वनाम 1	निश्चयवाचक सर्वनाम 2	अनिश्चयवाचक सर्वनाम 3
प्रश्नवाचक सर्वनाम 4	संबंधवाचक सर्वनाम 5	निजवाचक सर्वनाम 6

जाना-समझा

संज्ञा का रूप-परिवर्तन लिंग, वचन तथा कारक के आधार पर होता है। परंतु, सर्वनाम का रूप-परिवर्तन वचन तथा कारक के आधार पर होता है। लिंग के आधार पर इसमें कोई परिवर्तन नहीं होता।

जैसे—वह पढ़ता है। वह पढ़ती है।

19 विशेषण

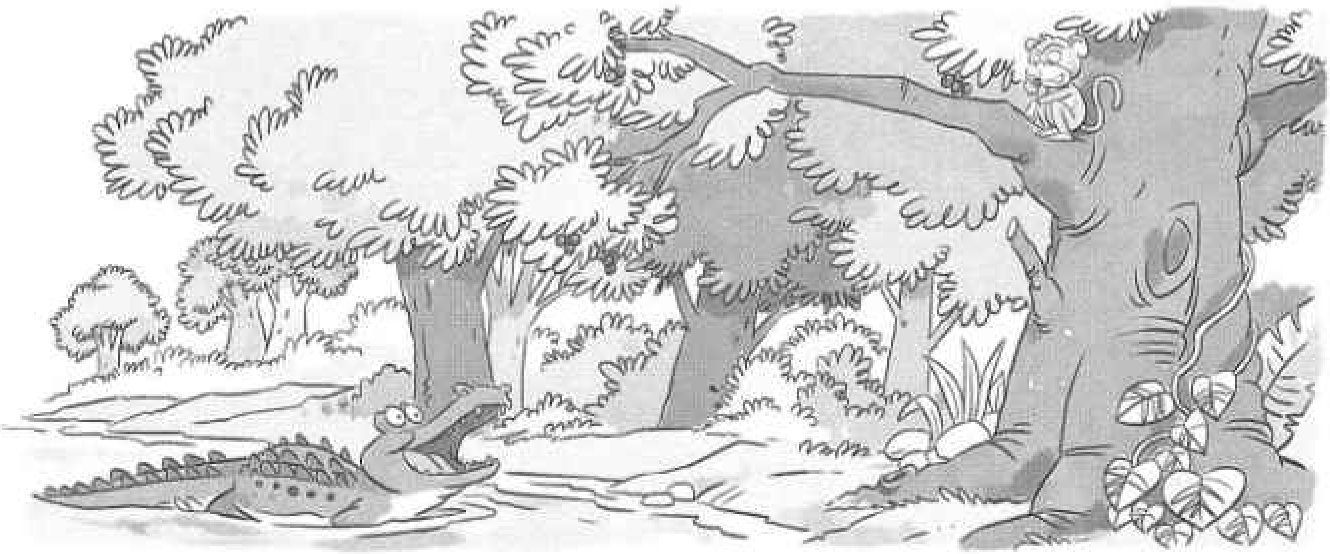

चित्र देखकर दिए गए संज्ञा शब्दों की एक विशेषता बताइए।

बंदर ________ मगरमच्छ ________ टहनी ________

पेड़ ________ फल ________ नदी ________

संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बतानेवाले शब्द विशेषण कहलाते हैं। ये शब्द जिन संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेष्य कहते हैं।

विशेषण के भेद

विशेषण के प्रमुख चार भेद हैं—गुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाणवाचक तथा सार्वनामिक।

गुणवाचक विशेषण

किसी वस्तु, व्यक्ति, पदार्थ आदि के गुण-दोष, रंग-रूप, आकार-प्रकार, अवस्था, स्वाद, स्थान, गंध, स्पर्श इत्यादि का बोध करवानेवाले शब्द गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे—

- ईमानदार व्यक्ति सदा आदर प्राप्त करता है। (गुण)
- सुनहरी मछली पानी में गोते लगा रही है। (रंग)
- छोटा लड़का मुझे विस्मय से देख रहा था। (आकार)
- स्वस्थ मनुष्य दीर्घ जीवन जीते हैं। (अवस्था)
- नींबू का खट्टा अचार स्वाद में लाजवाब होता है। (स्वाद)
- अपनी बिल्ली का कोमल स्पर्श पाकर मेरा ध्यान भंग हुआ। (स्पर्श)

सोचो और बताओ

दिए गए विशेषण शब्दों को तालिका में सही स्थान पर लिखिए।

वीर, गोरा, लंबा, वृद्धावस्था, कड़वा, मुलायम, बुद्धिमान, चौकोर, चमकीला, कमज़ोर, मीठा, गरम

गुण-दोष			अवस्था		
रंग-रूप			स्वाद/गंध		
आकार-प्रकार			स्पर्श		

संख्यावाचक विशेषण

जिन विशेषण शब्दों से वाक्य में प्रयोग की गई संज्ञा या सर्वनाम की संख्या-संबंधी विशेषता, अर्थात उसकी संख्या, क्रम, आवृत्ति, समुदाय, प्रत्येक इत्यादि का बोध होता है, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं; जैसे—

- पचास रुपये में अमरूद खरीदे। (संख्या)
- आज मेरे मम्मी-पापा ने विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ मनाई। (क्रम)
- मेरे पास तुमसे दुगुना धन है। (आवृत्ति)
- दोनों भाई पढ़ने में होशियार हैं। (समुदाय)
- हम प्रतिवर्ष घूमने जाते हैं। (प्रत्येक)

संख्यावाचक विशेषण के भेद

संख्यावाचक विशेषण के दो भेद हैं—निश्चित संख्यावाचक तथा अनिश्चित संख्यावाचक।

निश्चित संख्यावाचक विशेषण ऐसे विशेषण शब्द, जो वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा की निश्चित संख्या का बोध करवाते हैं, निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे—

- डाकघर के बाहर एक लेटर बॉक्स लगा है।
- हमारा घर दोमंज़िला है।
- तिरंगे में तीन रंग हैं।
- वर्ष में तीन सौ पैंसठ दिन होते हैं।

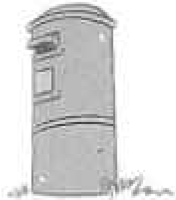

अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण ऐसे विशेषण शब्द, जो वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा की निश्चित संख्या का बोध नहीं करवाते, अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे—

- सारे बच्चे प्रार्थनाकक्ष में पहुँच गए।
- वर्षा के कारण कुछ सड़कें पानी में डूब गईं।
- शाम होते ही सब लोग घूमने निकल गए।
- मेरे जन्मदिन पर बहुत मेहमान आए थे।

परिमाणवाचक विशेषण

संज्ञा की नापतौल-संबंधी विशेषता का बोध करवानेवाले विशेषण परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं;

जैसे—

- बाज़ार से एक किलोग्राम दाल ले आना।
- तुम प्रतिदिन आधा लीटर दूध ज़रूर पीना।
- मैंने आठ ग्राम सोना खरीदा है।
- मिट्टी पर भी थोड़ा पानी छिड़क दो।

परिमाणवाचक विशेषण के भेद

परिमाणवाचक विशेषण के प्रमुख दो भेद हैं—निश्चित परिमाणवाचक विशेषण तथा अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण।

निश्चित परिमाणवाचक विशेषण ऐसे विशेषण शब्द, जो वस्तु की नापतौल का निश्चित ज्ञान करवाते हैं, उन्हें निश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे—

- सूजी में एक चम्मच चीनी डालना।
- बाज़ार से दो किलोग्राम मिठाई ले आना।
- दादाजी ने अभी एक एकड़ ज़मीन खरीदी है।
- मैंने दो सौ पचास ग्राम अदरक लिया है।

अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण ऐसे विशेषण शब्द, जो वस्तु की नापतौल का निश्चित ज्ञान नहीं करवाते हैं, उन्हें अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे—

- पूरी बनाने के लिए थोड़ा आटा गूँथ लो।
- कुछ धन तो उसे भी देना चाहिए था।
- शादी में बहुत-सारी मिठाई बच गई।
- मैंने कहानी का पूरा आनंद लिया।

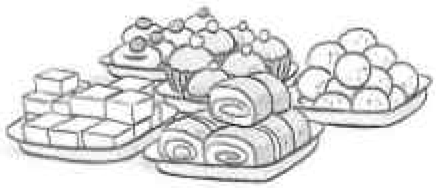

विशेष परिमाणवाचक विशेषण का प्रयोग भाववाचक, द्रव्यवाचक तथा समूहवाचक संज्ञाओं के साथ होता है।

सोचो और बताओ

निर्देशानुसार रिक्त स्थानों को भरिए।

- मेरा दुपट्टा ______________ लंबा है। (निश्चित परिमाणवाचक)
- भूखे को ______________ भोजन खिला दो। (अनिश्चित परिमाणवाचक)

सार्वनामिक विशेषण

सर्वनाम संज्ञा के स्थान पर आते हैं, परंतु जो सर्वनाम संज्ञा से पहले लगकर उनकी विशेषता बताते हैं, उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। ऐसे विशेषणों में सर्वनाम विशेषण के रूप में कार्य करते हैं; जैसे—

- यह घोड़ा अड़ियल है।

- कुछ प्रश्न मुझे समझ नहीं आए।
- यह गेट मोहल्ले के लोगों ने मिलकर लगाया है।
- इस कमरे में बहुत सीलन है।

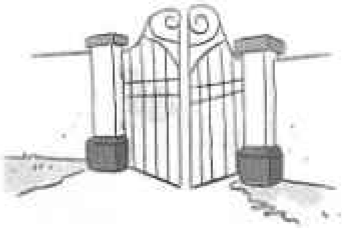

विशेषण की तुलनात्मक अवस्थाएँ

विशेषण की तीन तुलनात्मक अवस्थाएँ हैं—मूलावस्था, उत्तरावस्था तथा उत्तमावस्था।

मूलावस्था सामान्य कथन होता है। इसमें एक व्यक्ति की विशेषता बताई जाती है; जैसे—अरुण अच्छा तैराक है।

उत्तरावस्था इसमें दो व्यक्तियों में तुलना होती है। उनमें से किसी एक को श्रेष्ठ बताया जाता है; जैसे—अरुण सुमित से अच्छा तैराक है।

उत्तमावस्था इसमें दो से अधिक व्यक्तियों या वस्तुओं में तुलना होती है। इसमें किसी एक को सबसे श्रेष्ठ बताया जाता है; जैसे—अरुण सुमित, मयंक और अभिजीत से अच्छा तैराक है।

> **विशेष** उत्तरावस्था बनाने के लिए 'तर' प्रत्यय तथा उत्तमावस्था बनाने के लिए 'तम' प्रत्यय लगाया जाता है।

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
योग्य	योग्यतर	योग्यतम
विशाल	विशालतर	विशालतम
प्राचीन	प्राचीनतर	प्राचीनतम
कठोर	कठोरतर	कठोरतम

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
लघु	लघुतर	लघुतम
उच्च	उच्चतर	उच्चतम
नवीन	नवीनतर	नवीनतम
अधिक	अधिकतर	अधिकतम

विशेषण शब्दों का निर्माण

विशेषण शब्दों का निर्माण संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया तथा अव्यय शब्दों में प्रत्यय जोड़कर किया जाता है।

संज्ञा शब्दों से विशेषणों का निर्माण

'ई' प्रत्यय लगाकर

संज्ञा	विशेषण	संज्ञा	विशेषण
अनुभव	अनुभवी	दुख	दुखी
ढोंग	ढोंगी	धन	धनी
लोभ	लोभी	दान	दानी
दोष	दोषी	सुख	सुखी

'इक' प्रत्यय लगाकर

संज्ञा	विशेषण	संज्ञा	विशेषण
वेद	वैदिक	अर्थ	आर्थिक
दिन	दैनिक	अंश	आंशिक
शरीर	शारीरिक	सप्ताह	साप्ताहिक
परिवार	पारिवारिक	मास	मासिक
नीति	नैतिक	इतिहास	ऐतिहासिक

'इत' प्रत्यय लगाकर

आनंद	आनंदित	सम्मान	सम्मानित
शिक्षा	शिक्षित	अंक	अंकित
तरंग	तरंगित	विकास	विकसित
चित्र	चित्रित	पीड़ा	पीड़ित

'ईन' प्रत्यय लगाकर

रंग	रंगीन	कुल	कुलीन
ग्राम	ग्रामीण	नमक	नमकीन
नव	नवीन	शौक	शौकीन

'ईय' प्रत्यय लगाकर

शास्त्र	शास्त्रीय	राष्ट्र	राष्ट्रीय
स्मरण	स्मरणीय	कथन	कथनीय
नगर	नगरीय	स्थान	स्थानीय

'ईला' प्रत्यय लगाकर

चमक	चमकीला	रंग	रंगीला
बर्फ़	बर्फ़ीला	खर्च	खर्चीला
जहर	जहरीला	सुर	सुरीला

'आलु' प्रत्यय लगाकर

कृपा	कृपालु	दया	दयालु
झगड़ा	झगड़ालु	श्रद्धा	श्रद्धालु

'वान'/'मान' प्रत्यय लगाकर

धन	धनवान	श्री	श्रीमान
गाड़ी	गाड़ीवान	आयुष	आयुष्मान
बल	बलवान	शक्ति	शक्तिमान

'वती'/'मती' प्रत्यय लगाकर

गुण	गुणवती	बुद्धि	बुद्धिमती
सौभाग्य	सौभाग्यवती	श्री	श्रीमती
रूप	रूपवती	आयुष	आयुष्मती

'आ' प्रत्यय लगाकर

प्यार	प्यारा	प्यास	प्यासा
भूख	भूखा	हार	हारा

'वाला' प्रत्यय लगाकर

घर	घरवाला	दूध	दूधवाला
गाँव	गाँववाला	चाय	चायवाला

'एरा' तथा 'ऐला' प्रत्यय लगाकर

मामा	ममेरा	विष	विषैला
चाचा	चचेरा	मौसा	मौसेरा

'इम' तथा 'इल' प्रत्यय लगाकर

अंत	अंतिम	स्नेह	स्नेहिल
स्वर्ण	स्वर्णिम	पंक	पंकिल

सर्वनाम शब्दों से विशेषण बनाना

एरा	मैं	मेरा	तुम	तेरा
आरा	तुम	तुम्हारा	हम	हमारा
सा	वह	वैसा	जो	जैसा

क्रिया शब्दों से विशेषण बनाना

अक्कड़	भूलना	भुलक्कड़	घूमना	घुमक्कड़
आऊ	बेचना	बिकाऊ	कमाना	कमाऊ
आकू	लड़ना	लड़ाकू	पढ़ना	पढ़ाकू
इयल	अड़ना	अड़ियल	सड़ना	सड़ियल
इत	पठ	पठित	लिख	लिखित

अव्यय शब्दों से विशेषण बनाना

ई	ऊपर	ऊपरी	भीतर	भीतरी
ला	आगे	अगला	नीचे	निचला

हमने जाना

- विशेषण शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं। जिस संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेषता बताई जाती है, उसे विशेष्य कहते हैं।
- विशेषण के प्रमुख चार भेद हैं—गुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाणवाचक तथा सार्वनामिक।
- विशेषण की तीन तुलनात्मक अवस्थाएँ हैं—मूलावस्था, उत्तरावस्था तथा उत्तमावस्था।
- विशेषण शब्द संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया तथा अव्यय शब्दों में प्रत्यय लगाकर बनाए जाते हैं।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. 'गाड़ी का सारा पेट्रोल खत्म हो गया।' इस वाक्य में प्रयुक्त विशेषण कौन-सा है?

निश्चित परिमाणवाचक   अनिश्चित परिमाणवाचक   अनिश्चित संख्यावाचक

ख. 'तुम्हारे लिए सुनहरा अवसर है।' इस वाक्य में कौन-सा विशेषण है?

सार्वनामिक विशेषण   संख्यावाचक विशेषण   गुणवाचक विशेषण

2. वाक्य में आए संज्ञा शब्द के लिए एक विशेषण लिखिए।

क. मेरी उँगलियाँ दर्द कर रही हैं। ____सारी उँगलियाँ____

ख. उसकी वाणी सुनकर मेरा क्रोध जाता रहा। ____________

ग. मैंने पानी से अपने पैर धोए। ____________

घ. सदा व्यक्तियों का आदर होता है। ____________

ङ. वह संदूक को एक इंच हिला नहीं पाया। ____________

च. खाना खाकर मज़ा आ गया। ____________

3. उचित विशेषण शब्दों का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।

क. ____________ किसान सुबह उठते ही खेतों पर चला गया। (गुणवाचक विशेषण)

ख. ____________ करेला मुझे बिलकुल अच्छा नहीं लगता। (गुणवाचक विशेषण)

ग. धमाके की आवाज़ सुनकर पेड़ पर बैठी ____________ चिड़ियाँ उड़ गईं। (संख्यावाचक विशेषण)

घ. दूध में __________ चीनी भी डाल दो। (परिमाणवाचक विशेषण)

ङ. __________ भाई पढ़ने में बहुत होशियार है। (सार्वनामिक विशेषण)

4. **रंगीन शब्द पहचानकर विशेषण के भेद का नाम लिखिए।**

क. सूर्य के तेज़ प्रकाश से मेरी नींद खुल गई। __________

ख. मेरे विचार उसे पसंद नहीं आते। __________

ग. उसके पास मुझसे पाँच गुना धन है। __________

घ. पीने के लिए केवल एक लीटर पानी बचा है। __________

ङ. कॉपी पर आड़ी-तिरछी रेखाएँ मत खींचो। __________

5. **दिए गए शब्दों से विशेषण बनाइए।**

क. सप्ताह __________ **ख.** श्रद्धा __________

ग. आनंद __________ **घ.** प्यास __________

ङ. लोभ __________ **च.** विष __________

6. **प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

क. विशेषण किसे कहते हैं? विशेषण के प्रमुख भेद बताइए।

ख. संख्यावाचक विशेषण तथा परिमाणवाचक विशेषण में क्या अंतर है?

ग. सर्वनाम तथा सार्वनामिक विशेषण में क्या अंतर है?

कार्यकलाप

ऐसे शब्द जो विशेषणों की विशेषता बताते हैं, उन्हें प्रविशेषण कहते हैं।

जैसे—मैंने चमचमाती नई कार खरीदी।

चमचमाती ↓ प्रविशेषण, नई ↓ विशेषण, कार ↓ संज्ञा

प्रविशेषणयुक्त कुछ वाक्य बनाइए।

जाना-समझा

कई बार विशेषण शब्द संज्ञा के रूप में भी प्रयोग होते हैं।

जैसे—वीरों की देश पूजा करता है। वीर विशेषण है, परंतु यहाँ संज्ञा के रूप में प्रयोग हुआ है।

20 क्रिया

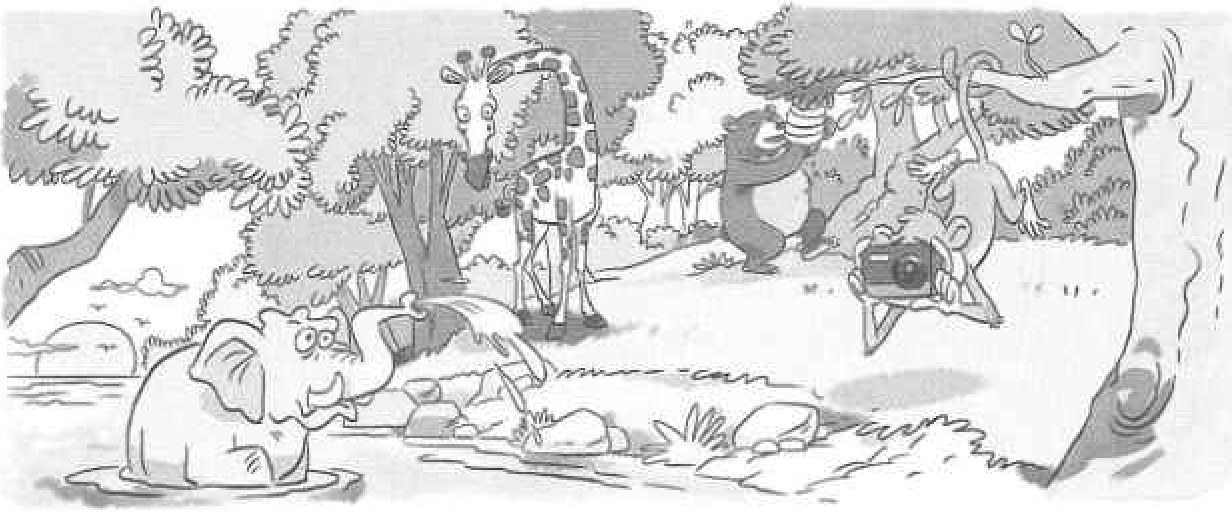

चित्र देखकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- नदी और सूर्य क्या कर रहे हैं? ______________________
- हाथी क्या कर रहा है? ______________________
- भालू क्या कर रहा है? ______________________
- जिराफ़ क्या कर रहा है? ______________________
- बंदर क्या कर रहा है? ______________________

इस चित्र में नदी बह रही है तथा सूर्य चमक रहा है। हाथी नहा रहा है, भालू खा रहा है, जिराफ़ देख रहा है और बंदर फोटो खींच रहा है। कुछ काम अपने-आप हो रहे हैं तथा कुछ किए जा रहे हैं। बहने तथा चमकने का कार्य अपने-आप हो रहा है। नहाने, खाने, देखने तथा फोटो खींचने का काम किया जा रहा है। जो शब्द किसी काम के करने या होने को दर्शाते हैं, उन्हें क्रिया कहते हैं।

किसी काम के करने या होने का बोध करवानेवाले शब्द क्रिया **कहलाते हैं।**

एक वाक्य में क्रिया का महत्वपूर्ण स्थान होता है। क्रिया के द्वारा ही वाक्य पूर्ण होता है।

धातु क्रिया का मूलरूप धातु कहलाता है। धातु में 'ना' प्रत्यय जोड़ने पर क्रिया का सामान्य रूप बनता है; जैसे—

धातु	पढ़	लिख	सो	खा	जा	आ	पी	हँस	रो
क्रिया	पढ़ना	लिखना	सोना	खाना	जाना	आना	पीना	हँसना	रोना

क्रिया के भेद के आधार

क्रिया के भेद दो आधार पर किए जाते हैं—1. कर्म के आधार पर 2. संरचना के आधार पर।

कर्म के आधार पर क्रिया के भेद

कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद हैं—सकर्मक क्रिया और अकर्मक क्रिया।

सकर्मक क्रिया सकर्मक क्रिया, अर्थात कर्म के साथ जुड़ी क्रिया। जिस क्रिया का कर्म होता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। इसमें क्रिया का अर्थ कर्म के द्वारा स्पष्ट होता है; जैसे—

- डॉक्टर ऑपरेशन कर रहे हैं।
- पक्षियों को दाना डाल दो।
- पिताजी ने मिस्त्री को बुलाया।
- कार में रोगी को बैठाया।

वाक्य में कर्म की पहचान के लिए क्रिया के साथ क्या, किसे अथवा किसको लगाकर प्रश्न करना चाहिए। जो उत्तर प्राप्त होगा, वही कर्म होगा। जिस क्रिया में कर्म होगा, वह सकर्मक क्रिया होगी।

- नर्स दवाई दे रही है।
  प्रश्न—क्या दे रही है? उत्तर—दवाई (कर्म) क्रिया—सकर्मक
- शिक्षक ने पिताजी को बुलाया।
  प्रश्न—किसे बुलाया? अथवा किसको बुलाया? उत्तर—पिताजी को (कर्म) क्रिया—सकर्मक

अकर्मक क्रिया ऐसी क्रिया, जिसका कोई कर्म नहीं होता, अकर्मक क्रिया कहलाती है। ऐसी क्रियाओं में बिना कर्म के भी क्रिया का अर्थ स्पष्ट हो जाता है; जैसे—

- बच्ची उछलने लगी।
- माँ ने सुलाया।
- सबने मिलकर बजाया।
- माली ने लगाया।
- बढ़ई ने काटा।
- दादाजी ने उठाया।

अकर्मक क्रियाओं की पहचान के लिए यदि इनके साथ क्या, किसे अथवा किसको लगाकर प्रश्न करें, तो कोई उत्तर प्राप्त नहीं होगा; जैसे—

- मानसी डर गई।
  प्रश्न—क्या डर गई? उत्तर—? क्रिया—अकर्मक
  किसे डर गई? उत्तर—?
  किसको डर गई? उत्तर—?

सोचो और बताओ

- बच्चे भाग गए। अकर्मक सकर्मक
- कड़ी मेहनत से बनाया। सकर्मक अकर्मक
- अथक परिश्रम से चित्रकथा तैयार की। अकर्मक सकर्मक

सकर्मक क्रिया के भेद

सकर्मक क्रिया के प्रमुख दो भेद हैं—एककर्मक क्रिया और द्विकर्मक क्रिया।

एककर्मक क्रिया जिस क्रिया का एक कर्म होता है, उसे एककर्मक क्रिया कहते हैं। एककर्मक क्रिया की पहचान के लिए क्रिया के साथ 'क्या' लगाकर प्रश्न करना चाहिए; जैसे—

- मानसी कार चला रही है।
  प्रश्न—क्या चला रही है? उत्तर—कार एककर्मक क्रिया
- फूलों की सुगंध अच्छी है।
  प्रश्न—क्या अच्छी है? उत्तर—सुगंध एककर्मक क्रिया

द्विकर्मक क्रिया जिस क्रिया के दो कर्म होते हैं, उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं। द्विकर्मक क्रिया की पहचान करने के लिए क्रिया के साथ 'क्या' तथा 'किसे' दोनों शब्द लगाकर प्रश्न करना चाहिए। दोनों उत्तर प्राप्त होने पर क्रिया द्विकर्मक होगी। एक उत्तर मिलने पर क्रिया एककर्मक होगी; जैसे—

- माँ ने खाना खिलाया।
  प्रश्न—क्या खिलाया? उत्तर—खाना किसे खिलाया? उत्तर—?
  एक उत्तर मिलने के कारण यह क्रिया एककर्मक है।
- माँ ने बच्चे को खाना खिलाया।
  प्रश्न—क्या खिलाया? उत्तर—खाना किसे खिलाया? उत्तर—बच्चे को
  दोनों उत्तर मिलने के कारण यह क्रिया द्विकर्मक है।

सोचो और बताओ

निम्नलिखित क्रियाएँ एककर्मक हैं या द्विकर्मक?

- हंस ने अपने पंख फैलाए। ____________
- राष्ट्रपति ने भाषण दिया। ____________
- अंतरा ने अतीश को फूलों का गुलदस्ता दिया। ____________
- पिताजी ने महक को पिल्ला लाकर दिया। ____________

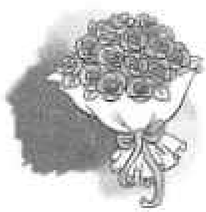

संरचना के आधार पर क्रिया के भेद

संरचना के आधार पर क्रिया के पाँच भेद हैं—

1. सामान्य क्रिया 2. संयुक्त क्रिया 3. पूर्वकालिक क्रिया 4. प्रेरणार्थक क्रिया 5. नामधातु क्रिया।

1. सामान्य क्रिया

जब वाक्य में एक ही क्रिया शब्द का प्रयोग हो, तब उसे **सामान्य क्रिया** कहते हैं; जैसे—

- बंदर पेड़ से कूदा।
- सूरज ने ढोल बजाया।
- कुम्हार ने घड़ा बनाया।
- हाथी ने गन्ना खाया।

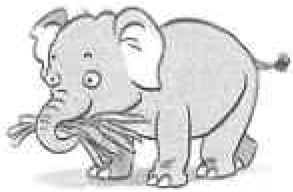

2. संयुक्त क्रिया

संयुक्त क्रिया वह क्रिया होती है, जो दो या दो से अधिक धातुओं से बनती है। सरल शब्दों में हम कह सकते हैं कि इसमें दो या अधिक क्रिया शब्द प्रयोग होते हैं; जैसे—

- मैं आम खा रहा हूँ।
- घोड़ा दौड़ रहा है।
- अर्शिता लिख चुकी है।
- बालिका हँस पड़ी।

3. पूर्वकालिक क्रिया

वाक्य में जो क्रिया मुख्य क्रिया से पहले आती है, उसे पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं। पूर्वकालिक क्रियाएँ मूल धातु के साथ 'कर' लगाकर बनाई जाती हैं; जैसे—

- उसने बहुत सोचकर जवाब दिया।
- उसने तैरकर नदी पार की।
- घड़ा धोकर पानी भरा।
- दवाई खाकर सो गया।

उपर्युक्त वाक्यों में सोचकर, तैरकर, धोकर तथा खाकर क्रियाएँ दिया, पार की, भरा, सो गया आदि क्रियाओं से पहले आई हैं। ये पूर्वकालिक क्रियाएँ हैं।

4. प्रेरणार्थक क्रिया

प्रेरणार्थक क्रिया वह होती है, जो किसी को कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करे। प्रेरणार्थक क्रिया में कर्ता स्वयं कार्य नहीं करता, बल्कि कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करता है; जैसे—

- मालिक कारीगर से सामान उठवाता है।
- शिक्षिका छात्रों से चित्र बनवाती हैं।
- दादाजी माली से बगीचे में पानी डलवाते हैं।
- माँ राधिका से सब्ज़ी मँगवाती हैं।

प्रेरणार्थक क्रिया के भेद

प्रेरणार्थक क्रिया के मुख्यतः दो भेद हैं—प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया तथा द्‌वितीय प्रेरणार्थक क्रिया।

प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया जब कर्ता स्वयं को कार्य करने की प्रेरणा देता है, तब प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया होती है; जैसे—

- सोनम कुत्ते को सैर कराती है।
- माँ गुड़िया को खीर खिलाती है।
- मानवी अनिरुद्ध को कार दिलाती है।
- मोना सड़क से छिलका उठाती है।

द्‌वितीय प्रेरणार्थक क्रिया जब कर्ता किसी अन्य को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है; जैसे—

- सोनम नौकर से कुत्ते को सैर करवाती है।
- माँ नौकरानी से गुड़िया को खीर खिलवाती है।
- मानवी माया से अनिरुद्ध को कार दिलवाती है।
- मोना भाई से छिलका उठवाती है।

यहाँ कार्य कर्ता, अर्थात **सोनम**, **माँ**, **मानवी** या **मोना** द्वारा नहीं किया गया, बल्कि **नौकर**, **नौकरानी**, **माया** तथा **भाई** द्वारा किया गया।

सोचो और बताओ

प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया को द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया में बदलिए।

- माँ बच्चे को सुलाती है। ______________________
- रश्मि भारती को पढ़ाती है। ______________________

प्रेरणार्थक क्रियाओं के कुछ उदाहरण

प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया 'ना' लगाकर तथा द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया 'वाना' लगाकर बनाई जाती है।

क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया	द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया
उठना	उठाना	उठवाना
चलना	चलाना	चलवाना
जीतना	जिताना	जितवाना
माँगना	मँगाना	मँगवाना
देना	दिलाना	दिलवाना
हारना	हराना	हरवाना
पीना	पिलाना	पिलवाना
पढ़ना	पढ़ाना	पढ़वाना
बनना	बनाना	बनवाना

5. नामधातु क्रिया

ऐसी क्रिया, जो संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण अथवा अनुकरणवाची शब्दों से बनी होती है, नामधातु क्रिया कहलाती है; जैसे—

हाथ	हथियाना	टिम-टिम	टिमटिमाना
अपना	अपनाना	हिन-हिन	हिनहिनाना
लालच	ललचाना	टन-टन	टनटनाना
रंग	रँगना	थर-थर	थरथराना
बात	बतियाना	बड़-बड़	बड़बड़ाना
टक्कर	टकराना	थप-थप	थपथपाना

हमने जाना

- क्रिया शब्द किसी काम के करने या होने का बोध करवाते हैं।
- कर्म के आधार पर क्रिया सकर्मक या अकर्मक होती है।
- सकर्मक क्रिया के दो भेद हैं—एककर्मक क्रिया तथा द्विकर्मक क्रिया। एककर्मक क्रिया में एक कर्म होता है तथा द्विकर्मक क्रिया में दो कर्म होते हैं।
- संरचना के आधार पर क्रिया के पाँच भेद हैं—सामान्य क्रिया, संयुक्त क्रिया, पूर्वकालिक क्रिया, प्रेरणार्थक क्रिया तथा नामधातु क्रिया।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. मुख्य क्रिया से पहले आनेवाली क्रिया कौन-सी होती है?

संयुक्त क्रिया | प्रेरणार्थक क्रिया | पूर्वकालिक क्रिया

ख. संज्ञा शब्दों से बनी क्रिया कौन-सी होती है?

सामान्य क्रिया | नामधातु क्रिया | संयुक्त क्रिया

2. क्रिया को पहचानकर उनके आगे सकर्मक या अकर्मक लिखिए।

क. विद्यार्थी ने पाठ पढ़ा। ______

ख. मोना लिख रही है। ______

ग. शुभा ने ढोल बजाया। ______

घ. आराधना कविता लिखती है। ______

ङ. धोबी धो रहा है। ______

3. दी गई सामान्य क्रिया को संयुक्त क्रिया में बदलिए।

क. एकाएक तेज़ वर्षा हुई। एकाएक तेज़ वर्षा होने लगी।

ख. मैंने भरपेट खाना खाया। ______

ग. वह मसूरी से कल लौटेगा। ______

घ. मैंने मैदान में कार चलाई। ______

ङ. बोतल में पानी भरा। ______

4. **पूर्वकालिक क्रिया ढूँढ़कर लिखिए।**

क. बच्चा थककर सो गया। ____________________

ख. पिताजी गुस्से से तमतमाकर बोले। ____________________

ग. वह दौड़कर माँ से लिपट गया। ____________________

घ. वह अवकाश लेकर घूमने गया। ____________________

ङ. बिस्तर बिछाकर बच्चे को सुलाओ। ____________________

5. **द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया का प्रयोग कर लिखिए।**

क. पिताजी कार साफ़ कराते हैं। ____________________

ख. कोकिला सब्ज़ी बनाती है। ____________________

ग. दुकानदार मशीन ठीक कराता है। ____________________

घ. शिक्षिका बच्चों को पढ़ाती है। ____________________

ङ. अरुण मेज़ से कंप्यूटर उठाता है। ____________________

6. नामधातु क्रियाएँ बनाइए।

क. अपना ____________________ **ख.** लालच ____________________

ग. खट-खट ____________________ **घ.** हाथ ____________________

ङ. बात ____________________ च. टक्कर ____________________

7. **प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

क. क्रिया की परिभाषा देते हुए कर्म के आधार पर क्रिया के भेद लिखिए।

ख. संयुक्त क्रिया तथा पूर्वकालिक क्रिया में क्या अंतर है?

ग. नामधातु क्रिया किससे बनती है?

घ. सकर्मक क्रिया की पहचान कैसे कर सकते हैं?

कार्यकलाप

विद्यार्थी किसी पुरानी पत्रिका से कोई चित्र काटकर चिपकाएँ। सभी प्रकार के क्रिया रूपों का प्रयोग करते हुए उस चित्र का वर्णन करें।

जाना-समझा

क्रिया में लिंग, वचन और काल के कारण परिवर्तन होता है।

आओ दोहराएँ 2 (पाठ 11 से 20 तक)

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. कौन-सा शब्द नित्य स्त्रीलिंग है?

चील　　　　　कछुआ　　　　　भालू

ख. सदा बहुवचन में प्रयुक्त होनेवाला शब्द कौन-सा है?

दाम　　　　　तेल　　　　　सत्य

2. दिए गए उपसर्गों का प्रयोग कर एक-एक शब्द बनाइए।

क. परा ______　　　**ख.** बद ______

ग. नि ______　　　**घ.** प्रति ______

3. मूल शब्द तथा प्रत्यय अलग करके लिखिए।

क. थकान ______ ______　　　**ख.** कड़वाहट ______ ______

ग. चित्रकार ______ ______　　　**घ.** ऊँचाई ______ ______

4. समास-विग्रह कीजिए।

क. त्रिकोण ______　　　**ख.** नीलगगन ______

ग. सेनाध्यक्ष ______　　　**घ.** भरपेट ______

5. भाववाचक संज्ञा बनाइए।

क. सज्जन ______　　　**ख.** पराया ______

ग. मीठा ______　　　**घ.** लंबा ______

6. कारक को रेखांकित कर कारक का नाम लिखिए।

क. ड्राइवर गाड़ी से कूद पड़ा। ______

ख. चाकू से रस्सी काट दो। ______

7. दिए गए सर्वनाम शब्दों से वाक्य बनाइए।

क. मेरे ______

ख. कौन ______

8. दिए गए शब्दों से विशेषण बनाइए।

क. दिन ______　　　**ख.** इतिहास ______

ग. कुल ______　　　**घ.** ग्राम ______

9. नामधातु क्रियाएँ बनाइए।

क. हाथ ______　　　**ख.** टक्कर ______

ग. टिम-टिम ______　　　**घ.** अपना ______

10. पूर्वकालिक क्रिया छाँटकर लिखिए।

क. वह रूठकर चला गया। ______

ख. गुब्बारे में पानी भरकर मुझपर फेंका। ______

11. विशेषण रेखांकित कर उसका भेद बताइए।

क. कार में थोड़ा पेट्रोल रह गया है। ______

ख. तुम्हारी कुछ पुस्तकें मेरे पास हैं। ______

12. सर्वनाम-संबंधी अशुद्धियों को दूर करके लिखिए।

क. कुछ के रोने की आवाज़ आ रही है। ______

ख. वे हिंदी भाषा का विद्वान है। ______

21 काल

कल (बीता हुआ)

आज

कल (आनेवाला)

चित्र देखकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- मुक्ता कल क्या कर रही थी? ______________________
- मुक्ता आज क्या कर रही है? ______________________
- मुक्ता कल क्या करेगी? ______________________

कर रही थी, कर रही है, करेगी आदि क्रियाएँ तीन विभिन्न समय अंतराल के बारे में बता रही हैं। एक समय बीत चुका है, दूसरा समय चल रहा है और तीसरा समय आनेवाला है। क्रिया के जिस रूप से उसके होने का समय ज्ञात हो, उसे काल कहते हैं। काल से ही कार्य की पूर्णता तथा अपूर्णता का पता चलता है।

क्रिया के होने का समय बतानेवाला क्रिया का रूप काल **कहलाता है।**

काल के भेद

काल के मुख्यतः तीन भेद हैं—भूतकाल, वर्तमानकाल तथा भविष्यतकाल।

भूतकाल

भूतकाल, अर्थात हमारा अतीत, हमारा बीता हुआ समय। वह समय जो बीत चुका है। क्रिया का वह रूप, जो कार्य के बीते हुए समय में होने का बोध करवाए, उसे भूतकाल कहते हैं; जैसे—

- पंडित जवाहरलाल नेहरू स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे।
- गरमी की छुट्टियों में मेरा मित्र हमारे घर आया था।

उपर्युक्त वाक्यों में प्रयोग किए गए क्रिया शब्दों **थे** एवं **आया था** से पता चलता है कि क्रिया बीते हुए समय में हो चुकी है।

भूतकाल के भेद

भूतकाल के प्रमुख छह भेद हैं—1. सामान्य भूतकाल 2. आसन्न भूतकाल 3. पूर्ण भूतकाल 4. अपूर्ण भूतकाल 5. संदिग्ध भूतकाल 6. हेतुहेतुमद् भूतकाल।

1. सामान्य भूतकाल

सामान्य भूतकाल की क्रिया से पता चलता है कि कार्य बीते हुए समय में पूरा हुआ है। परंतु, इससे निश्चित समय का पता नहीं चलता; जैसे—

- माँ ने मौसी को पत्र लिखा।
- बच्चे ने साइकिल उठाया।
- दादाजी ने दरवाज़ा बंद किया।
- बच्चे ने सारा सामान बस्ते से बाहर निकाला।

2. आसन्न भूतकाल

आसन्न का अर्थ होता है—निकट या पास। क्रिया के जिस रूप से ज्ञात हो कि क्रिया अभी कुछ समय पहले ही पूरी हुई है, उसे **आसन्न भूतकाल** कहते हैं; जैसे—

- मैंने विद्यालय से आकर अभी-अभी खाना खाया है।
- मैं अभी बाज़ार से आया हूँ।
- सबने पुस्तक का एक पाठ पढ़ लिया है।
- मेरे भाई ने गृहकार्य कर लिया है।

3. पूर्ण भूतकाल

क्रिया के जिस रूप से पता चले कि कार्य बहुत समय पहले ही समाप्त हो चुका है, उसे पूर्ण भूतकाल कहते हैं; जैसे—

- मेरा जन्म इसी घर में **हुआ था**।
- मेरी चित्रकथाओं में बहुत रुचि **थी**।
- हिरण ने खूब हरी घास **खाई थी**।
- चित्रकला प्रतियोगिता में मुझे कई इनाम **मिले थे**।

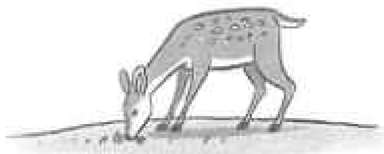

4. अपूर्ण भूतकाल

क्रिया का वह रूप, जिससे पता चले कि कार्य भूतकाल में आरंभ हुआ था। परंतु, उससे यह स्पष्ट न हो कि वह कार्य पूरा हुआ है अथवा नहीं, उसे **अपूर्ण भूतकाल** कहते हैं; जैसे—

- बूँदा-बाँदी हो रही थी।
- मान्या झूला झूल रही थी।
- परीक्षा-परिणाम घोषित हो रहा था।
- गगन नई कार खरीद रहा था।

5. संदिग्ध भूतकाल

क्रिया का वह रूप, जिससे भूतकाल का बोध तो हो, परंतु कार्य के होने में संदेह हो, उसे संदिग्ध भूतकाल कहते हैं; जैसे—

- पिताजी कार्यालय से लौट आए होंगे।
- इस समस्या का कोई समाधान निकल आया होगा।
- पहाड़ों पर बर्फ़ पिघल चुकी होगी।
- मेरा नया उपन्यास छप गया होगा।

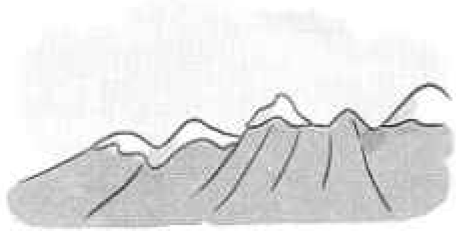

6. हेतुहेतुमद् भूतकाल

क्रिया का वह रूप, जिससे भूतकाल की किसी क्रिया का होना भूतकाल की ही अन्य किसी क्रिया पर निर्भर करता है, हेतुहेतुमद् भूतकाल कहलाता है; जैसे—

- यदि हम पैसे लाए होते, तो ये स्वेटर खरीद लेते।
- यदि बारिश हुई होती, तो हम भीग जाते।
- यदि मैं शिमला आती, तो तुमसे भी ज़रूर मिलती।
- यदि गाड़ी समय पर मिलती, तो हम जल्दी पहुँच जाते।

उपर्युक्त वाक्यों से पता चलता है कि यदि भूतकाल में एक क्रिया पूरी हुई होती, तो भूतकाल की दूसरी क्रिया भी पूरी हो जाती।

सोचो और बताओ

भूतकाल का भेद पहचानकर नाम लिखिए।

- बच्चे कविता याद कर रहे थे। ____________________
- किसानों ने खेत में हल चलाया होगा। ____________________

वर्तमानकाल

क्रिया के जिस रूप से उसके वर्तमान समय, अर्थात चल रहे समय में होने का पता चले, उसे वर्तमानकाल कहते हैं; जैसे—

- हिरण घास खा रहा है।
- बंदर पेड़ से फल तोड़ रहा है।

वर्तमानकाल के भेद

वर्तमानकाल के तीन भेद हैं—1. सामान्य वर्तमानकाल 2. अपूर्ण वर्तमानकाल 3. संदिग्ध वर्तमानकाल।

1. सामान्य वर्तमानकाल

क्रिया के जिस रूप से उसके सामान्य रूप से वर्तमानकाल में होने का पता चलता है, उसे सामान्य वर्तमानकाल कहते हैं। इसमें क्रिया के होने की विशेष अवस्था का बोध नहीं होता; जैसे—

- बच्चा साइकिल चलाता है।
- माँ कचौड़ी तलती है।
- गुब्बारेवाला गुब्बारे बेचता है।
- हाथी गन्ना खाता है।

2. अपूर्ण वर्तमानकाल

क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया अभी चल रही है, उसे अपूर्ण वर्तमानकाल कहते हैं। अपूर्ण वर्तमानकाल बताता है कि क्रिया अभी समाप्त नहीं हुई है; जैसे—

- किसान खेतों में धान रोप रहे हैं।
- मधुमक्खियाँ छत्ते पर भिनभिना रही हैं।
- कोयल मधुर स्वर में गा रही है।
- बच्चे फुटबॉल खेल रहे हैं।

3. संदिग्ध वर्तमानकाल

क्रिया के जिस रूप से क्रिया के वर्तमानकाल में पूरा होने में संदेह हो, उसे संदिग्ध वर्तमानकाल कहते हैं; जैसे—

- विद्यालय में कक्षाएँ चल रही होंगी।
- नदी में नौका दौड़ रही होगी।
- वंदना परीक्षा की तैयारी कर रही होगी।
- दादाजी सैर कर रहे होंगे।

सोचो और बताओ

एक-एक वाक्य लिखिए।

- सामान्य वर्तमानकाल ____________________
- अपूर्ण वर्तमानकाल ____________________
- संदिग्ध वर्तमानकाल ____________________

भविष्यतकाल

भविष्यतकाल, अर्थात आनेवाला समय। क्रिया के जिस रूप से क्रिया के आनेवाले समय में होने का बोध हो, उसे भविष्यतकाल कहते हैं; जैसे—

- कल बाज़ार बंद रहेंगे।
- छुट्टियों में हम नानी के घर जाएँगे।

भविष्यतकाल के मुख्य दो भेद हैं—1. सामान्य भविष्यतकाल 2. संभाव्य भविष्यतकाल।

1. **सामान्य भविष्यतकाल**

क्रिया के जिस रूप से पता चले कि क्रिया सामान्य रूप से भविष्यतकाल में होगी, उसे **सामान्य भविष्यतकाल** कहते हैं; जैसे–

- कल हम पिकनिक पर जाएँगे।
- गणतंत्र दिवस पर सार्वजनिक अवकाश रहेगा।
- मेरी गुड़िया मोतियों की माला पहनेगी।
- मैं शाम को नए जूते खरीदूँगा।

2. **संभाव्य भविष्यतकाल**

संभाव्य भविष्यतकाल संभावना को दर्शाता है। क्रिया के जिस रूप से उसके भविष्य में होने की संभावना का बोध हो, उसे **संभाव्य भविष्यतकाल** कहते हैं; जैसे–

- शायद आज हमारी परीक्षा का परिणाम घोषित **हो जाए**।
- शायद आज बाज़ार बंद **रहेगा**।
- शायद आज बिजली देर से **आएगी**।
- शायद मुझे चित्रकला प्रतियोगिता में प्रथम स्थान **मिल जाए**।

सोचो और बताओ

सामान्य भविष्यतकाल को संभाव्य भविष्यतकाल में बदलिए।

- हम कल मैच खेलेंगे। ____________________
- आज तेज़ बारिश होगी। ____________________
- मधुर देर से घर आएगा। ____________________
- कल विद्यालय की छुट्टी होगी। ____________________

हमने जाना

- क्रिया के होने का समय बतानेवाला क्रिया का रूप काल कहलाता है।
- काल के तीन भेद हैं–भूतकाल, वर्तमानकाल एवं भविष्यतकाल।
- भूतकाल के प्रमुख छह भेद हैं–सामान्य भूतकाल, आसन्न भूतकाल, पूर्ण भूतकाल, अपूर्ण भूतकाल, संदिग्ध भूतकाल एवं हेतुहेतुमद् भूतकाल।
- वर्तमानकाल के तीन भेद हैं–सामान्य वर्तमानकाल, अपूर्ण वर्तमानकाल एवं संदिग्ध वर्तमानकाल।
- भविष्यतकाल के प्रमुख दो भेद हैं–सामान्य भविष्यतकाल और संभाव्य भविष्यतकाल।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. 'सबने रात्रि का भोजन किया।' वाक्य किस काल का उदाहरण है?

सामान्य भूतकाल पूर्ण भूतकाल अपूर्ण भूतकाल

ख. 'माँ रोटी बना रही है।' वाक्य किस काल का उदाहरण है?

अपूर्ण वर्तमानकाल संदिग्ध वर्तमानकाल सामान्य वर्तमानकाल

2. रंगीन क्रियापद पहचानकर काल का नाम लिखिए।

क. भविष्य साइकिल से विद्यालय गया। ____भूतकाल____

ख. बच्चा गृहकार्य करता है। ____________

ग. कल हम आम का पौधा लगाएँगे। ____________

घ. सोमवार को बाज़ार बंद था। ____________

ङ. अगले सप्ताह हमारे विद्यालय का वार्षिकोत्सव होगा। ____________

3. क्रिया के आधार पर भूतकाल के भेद का नाम लिखिए।

क. लोकनर्तकों ने बहुत सुंदर नृत्य किया। ____सामान्य भूतकाल____

ख. हम कार से पंचकूला जा रहे थे। ____________

ग. पिछले वर्ष ही तो अनन्या भारत आई थी। ____________

घ. मैंने गणित के सभी प्रश्न हल कर लिए हैं। ____________

ङ. परीक्षा समाप्त हो गई होगी। ____________

4. निर्देशानुसार वाक्य पूरे कीजिए।

क. बंदर पेड़ पर ____________। (सामान्य वर्तमानकाल)

ख. बच्चे कक्षा में उछल-कूद ____________। (अपूर्ण वर्तमानकाल)

ग. क्रिकेट का मैच ____________। (संदिग्ध वर्तमानकाल)

घ. दरज़ी कुरता सिल ____________। (अपूर्ण भूतकाल)

ङ. मुझे नानी की सारी कहानियाँ याद ____________। (पूर्ण भूतकाल)

च. मुझे विद्यालय में प्रवेश ____________। (आसन्न भूतकाल)

5. सामान्य भविष्यतकाल को संभाव्य भविष्यतकाल में बदलिए।

क. सोने के भाव बढ़ जाएँगे। ______________________

ख. आज दूरदर्शन पर नया कार्यक्रम आरंभ होगा। ______________________

ग. पिताजी मेरे लिए कहानियों की पुस्तक लाएँगे। ______________________

घ. कल मेरा मित्र अवश्य मान जाएगा। ______________________

ङ. नौ बजे कारों की रेस शुरू हो जाएगी। ______________________

च. हम सुबह चटपटा पोहा बनाएँगे। ______________________

6. **प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

क. काल किसे कहते हैं? काल के प्रमुख भेदों के नाम बताइए।

ख. पूर्ण भूतकाल तथा अपूर्ण भूतकाल में क्या अंतर है?

ग. उदाहरण द्वारा संदिग्ध भूतकाल तथा संदिग्ध वर्तमानकाल में अंतर स्पष्ट कीजिए।

घ. संभाव्य भविष्यतकाल क्या दर्शाता है?

कार्यकलाप

दिए गए अनुच्छेद को वर्तमानकाल में परिवर्तित करके लिखिए।

समाचार-पत्र हमारे जीवन का प्रमुख अंग था। प्रातःकाल यदि समाचार-पत्र नहीं आता था, तो जीवन में कोई कमी-सी लगती थी। देश-विदेश के सभी समाचार प्राप्त होते थे, जिन्हें हम चाव से पढ़ते थे। इसमें समाज का प्रतिबिंब झलकता था। स्थानीय समाचारों, खेल समाचारों तथा विज्ञापनों के द्वारा बहुत-सी जानकारियाँ मिलती थीं।

____

____

____

____

____

____

जाना-समझा

काल, क्रिया के घटित होने के समय का ज्ञान करवाता है।

22 वाच्य

शशांक दौड़ता है।

बच्चों ने दौड़ लगाई।

बच्चे से दौड़ा नहीं जाता।

चित्र देखकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- प्रथम वाक्य में क्रिया का प्रयोग किसके अनुसार हुआ है? ________________
- द्वितीय वाक्य में क्रिया का प्रयोग किसके अनुसार हुआ है? ________________
- तृतीय वाक्य में क्रिया का प्रयोग किसके अनुसार हुआ है? ________________

उपर्युक्त वाक्यों में क्रिया क्रमशः कर्ता, कर्म तथा भाव के अनुसार प्रयोग हुई है।

क्रिया का वह रूप, जिससे पता चले कि क्रिया कर्ता, कर्म अथवा भाव में से किसके अनुसार प्रयोग की गई है, वाच्य कहलाता है।

वाच्य के भेद

वाच्य के प्रमुख तीन भेद हैं—1. कर्तृवाच्य ↓ कर्ता 2. कर्मवाच्य ↓ कर्म 3. भाववाच्य। ↓ भाव

1. कर्तृवाच्य

कर्तृवाच्य में क्रिया का लिंग तथा वचन कर्ता के अनुसार होता है। कर्तृवाच्य में कर्ता प्रधान होता है।

उदाहरण ▪ अनिकेत आइसक्रीम खा रहा है।

कर्ता	अनिकेत	लिंग	पुल्लिंग	वचन	एकवचन
क्रिया	खा रहा है	लिंग	पुल्लिंग	वचन	एकवचन

- लेखिकाएँ कहानियाँ लिखती हैं।

कर्ता	लेखिकाएँ	लिंग	स्त्रीलिंग	वचन	बहुवचन
क्रिया	लिखती हैं	लिंग	स्त्रीलिंग	वचन	बहुवचन

अन्य उदाहरण

- सब्जीवाला सब्जी बेचता है।
- नर्स रोगी को दवा पिलाती है।
- लड़कियाँ मधुर स्वर में गाती हैं।

2. कर्मवाच्य

कर्मवाच्य में क्रिया का लिंग तथा वचन कर्म के लिंग तथा वचन के अनुसार होता है। कर्मवाच्य में कर्म प्रधान होता है।

उदाहरण
- अनिकेत द्वारा आइसक्रीम खाई जाती है।

कर्म	आइसक्रीम	लिंग	स्त्रीलिंग	वचन	एकवचन
क्रिया	खाई जाती है	लिंग	स्त्रीलिंग	वचन	एकवचन

- मज़दूरों द्वारा रोटियाँ बनाई जाती हैं।

कर्म	रोटियाँ	लिंग	स्त्रीलिंग	वचन	बहुवचन
क्रिया	बनाई जाती हैं	लिंग	स्त्रीलिंग	वचन	बहुवचन

अन्य उदाहरण

- सुभाष के द्वारा फैक्टरी बंद कर दी गई।
- बच्चों द्वारा कॉपियाँ इकट्ठी की गईं।
- धोबी द्वारा कपड़े धोए जाते हैं।

3. भाववाच्य

भाववाच्य में भाव की प्रधानता होती है तथा क्रिया अकर्मक, एकवचन और पुल्लिंग में होती है।

उदाहरण
- मुझसे पढ़ा नहीं जाता।

क्रिया	पढ़ा नहीं जाता—अकर्मक	वचन	एकवचन	लिंग	पुल्लिंग

- पक्षियों से दिनभर उड़ा नहीं जाता।

क्रिया	उड़ा नहीं जाता—अकर्मक	वचन	एकवचन	लिंग	पुल्लिंग

अन्य उदाहरण

- युवान उछाल नहीं पाता।
- शौर्य से उड़ाई नहीं जाती।
- उससे खेला नहीं जाता।

वाच्य परिवर्तन

एक वाच्य का दूसरे वाच्य में परिवर्तन वाच्य परिवर्तन कहलाता है।

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में परिवर्तन

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में परिवर्तन करते समय 'के द्वारा' शब्द का प्रयोग किया जाता है तथा क्रिया के लिंग तथा वचन कर्म के अनुसार परिवर्तित कर दिए जाते हैं।

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
धोबी कपड़े धोता है।	धोबी के द्वारा कपड़े धोए जाते हैं।
हम हलवा-पूरी खाते हैं।	हमारे द्वारा हलवा-पूरी खाई जाती है।
बच्चे पाठ पढ़ते हैं।	बच्चों के द्वारा पाठ पढ़ा जाता है।
पक्षी चहचहाते हैं।	पक्षियों के द्वारा चहचहाया जाता है।
लड़का पुल से छलाँग लगाता है।	लड़के के द्वारा पुल से छलाँग लगाई जाती है।

सोचो और बताओ

कर्मवाच्य में बदलिए।

- अनुज कहानियाँ पढ़ता है। ____________________
- बच्चा पौधे लगाता है। ____________________

कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य में परिवर्तन

कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य में परिवर्तन करते समय क्रिया का लिंग तथा वचन कर्ता के अनुसार परिवर्तित कर दिया जाता है। 'से' अथवा 'के द्वारा' शब्द हटा दिए जाते हैं।

कर्मवाच्य	कर्तृवाच्य
रोगी से दवाई खाई जाती है।	रोगी दवाई खाता है।
बच्चों के द्वारा कुरसियाँ उठाई जाती हैं।	बच्चे कुरसियाँ उठाते हैं।
मालिन के द्वारा मालाएँ बनाई जाती हैं।	मालिन मालाएँ बनाती है।
लड़कियों के द्वारा नृत्य किया जाता है।	लड़कियाँ नृत्य करती हैं।
कुम्हार के द्वारा मिट्टी के घड़े बनाए जाते हैं।	कुम्हार मिट्टी के घड़े बनाता है।

कर्तृवाच्य से भाववाच्य में परिवर्तन

कर्तृवाच्य से भाववाच्य में परिवर्तन करते समय क्रिया अकर्मक तथा एकवचन, पुल्लिंग होती है।

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
खरगोश खाता नहीं है।	खरगोश से खाया नहीं जाता है।
मैं लिखता नहीं हूँ।	मुझसे लिखा नहीं जाता है।
मैं नहीं पढ़ता।	मुझसे पढ़ा नहीं जाता।
माधुरी गाती नहीं है।	माधुरी से गाया नहीं जाता है।
बच्चा नहीं खेलता।	बच्चे से खेला नहीं जाता।

हमने जाना

- क्रिया का वह रूप, जिससे पता चले कि क्रिया कर्ता, कर्म या भाव में से किसके अनुसार प्रयोग की गई है, वाच्य कहलाता है।
- वाच्य के तीन भेद हैं—कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य तथा भाववाच्य।

आओ कुछ करें

1. **सही विकल्प पर गोला लगाइए।**

क. 'कुम्हार घड़े बनाता है।' में कौन-सा वाच्य है?

कर्तृवाच्य　　कर्मवाच्य　　भाववाच्य

ख. 'दरजी के द्वारा कपड़े सिले जाते हैं।' में कौन-सा वाच्य है?

भाववाच्य　　कर्मवाच्य　　कर्तृवाच्य

2. दिए गए वाक्यों को कर्मवाच्य में बदलकर लिखिए।

क. मज़दूर मकान बनाता है। ____________________

ख. रसोइया सब्ज़ियाँ काटता है। ____________________

ग. मधुमक्खियाँ रस इकट्ठा करती हैं। ____________________

घ. बच्चा जूते के फ़ीते बाँधता है। ____________________

ङ. धोबी कपड़े इस्त्री करता है। ____________________

च. गुड़िया नए-नए कपड़े खरीदती है। ____________________

छ. हलवाई जलेबियाँ बनाता है। ____________________

3. **दिए गए वाक्यों को कर्तृवाच्य में बदलकर लिखिए।**

क. मानसी द्वारा नई-नई कहानियाँ बनाई जाती हैं। ____________________

ख. टिकट-चेकर द्वारा टिकट जाँची जाती है। ____________________

ग. दादाजी द्वारा सीढ़ियाँ उतरी जाती हैं। ____________________

घ. कारीगर द्वारा सोफे बनाए जाते हैं। ____________________

ङ. मज़दूरों द्वारा रोटी खाई जाती है। ____________________

च. लोकनर्तकों द्वारा लोकनृत्य किया जाता है। ____________________

छ. अभिनव द्वारा पतंग उड़ाई जाती है। ____________________

4. **प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

क. वाच्य किसे कहते हैं? इसके भेदों के नाम लिखिए।

ख. कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य तथा भाववाच्य में क्या अंतर है?

कार्यकलाप

वाच्य पर आधारित प्रश्नों का निर्माण करें तथा उनका उत्तर लिखने के लिए अपने सहपाठी को दें; जैसे–

निर्देशानुसार कीजिए।

- शेर द्वारा शिकार किया जाता है। (कर्तृवाच्य में बदलिए।) ____________________
- बच्चे नृत्य करते हैं। (कर्मवाच्य में बदलिए।) ____________________
- वह सो नहीं सकती। (भाववाच्य में बदलिए।) ____________________
- वह कूद नहीं सकती। (भाववाच्य में बदलिए।) ____________________

जाना-समझा

दैनिक जीवन में हम कर्तृवाच्य का प्रयोग अधिक करते हैं, भाववाच्य का कम।

23 अविकारी शब्द—क्रियाविशेषण

चित्र देखकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- एक लड़का ऊपर चढ़ रहा है। (लिंग बदलें।) ____________________
- बच्चे ध्यानपूर्वक पढ़ रहे हैं। (वचन बदलें।) ____________________
- माँ ने पास थैला रखा है। (कारक बदलें।) ____________________
- मेरा घर सुंदर है। (अन्य पुरुष में बदलें।) ____________________
- यह कल का चित्र था। (वर्तमानकाल में बदलें।) ____________________
- बच्चा दिनभर पढ़ता है। (वाच्य बदलकर लिखें।) ____________________

उपर्युक्त रंगीन शब्द ऊपर, ध्यानपूर्वक, पास, सुंदर, कल, दिनभर प्रश्न तथा उत्तर दोनों में समान हैं। इनमें लिंग, वचन, कारक, पुरुष, काल अथवा वाच्य आदि के आधार पर कोई परिवर्तन नहीं आया। इन्हें अविकारी शब्द कहते हैं।

वे शब्द, जिनमें लिंग, वचन, कारक, पुरुष, काल अथवा वाच्य आदि के आधार पर कोई परिवर्तन नहीं आता, अविकारी शब्द कहलाते हैं।

अविकारी शब्द के भेद

अविकारी शब्द चार प्रकार के होते हैं—क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक तथा विस्मयादिबोधक।

क्रियाविशेषण

जिस प्रकार संज्ञा शब्द की विशेषता बतानेवाले शब्द विशेषण कहलाते हैं, उसी प्रकार, जो शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, उन्हें क्रियाविशेषण कहते हैं; जैसे—वह **चुपचाप** बैठा है।

इसमें 'चुपचाप' शब्द क्रिया 'बैठा है' की विशेषता बता रहा है। यह शब्द क्रियाविशेषण है। कुछ अन्य उदाहरण पढ़ें तथा समझें।

- वह **अचानक** चला गया।
- वह बात करते हुए **धीरे-धीरे** रोने लगा।
- दादाजी आरामकुरसी पर **शांतिपूर्वक** बैठे हैं।

क्रियाविशेषण के भेद

क्रियाविशेषण के प्रमुख चार भेद हैं—1. रीतिवाचक क्रियाविशेषण 2. कालवाचक क्रियाविशेषण 3. स्थानवाचक क्रियाविशेषण 4. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण।

1. रीतिवाचक क्रियाविशेषण

क्रिया की विशेषता बतानेवाले वे शब्द, जो किसी कार्य के किए जाने के ढंग, रीति या तरीके के बारे में बताते हैं, **रीतिवाचक क्रियाविशेषण** कहलाते हैं। क्रिया के साथ 'कैसे' शब्द लगाकर प्रश्न करने पर प्राप्त होनेवाला उत्तर रीतिवाचक क्रियाविशेषण कहलाता है; जैसे—

- बारिश आनेवाली है, कपड़े फटाफट उतार लो। → कैसे उतार लो? → फटाफट।
- बात करते-करते वह अचानक चुप हो गई।
- मेरी बात पर गुस्सा होकर वह एकाएक उठ गया।
- सामाजिक कार्यों में सबने यथाशक्ति सहयोग दिया।
- मेरी पुस्तक की सभी प्रतियाँ हाथोंहाथ बिक गईं।
- किसान ने बंजर ज़मीन पर भी परिश्रमपूर्वक कार्य किया।

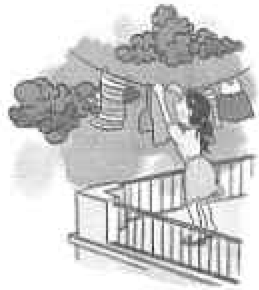

सोचो और बताओ

किन्हीं दो रीतिवाचक क्रियाविशेषण शब्दों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

चुपके-चुपके सावधानीपूर्वक धीरे तेज़ आहिस्ता एकदम

____

____

2. कालवाचक क्रियाविशेषण

वे क्रियाविशेषण, जिनसे क्रिया के होने के समय का पता चलता है, **कालवाचक क्रियाविशेषण** कहलाते हैं। क्रिया के साथ 'कब' शब्द लगाकर प्रश्न करने पर मिलनेवाला उत्तर कालवाचक क्रियाविशेषण होता है; जैसे—

- वह दिनभर ऊँघता रहता है। → कब ऊँघता रहता है? → दिनभर।
- उसे खाँसी हो गई है, वह लगातार खाँस रहा है।
- वह एक ही प्रश्न को बार-बार पूछ रहा है।
- मेरे माता-पिता तुम्हारे बारे में अकसर पूछते हैं।
- तुमने जो पुस्तक मँगवाई है, वह परसों आएगी।
- स्वस्थ रहने के लिए सवेरे नित्य घूमने जाओ।

सोचो और बताओ

किन्हीं दो कालवाचक क्रियाविशेषण शब्दों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

आज कल प्रतिदिन सदैव आजकल सवेरे

____

____

3. स्थानवाचक क्रियाविशेषण

वे क्रियाविशेषण, जिनसे क्रिया के होने के स्थान के बारे में पता चलता है, स्थानवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं। क्रिया के साथ 'कहाँ' शब्द लगाकर प्रश्न करने पर प्राप्त होनेवाला उत्तर स्थानवाचक क्रियाविशेषण होता है; जैसे—

- मेरे घर मत आना। मैं तुमसे बाहर मिलूँगा। → कहाँ मिलूँगा? → बाहर।
- आकाश में काले-काले बादल इधर-उधर फैले हैं।
- ढलान के कारण पानी नीचे बह रहा है।
- काँच के टुकड़े चारों ओर बिखर गए।
- दूध उठा लेना, यहाँ रखा है।
- सड़क पार करने से पहले दाएँ-बाएँ देखना चाहिए।

सोचो और बताओ

किन्हीं दो स्थानवाचक क्रियाविशेषण शब्दों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

दाहिने आगे पीछे निकट भीतर इस ओर

____

____

4. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण

वे क्रियाविशेषण, जिनसे क्रिया की नापतौल अथवा परिमाण-संबंधी विशेषता का पता चलता है, परिमाणवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं। क्रिया के साथ 'कितना' शब्द लगाकर प्रश्न करने पर प्राप्त

होनेवाला उत्तर परिमाणवाचक क्रियाविशेषण होता है; जैसे—

- तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं है, बाहर की वस्तुएँ कम खाना।→ कितना खाना?→ कम।
- यह रंग तुमपर खूब खिलता है।
- इस कक्ष में प्रकाश पर्याप्त होना चाहिए।
- उसकी पार्टी में मुझे बिलकुल मज़ा नहीं आया।
- मुझसे भागा नहीं जाता, तनिक ठहरो।

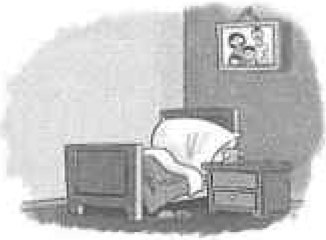

सोचो और बताओ

किन्हीं दो परिमाणवाचक क्रियाविशेषण शब्दों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

थोड़ा अधिक ज़रा उतना जितना अत्यंत

___

___

विशेषण तथा क्रियाविशेषण में अंतर

विशेषण शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बताते हैं। क्रियाविशेषण शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं। कभी-कभी एक ही शब्द का प्रयोग विशेषण तथा क्रियाविशेषण दोनों रूपों में किया जा सकता है। प्रयोग द्वारा इनका अंतर समझा जा सकता है।

विशेषण	क्रियाविशेषण
कम बात करो।	वह कम बोलती है।
तुमने अच्छा गाना गाया।	वह अच्छा खेला।
तेज़ बारिश में भीगना अच्छा लगता है।	बारिश तेज़ होने लगी।
सब्ज़ी में ज़रा-सा पानी डाला।	ज़रा-सा खाओ।
थोड़ा भोजन साथ ले लो।	उसने मुझे थोड़ा खाने को दिया।

हमने जाना

- अविकारी शब्दों में लिंग, वचन, कारक, पुरुष, काल अथवा वाच्य के आधार पर कोई परिवर्तन नहीं होता।
- क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक तथा विस्मयादिबोधक अविकारी शब्द हैं।
- क्रियाविशेषण क्रिया की विशेषता बताते हैं।
- क्रियाविशेषण के चार भेद हैं—रीतिवाचक, कालवाचक, स्थानवाचक तथा परिमाणवाचक।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

   क. 'चुपके-चुपके चलो।' में रंगीन शब्द क्रियाविशेषण का कौन-सा भेद है?

   कालवाचक   रीतिवाचक   स्थानवाचक

   ख. 'वर्षा आज सवेरे-से हो रही है।' में रंगीन शब्द क्रियाविशेषण का कौन-सा भेद है?

   परिमाणवाचक   कालवाचक   रीतिवाचक

2. दिए गए वाक्यों में से क्रियाविशेषण छाँटकर लिखिए।

   क. मेरे चाचाजी हमारे घर कल आएँगे। ____________

   ख. शिक्षक को देखकर बच्चे एकदम चुप हो गए। ____________

   ग. तुम मुझे नहीं, अपने दाहिने देखो। ____________

   घ. तुम्हारे ज़रूरी कागज़ भीतर रखे हैं। ____________

3. उचित क्रियाविशेषण शब्दों से रिक्त स्थानों को भरिए।

   क. उसने पेड़ के पास पहुँचकर ____________ देखा।

   ख. काँच का सामान है। ____________ ले जाना।

   ग. मैं तो आपको ____________ याद करता हूँ।

   घ. अभी घाव भरे नहीं हैं। ____________ चलो।

4. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

   क. अविकारी शब्द किसे कहते हैं?

   ख. क्रियाविशेषण के प्रमुख भेद उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए।

कार्यकलाप

विद्यार्थियों को दो समूहों में बाँटें। क्रियाविशेषण शब्द लिखकर कुछ पर्चियाँ बनाएँ। उन्हें बंदकर एक डिब्बे में डालें। बारी-बारी से दोनों समूहों से एक-एक बच्चा एक पर्ची उठाएगा तथा उसपर लिखे क्रियाविशेषण से वाक्य बनाएगा। सर्वाधिक सही उत्तर देनेवाला समूह जीतेगा।

जाना-समझा

क्रियाविशेषण क्रिया से पहले आते हैं।

24 संबंधबोधक

चित्र देखकर रिक्त स्थानों को भरिए।

मेरा घर शहर से ________ गाँव में है। इसमें मैं अपने माता-पिता के ________ रहती हूँ।

मेरे घर के ________ दीक्षा का घर है। मेरे घर का दरवाज़ा उसके घर की ________ खुलता है।

मेरे घर के ________ बैलगाड़ी जा रही है। मेरे घर के ________ एक पेड़ लगा है।

इन वाक्यों में आनेवाले शब्द क्रमशः दूर, साथ, सामने, तरफ़, सामने तथा बाहर संज्ञा शब्दों का वाक्य के अन्य शब्दों से संबंध बता रहे हैं। ऐसे शब्द संबंधबोधक शब्द कहलाते हैं।

संबंधबोधक शब्द ऐसे अविकारी शब्द होते हैं, जो संज्ञा या सर्वनाम के बाद आकर उनका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से प्रकट करते हैं।

विशेष संबंधबोधक शब्दों के साथ 'का', 'की', 'के' अथवा 'से' विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

संबंधबोधक के भेद

संबंधबोधक के प्रमुख भेद इस प्रकार हैं—

1. **समतावाचक** अनुरूप, जैसा, भाँति, तुल्य, तरह, बराबर इत्यादि।
   जैसे—राधिका की भाँति सुंदर लिखा करो।
2. **विरोधवाचक** विपरीत, खिलाफ़, प्रतिकूल, उलटा इत्यादि।
   जैसे—मैं उसके खिलाफ़ कुछ नहीं सुन सकता।

3. दिशावाचक — आसपास, सामने, ओर, तरफ़, दोनों ओर इत्यादि।
जैसे—पार्क के सामने गली में मेरा घर है।

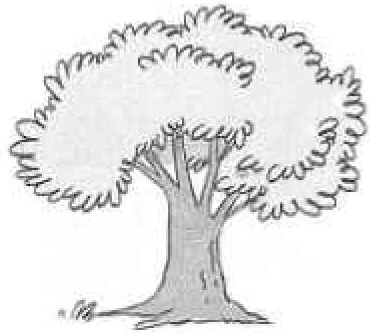

4. **स्थानवाचक** — अंदर, बाहर, दूर, भीतर, नीचे, समक्ष इत्यादि।
जैसे—बचपन में हम इस पेड़ के नीचे खेला करते थे।

5. **तुलनावाचक** — सामने, आगे, अपेक्षा इत्यादि।
जैसे—चेतन की अपेक्षा नीरजा अधिक समझदार है।

6. **हेतुवाचक** — मारे, कारण, लिए, वास्ते, खातिर इत्यादि।
जैसे—जाते समय बच्चों के लिए कुछ उपहार अवश्य ले जाना।

7. **साधनवाचक** — माध्यम, ज़रिया, द्वारा, सहारे, मार्फ़त इत्यादि।
जैसे—सीढ़ी के सहारे छत पर चढ़ जाना।

8. **कालवाचक** — पूर्व, पश्चात, पहले, बाद, उपरांत इत्यादि।
जैसे—परीक्षा के उपरांत हम घूमने जाएँगे।

9. **संगवाचक** — संग, साथ, समेत इत्यादि।
जैसे—मुझे सहपाठियों का साथ अच्छा लगता है।

10. **पृथकतावाचक** — परे, दूर, हटकर, अलग इत्यादि।
जैसे—बिजली के खंभे से हटकर खड़े होना।

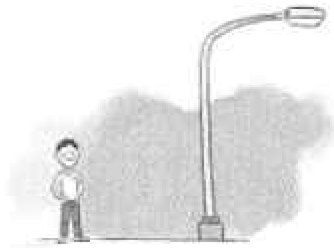

हमने जाना

- **संबंधबोधक अविकारी शब्द होते हैं।**
- **संबंधबोधक संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से बताते हैं।**

आओ कुछ करें

1. **सही विकल्प पर गोला लगाइए।**

क. कालवाचक संबंधबोधक कौन-सा है?

खातिर   दूर   बाद

ख. स्थानवाचक संबंधबोधक कौन-सा है?

तरफ़   सामने   बाहर

2. दिए गए वाक्यों में से संबंधबोधक छाँटकर लिखिए।

क. बच्चा खिलौनों की ओर टकटकी बाँधे देख रहा था। ____________________

ख. देश के लिए सबकुछ समर्पित है। ____________________

ग. घर से दूर रहकर मुझे अच्छा नहीं लग रहा है। ____________________

घ. दादाजी छड़ी के सहारे थोड़ा-थोड़ा चल लेते हैं। ____________________

3. दिए गए उपयुक्त संबंधबोधक शब्दों से रिक्त स्थानों को भरिए।

क. भारत में लाल किला के ______________ अनेक किले हैं।

ख. नदी की धारा के ______________ चलना कठिन है।

ग. गाँव के ______________ मेला लगा है।

घ. बाज़ार से मेरे ______________ भी कुछ ले आना।

ङ. भूकंप के ______________ कई इमारतें ढह गईं।

च. हमारा घर भीड़भाड़ से ______________ है।

छ. पत्र के ______________ अपनी कुशलता बताते रहना।

प्रतिकूल

कारण

दूर

द्वारा

वास्ते

समान

बाहर

4. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. संबंधबोधक किसे कहते हैं? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

ख. संबंधबोधक के भेदों के नाम लिखते हुए दो-दो संबंधबोधक शब्द लिखिए।

कार्यकलाप

दी गई दीवार पर संबंधबोधक शब्द लिखिए।

साथ

अलग

समेत

दूर

जाना-समझा

क्रियाविशेषण क्रियापदों की विशेषता बताते हैं। संबंधबोधक संज्ञा अथवा सर्वनाम का संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से प्रकट करते हैं।

25 समुच्चयबोधक

चित्र के आधार पर बताएँ कि कौन-सा कथन सही है और कौन-सा गलत।

» मैं जल्दी चलूँगा अन्यथा ट्रेन छूट जाएगी। ____________

» मैं जल्दी चला ताकि ट्रेन पकड़ सकूँ। ____________

» मैं थोड़ा जल्दी चलूँ और ट्रेन पकड़ लूँ। ____________

» ट्रेन पकड़नी थी, इसलिए जल्दी चला। ____________

» यदि जल्दी न चलता, तो ट्रेन छूट जाती। ____________

उपर्युक्त सभी कथन सही हैं। उपर्युक्त कथनों में आए रंगीन शब्दों पर ध्यान दें। ये शब्द, दो वाक्यों अथवा पदों को जोड़ रहे हैं। ऐसे शब्दों को समुच्चयबोधक कहते हैं।

वे विकारी शब्द, जो वाक्यों या पदों का संबंध दूसरे वाक्यों या पदों से जोड़ते हैं, समुच्चयबोधक कहलाते हैं।

समुच्चयबोधक के भेद

समुच्चयबोधक के प्रमुख दो भेद हैं—1. समानाधिकरण समुच्चयबोधक 2. व्यधिकरण समुच्चयबोधक।

1. समानाधिकरण समुच्चयबोधक

समान पदों, उपवाक्यों तथा वाक्यों को जोड़नेवाले शब्द समानाधिकरण समुच्चयबोधक कहलाते हैं; जैसे—

- आप घर जाएँगे या बाज़ार?
- कल मैं अस्वस्थ था, इसलिए गृहकार्य नहीं कर सका।
- विनय और शालिनी एक ही कक्षा में पढ़ते हैं।
- मैंने बहुत मनाया, लेकिन वह नहीं माना।

सोचो और बताओ

उपर्युक्त वाक्यों में आए रंगीन शब्दों के स्थान पर दिए गए समुच्चयबोधक शब्द लगाकर लिखिए।

- अथवा ____________________
- अतः ____________________
- तथा ____________________
- मगर ____________________

2. व्यधिकरण समुच्चयबोधक

एक मुख्य वाक्य तथा आश्रित उपवाक्य को जोड़नेवाले शब्द व्यधिकरण समुच्चयबोधक होते हैं; जैसे—

- मैंने तुम्हें वहाँ नहीं बुलाया, इसलिए कि तुम्हें वहाँ आना अच्छा नहीं लगता।
- दिन-रात परिश्रम करो, ताकि तुम्हें सफलता मिले।
- यदि तुम आओगे, तो मुझे अच्छा लगेगा।
- समस्याओं का समाधान स्वयं हमारे हाथ में है, अर्थात हमें स्वयं प्रयत्न करना होगा।

सोचो और बताओ

उपर्युक्त वाक्यों में आए रंगीन शब्दों के स्थान पर निम्नांकित शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए।

- क्योंकि ____________________
- कि ____________________
- जो-तो ____________________
- याने ____________________

हमने जाना

- समुच्चयबोधक पदों अथवा वाक्यांशों को जोड़ते हैं।
- समुच्चयबोधक के प्रमुख दो भेद हैं—समानाधिकरण समुच्चयबोधक तथा व्यधिकरण समुच्चयबोधक।

आओ कुछ करें

1. **सही विकल्प पर गोला लगाइए।**

   क. 'मैं बहुत व्यस्त था, अतः आ न सका।' वाक्य में प्रयुक्त समुच्चयबोधक कौन-सा है?

   बहुत   अतः   व्यस्त

   ख. 'तुम मेरे साथ चलोगे या मीरा के साथ।' वाक्य में प्रयुक्त समुच्चयबोधक कौन-सा है?

   साथ   चलोगे   या

2. सही मिलान कीजिए।

क. रोहित बड़ा है	और	तुम रोहित से बड़े हो।
ख. मुझे पुस्तकें पढ़ने का शौक है	या	नई-नई पुस्तकें पढ़ता रहता हूँ।
ग. आनंद	मगर	मयंक शिमला से कल ही लौटे हैं।
घ. मैं घर जाऊँगा	ताकि	इतनी जल्दी नहीं।
ङ. मैं बहुत ध्यानपूर्वक काम कर रहा था	इसलिए	कोई गलती न छूट जाए।

3. **समुच्चयबोधक शब्दों द्वारा जोड़कर वाक्य बनाइए।**

   क. हवा चल रही थी। पौधे लहलहा रहे थे। ______________________

   ख. मुझे चुप रहना चाहिए। उससे कुछ पूछना चाहिए। ______________________

   ग. वह बातें बनाता है। काम नहीं करता। ______________________

   घ. सावधानी से चलो! चोट न लगे। ______________________

   ङ. तुम मेहनत करोगी। तुम्हें सफलता अवश्य मिलेगी। ______________________

4. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

   क. समुच्चयबोधक किसे कहते हैं?

   ख. समानाधिकरण समुच्चयबोधक तथा व्यधिकरण समुच्चयबोधक में क्या अंतर है?

कार्यकलाप

विद्यार्थी अपनी पाठ्यपुस्तक का एक पाठ पढ़ेंगे। पाठ में आए ऐसे वाक्य ढूँढ़कर लिखेंगे, जिन्हें समुच्चयबोधक शब्दों द्वारा जोड़ा गया हो।

जाना-समझा

समुच्चयबोधक शब्द योजक भी कहलाते हैं।

26 विस्मयादिबोधक

चित्र देखकर मन में आए भाव लिखिए।

- ________ कितना मनोहर दृश्य है।
- ________ सूरज की किरणें भी आ रही हैं।
- ________ जंगल कितना घना है।
- ________ कितनी हरी-भरी धरती है।

उपर्युक्त दृश्य देखकर हमारे मुख से वाह!, अरे!, बाप रे!, अहा! आदि शब्द निकले। मन के भावों को व्यक्त करते ये शब्द विस्मयादिबोधक कहलाते हैं।

वे शब्द, जो विस्मयादि भावों को प्रकट करते हैं, विस्मयादिबोधक शब्द कहलाते हैं।

विस्मयादिबोधक शब्दों का प्रयोग वाक्य के आरंभ में किया जाता है। इन शब्दों के बाद विस्मयादिबोधक चिह्न '!' लगाया जाता है।

विस्मयादिबोधक के रूप

विस्मयादिबोधक शब्दों का प्रयोग अनेक रूपों में किया जाता है।

विस्मयबोधक — अरे, क्या, ओह, हे इत्यादि।
अरे! तुम्हारा सामान्य ज्ञान तो बहुत अच्छा है।
क्या! तुम इस वर्ष भी ट्रॉफी जीत गए।

हर्षबोधक — वाह, शाबाश, अहा, खूब, क्या खूब, धन्य, ओहो इत्यादि।
वाह! कितना सुंदर घर बनाया है।
शाबाश! इसी प्रकार सबसे मिलजुलकर रहना।

घृणाबोधक	धिक्, छिः, हट इत्यादि। धिक्! कितनी ओछी बातें करने लगे हो। छिः! कितनी गंदी लिखाई है।	
स्वीकृतिबोधक	अच्छा, ज़रूर, हाँ, ठीक इत्यादि। अच्छा! अब मैं चलता हूँ। ज़रूर! अगली बार आपके घर ही ठहरूँगा।	
चेतावनीबोधक	सावधान, होशियार, खबरदार इत्यादि। सावधान! बाढ़ का पानी घरों में आने लगा है। खबरदार! एक कदम भी आगे बढ़ाया तो ...।	
शोकबोधक	हाय, ओह, उफ़, हे राम, आह इत्यादि। हाय! चोर मेरी सारी जमा-पूँजी लूटकर ले गए। हे राम! तुम्हारा यह हाल किसने किया?	
आशीर्वादबोधक	सुखी रहो, दीर्घायु हो, जीते रहो इत्यादि। सुखी रहो! ईश्वर तुम्हें सदा प्रसन्न रखे। जीते रहो! ईश्वर तुम्हें लंबी उम्र दे।	
भयबोधक	बाप रे, ओह, अरे इत्यादि। बाप रे! झाड़ियों के पीछे कितना भयंकर शेर बैठा है। अरे! इसे पकड़ो। यह कुत्ता तो मुझे काट लेगा।	
संबोधनबोधक	सुनो, अजी, सुनिए इत्यादि। सुनिए! जाते-जाते लेटर बॉक्स में यह पत्र डाल दीजिएगा। सुनो! मेरी बात का बुरा न मानना। मैंने यह तुम्हारे भले के लिए ही कहा था।	

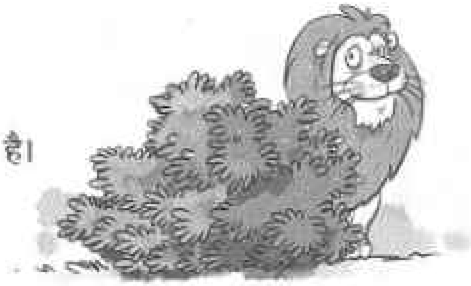

हमने जाना

- भावों को प्रकट करनेवाले शब्द विस्मयादिबोधक कहलाते हैं।
- विस्मयादिबोधक शब्द वाक्यों के आरंभ में लगते हैं।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. साँप को देखकर आपके मन में क्या भाव उत्पन्न होगा?

उफ़! वाह! बाप रे!

ख. चेतावनी देते समय हम किस शब्द का प्रयोग करेंगे?

वाह!　　　　सावधान!　　　　अरे!

2. **रिक्त स्थानों में उचित विस्मयादिबोधक शब्द भरिए।**

क. ________! मेरी मनपसंद मिठाई।

ख. ________! यह क्या हो गया?

ग. ________! अब मैं चलता हूँ।

घ. ________! ईश्वर तुम्हें लंबी उम्र दे।

ङ. ________! सामने गहरी खाई है।

च. ________! यह तुम्हारा चित्र है।

छ. ________! कैसे कीचड़ से सने हुए हो।

3. दिए गए विस्मयादिबोधक शब्दों का प्रयोग कर वाक्य बनाइए।

क. हे! ________________

ख. खूब! ________________

ग. आह! ________________

घ. अरे! ________________

ङ. जीते रहो! ________________

कार्यकलाप

दिए गए चित्रों के समान विभिन्न भावों को व्यक्त करते चित्र बनाइए या लगाइए तथा उन भावों से संबंधित दो-दो शब्द लिखिए।

________ वाह, अहा ________　 ________ अरे, क्या ________

जाना-समझा

कभी-कभी वाक्य में किसी विशेष बात पर बल देने के लिए किसी अव्यय का प्रयोग करते हैं। ये अव्यय निपात कहलाते हैं। भी, तक, ही, तो, भर, मात्र, केवल आदि निपात हैं।

जैसे—मैं भी आपके साथ चलूँगा।

27 वाक्य-विन्यास

चित्र में लिखी पंक्तियों में बच्चे क्या कहना चाहते हैं, यह स्पष्ट नहीं हो रहा है। यदि उन शब्दों को सही क्रम में रखें, तो जानेंगे कि वे ये कहना चाहते थे—

- किसे मेरी कहानी अच्छी लगी है?
- मुझे कुछ समझ नहीं आई है।
- तुम्हारी कहानी का मुख्य पात्र कौन है?
- इसकी कहानी में कोई मुख्य पात्र नहीं है।

वाक्य में जब सभी शब्द निश्चित क्रम (कर्ता, कर्म तथा क्रिया) में लगे होते हैं तथा शब्द-समूह का एक निश्चित अर्थ निकलता है, तब उसे वाक्य कहा जाता है।

एक व्यवस्थित क्रम में रखे शब्दों का सार्थक समूह वाक्य कहलाता है।

जैसे—धोबी कपड़े धोता है।
कर्ता कर्म क्रिया

वाक्य के अंग

वाक्य के मुख्यतः दो अंग हैं—उद्देश्य तथा विधेय।

उद्देश्य

वाक्य में जिसके बारे में बताया जाता है, अथवा जो कर्ता होता है, उसे उद्देश्य कहते हैं; जैसे—

- शेर दहाड़ रहा है।
- मुरगी दाना चुगती है।

इनमें 'शेर' तथा 'मुरगी' के बारे में बताया गया है। इसलिए, शेर और मुरगी उद्देश्य हैं।

विधेय

वाक्य में उद्देश्य के बारे में जो कहा जाता है, अर्थात वाक्य में कर्ता जो कार्य करता है, उसे विधेय कहते हैं; जैसे—

- शेर दहाड़ रहा है। (शेर — उद्देश्य; दहाड़ रहा है — विधेय)
- मुरगी दाना चुगती है। (मुरगी — उद्देश्य; दाना चुगती है — विधेय)

इनमें 'दहाड़ रहा है' और 'दाना चुगती है' विधेय है।

सोचो और बताओ

	उद्देश्य	विधेय
■ बच्चा साइकिल चलाता है।	____________	____________
■ गुड़िया सो रही है।	____________	____________
■ बंदर नकल उतारता है।	____________	____________

उद्देश्य तथा विधेय का विस्तार

उद्देश्य का विस्तार

उद्देश्य, अर्थात कर्ता की विशेषता बतानेवाले सभी शब्द, जो उद्देश्य से पहले प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें उद्देश्य का विस्तार कहते हैं; जैसे—

रंग-बिरंगे फूल बगीचे में खिले हैं।

उद्देश्य—फूल   फूल की विशेषता—रंग-बिरंगे   उद्देश्य का विस्तार—रंग-बिरंगे

कुछ अन्य उदाहरण पढ़ें तथा समझें।

- धोबी का कुत्ता घर के बाहर बैठा है।
- पढ़ाकू स्वाति दिन-रात पढ़ती रहती है।
- पेड़ पर बैठे पक्षी चहचहा रहे थे।
- चमचमाती पायल छम-छम बज रही थी।

विधेय का विस्तार

क्रिया और कर्म दोनों की विशेषता बतानेवाले शब्द विधेय का विस्तार होते हैं; जैसे—

धोबी मल-मलकर कपड़े धो रहा था।

विधेय—कपड़े धो रहा था।   विधेय का विस्तार—मल-मलकर   (क्रिया की विशेषता)

कुछ अन्य उदाहरण पढ़ें तथा समझें।

- पक्षी धीरे-धीरे उड़ रहे थे।
- नेहा चुपचाप सोफ़े पर बैठ गई।
- माँ गरमागरम दूध कप में डाल रही है।
- अंजलि ज़ोर-ज़ोर से मोटी किताब पढ़ रही थी।

उपर्युक्त वाक्यों में 'धीरे-धीरे', 'चुपचाप सोफ़े पर', 'गरमागरम दूध' और 'ज़ोर-ज़ोर से मोटी किताब' विधेय का विस्तार हैं।

विशेष क्रिया के साथ 'कौन' लगाकर प्रश्न करने पर जो उत्तर आए, वह उद्देश्य होगा तथा शेष विधेय होगा; जैसे—

सभी कवि अपनी कविता सुना रहे थे।

प्रश्न	कौन सुना रहे थे?	उत्तर	सभी कवि
उद्देश्य	सभी कवि	विधेय	अपनी कविता सुना रहे थे।

वाक्य के भेद

वाक्य के भेद दो आधारों पर किए जाते हैं—रचना के आधार पर तथा अर्थ के आधार पर।

रचना के आधार पर

रचना के आधार पर वाक्य के मुख्यतः तीन भेद हैं—1. सरल वाक्य 2. संयुक्त वाक्य 3. मिश्र वाक्य।

1. सरल वाक्य

सरल वाक्य ऐसे वाक्य होते हैं, जिनमें एक उद्देश्य तथा एक विधेय होता है; जैसे—

उद्देश्य	विधेय
हवा	चल रही है।
नदी	बह रही है।
बच्चा	सो रहा है।
शिवम	कंप्यूटर चला रहा है।

2. संयुक्त वाक्य

संयुक्त वाक्य में एक से अधिक सरल वाक्य होते हैं। सरल वाक्यों को समानाधिकरण समुच्चयबोधकों से जोड़ा जाता है; जैसे—

दो सरल वाक्य	दादाजी ने छाता उठाया। दादाजी घूमने गए।
संयुक्त वाक्य	दादाजी ने छाता उठाया और घूमने गए।

इन दोनों वाक्यों को 'और' समुच्चयबोधक से जोड़ा गया है। यह संयुक्त वाक्य है।

कुछ अन्य उदाहरण

सरल वाक्य	संयुक्त वाक्य
■ पक्षी उड़ा। पक्षी पेड़ पर बैठ गया।	■ पक्षी उड़ा और पेड़ पर बैठ गया।
■ मैंने चाय बनाई। उसने कॉफ़ी बनाई।	■ मैंने चाय बनाई, परंतु उसने कॉफ़ी बनाई।
■ हम दोनों नाराज़ थे। हमने बात नहीं की।	■ हम दोनों नाराज़ थे, इसलिए हमने बात नहीं की।
■ घने बादल छाए थे। बारिश नहीं हुई।	■ घने बादल छाए थे, लेकिन बारिश नहीं हुई।

3. **मिश्र वाक्य**

मिश्र वाक्य में एक मुख्य उपवाक्य तथा अन्य आश्रित उपवाक्य होते हैं। इन्हें व्यधिकरण समुच्चयबोधकों द्वारा जोड़ा जाता है; जैसे—

आश्रित उपवाक्य जैसे ही मैं निकला प्रधान उपवाक्य बारिश शुरू हो गई।

- जैसे ही बस रुकी, सवारियाँ उतरने लगीं।
- वही लोग सफल होते हैं, जो मेहनत करते हैं।
- मैं रुक नहीं सकता था, क्योंकि मुझे जल्दी घर पहुँचना था।
- यदि तुम्हें बाहर जाना है, तो छाता ले जाना।

सोचो और बताओ

कौन-सा वाक्य मिश्र वाक्य है और कौन-सा सरल वाक्य?

- जैसे ही घंटी बजी, बच्चे बस्ता उठाकर भागे। ____________
- घंटी बजते ही बच्चे बस्ता उठाकर भागे। ____________

अर्थ के आधार पर

अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद हैं—

1. **विधानवाचक वाक्य** किसी कार्य के होने का बोध करवानेवाले वाक्य विधानवाचक वाक्य होते हैं; जैसे—कार की तेज़ गति के कारण मेरा चालान कट गया।

2. **निषेधवाचक वाक्य** किसी कार्य के न होने का बोध करवानेवाले वाक्य निषेधवाचक वाक्य होते हैं; जैसे—दूर-दराज के गाँवों में अभी भी बिजली नहीं पहुँची है।

3. **प्रश्नवाचक वाक्य** जिन वाक्यों में प्रश्न पूछा जाता है, वे प्रश्नवाचक वाक्य कहलाते हैं; जैसे—
इस महीने में कौन-सा त्योहार आनेवाला है?

4. **संकेतवाचक वाक्य** ऐसे वाक्य, जिनमें एक क्रिया का होना अथवा न होना दूसरी क्रिया पर निर्भर करता है, संकेतवाचक वाक्य कहलाते हैं; जैसे—
यदि हम समय पर पहुँच जाते, तो उससे मिल सकते थे।

5. **संदेहवाचक वाक्य** ऐसे वाक्य, जिनमें कार्य होने के बारे में संदेह हो, संदेहवाचक वाक्य कहलाते हैं; जैसे—शायद मैंने इस प्रश्न का उत्तर गलत लिखा है।

6. **इच्छावाचक वाक्य** ऐसे वाक्य, जिनमें बोलनेवाले की इच्छा, आशा, शुभकामना अथवा आशीर्वाद का भाव व्यक्त होता है, इच्छावाचक वाक्य कहलाते हैं; जैसे—
ईश्वर तुम्हें हर कदम पर सफलता प्रदान करें।

7. **आज्ञावाचक वाक्य** ऐसे वाक्य, जिनमें आज्ञा या अनुमति का पता चले, आज्ञावाचक वाक्य कहलाते हैं; जैसे—तुम तुरंत यहाँ से चले जाओ।

8. **विस्मयादिवाचक वाक्य** ऐसे वाक्य, जिनमें हर्ष, शोक, आश्चर्य, घृणा आदि भावों का बोध होता है, विस्मयादिवाचक वाक्य कहलाते हैं; जैसे—अरे! इतनी चोट कैसे लग गई?

हमने जाना

- शब्दों का सार्थक समूह, जो एक व्यवस्थित क्रम में होता है, वाक्य कहलाता है।
- वाक्य के मुख्यतः दो अंग हैं—उद्देश्य तथा विधेय।
- अर्थ के आधार पर वाक्य आठ प्रकार के होते हैं—विधानवाचक, निषेधवाचक, प्रश्नवाचक, संकेतवाचक, संदेहवाचक, इच्छावाचक, आज्ञावाचक तथा विस्मयादिवाचक।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. 'सैनिक सीमा पर पहरा दे रहे हैं।' इस वाक्य में उद्देश्य कौन-सा है?

सैनिक   सीमा   दे रहे हैं

ख. 'विनय सिंह होनहार चित्रकार है।' इस वाक्य में विधेय कौन-सा है?

विनय सिंह   होनहार   होनहार चित्रकार है

2. **संयुक्त वाक्यों को सरल वाक्यों में बदलिए।**

क. बच्चा उठा और अपनी पुस्तक ले आया। ____________________

ख. शेर दहाड़ा तथा शिकार पर झपट पड़ा। ____________________

ग. हमने पहले इंडिया गेट देखा, फिर खाना खाया। ____________________

घ. माँ ने पकौड़े बनाए, परंतु साथ में चटनी नहीं बनाई। ____________________

ङ. मैंने अथक प्रयास किया था, इसलिए प्रथम आया हूँ। ____________________

3. **मिश्र वाक्यों में बदलिए।**

क. बादल गरजने लगे तथा बिजली चमकने लगी। ____________________

ख. पेटदर्द के कारण मैं आ नहीं सका। ____________________

ग. राजा का बनवाया किला बहुत सुंदर था। ____________________

घ. मेज़ पर रखे डिब्बे में बिस्कुट हैं। ____________________

ङ. हम जल्दी जाकर टिकट ले सकते हैं। ____________________

4. **निर्देशानुसार परिवर्तित कीजिए।**

क. बच्चा आम तोड़ रहा है। (निषेधवाचक) ____________________

ख. मान्या घर के काम में माँ की मदद करती है। (प्रश्नवाचक) ____________________

ग. बारिश आने पर फ़सल अच्छी होगी। (संकेतवाचक) ____________________

घ. सब्ज़ी में नमक कम है। (संदेहवाचक) ____________________

ङ. तुम आते, तो मैं तुम्हारे साथ खेलता। (इच्छावाचक) ____________________

5. **प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

क. वाक्य किसे कहते हैं? वाक्य के प्रमुख अंग कौन-से हैं?

ख. उद्देश्य तथा विधेय में क्या अंतर है?

ग. संकेतवाचक वाक्य किस प्रकार संदेहवाचक वाक्य से भिन्न होते हैं?

कार्यकलाप

उदाहरण के अनुसार एक वाक्य लीजिए तथा उसे सभी रूपों में बदलिए।

क. विधानवाचक	आकाश में बादल छाए हैं, वर्षा होगी।
ख. निषेधवाचक	आकाश में बादल नहीं छाए हैं, वर्षा नहीं होगी।
ग. प्रश्नवाचक	क्या आकाश में बादल छाए हैं, वर्षा होगी?
घ. संकेतवाचक	यदि आकाश में बादल छाए हैं, तो वर्षा होगी।
ङ. संदेहवाचक	आकाश में बादल छाए हैं, शायद वर्षा होगी।
च. इच्छावाचक	आकाश में बादल छाए हैं, वर्षा हो जाए।
छ. आज्ञावाचक	जल्दी चलो! आकाश में बादल छाए हैं, वर्षा होगी।
ज. विस्मयादिवाचक	अरे! आकाश में बादल छाए हैं, वर्षा होगी।

जाना-समझा

वाक्यों का रूपांतरण करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वाक्य का मूल अर्थ परिवर्तित न हो।

28 वाक्य रचना की अशुद्धियाँ

जब शब्द वाक्य में प्रयुक्त होते हैं, तब पद बन जाते हैं। पद बनने पर वे व्याकरण के नियमों से बँध जाते हैं। वाक्य में प्रयुक्त सभी पद निश्चित क्रम में होने चाहिए। व्याकरण के नियमों के ज्ञान के अभाव में वाक्य रचना में अशुद्धियाँ हो जाती हैं। वाक्य में लिंग, वचन, कारक, सर्वनाम तथा पदक्रम-संबंधी अशुद्धियाँ प्रायः देखने में आती हैं।

वाक्य रचना में सामान्यतः पाई जानेवाली अशुद्धियाँ इस प्रकार हैं—

सर्वनाम-संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1. दूध में कोई गिर गया है।	1. दूध में कुछ गिर गया है।
2. मेरे बस्ता खो गया है।	2. मेरा बस्ता खो गया है।
3. अब हमको जाना चाहिए।	3. अब हमें जाना चाहिए।
4. आप सभी सबका नाम बताएँ।	4. आप सभी अपना नाम बताएँ।
5. मेरे को कुछ कहना है।	5. मुझे कुछ कहना है।

लिंग-संबंधी अशुद्धियाँ

1. आज हमने दलिया बनाई है।	1. आज हमने दलिया बनाया है।
2. यह लेख किसी विद्वान स्त्री ने लिखा है।	2. यह लेख किसी विदुषी ने लिखा है।
3. तुम्हें सकुशल देखकर मेरी साँस-में-साँस आया।	3. तुम्हें सकुशल देखकर मेरी साँस-में-साँस आई।
4. उसके चेहरे पर दया टपक रहा था।	4. उसके चेहरे पर दया टपक रही थी।
5. कूड़े पर मक्खी भिनभिना रहा है।	5. कूड़े पर मक्खी भिनभिना रही है।

वचन-संबंधी अशुद्धियाँ

1. उसका प्राण निकल गया।	1. उसके प्राण निकल गए।
2. आपके दर्शनों को पाकर मैं धन्य हो गया।	2. आपके दर्शन पाकर मैं धन्य हो गया।
3. मेरे रोम-रोम तुम्हारे आभारी हैं।	3. मेरा रोम-रोम तुम्हारा आभारी है।
4. सभी लड़का पढ़ रहे थे।	4. सभी लड़के पढ़ रहे थे।
5. बागों में मोर नाच रहा था।	5. बाग में मोर नाच रहा था।

कारक-संबंधी अशुद्धियाँ

1. पेड़ में चिड़ियों का घोंसला है।	1. पेड़ पर चिड़ियों का घोंसला है।
2. मैं रात में घर आऊँगा।	2. मैं रात को घर आऊँगा।
3. माँ ने रवि को खिलौना लिया।	3. माँ ने रवि के लिए खिलौना लिया।
4. नाले में किनारे-किनारे चलो।	4. नाले के किनारे-किनारे चलो।
5. अनुराग कार में आया है।	5. अनुराग कार से आया है।

क्रिया तथा क्रियाविशेषण-संबंधी अशुद्धियाँ

1. हाथी दहाड़ रहा है।	1. हाथी चिंघाड़ रहा है।
2. साइकिल खराब हो गया है।	2. साइकिल खराब हो गई है।
3. अमित और वैशाली बाज़ार गई हैं।	3. अमित और वैशाली बाज़ार गए हैं।
4. जल प्रदूषण गहरी समस्या बनता जा रहा है।	4. जल प्रदूषण गंभीर समस्या बनता जा रहा है।
5. मेरा सिर चक्कर खा रहा है।	5. मेरा सिर चकरा रहा है।

पदक्रम-संबंधी अशुद्धियाँ

1. ताज़ा भैंस का दूध पीना चाहिए।	1. भैंस का ताज़ा दूध पीना चाहिए।
2. सब्ज़ी भिंडी की स्वादिष्ट बहुत थी।	2. भिंडी की सब्ज़ी बहुत स्वादिष्ट थी।
3. शाम चलते-चलते हो गई।	3. चलते-चलते शाम हो गई।
4. बच्चों को काटकर सलाद दो।	4. सलाद काटकर बच्चों को दो।
5. सभी विद्यालय के छात्र परीक्षा दे रहे हैं।	5. विद्यालय के सभी छात्र परीक्षा दे रहे हैं।

पुनरुक्ति-संबंधी अशुद्धियाँ

1. सारे देश भर में उत्साह छा गया।	1. सारे देश में उत्साह छा गया।
2. शनिवार के दिन दुकानें बंद थीं।	2. शनिवार को दुकानें बंद थीं।
3. सज्जन व्यक्ति परोपकार में लगे रहते हैं।	3. सज्जन परोपकार में लगे रहते हैं।
4. अपराधी को मृत्युदंड की सज़ा मिली।	4. अपराधी को मृत्युदंड मिला।
5. स्टेडियम में केवल मात्र सौ दर्शक बैठे थे।	5. स्टेडियम में केवल सौ दर्शक बैठे थे।

हमने जाना

- **वाक्य के सभी पद निश्चित क्रम में होने चाहिए।**
- **व्याकरण के नियमों के ज्ञान के अभाव में वाक्य में अशुद्धियाँ होती हैं।**

आओ कुछ करें

1. **शुद्ध कथन पर ✓ लगाइए।**

क. टहनी पर लटक जाओ।
ख. मैंने हस्ताक्षर कर दिया।
ग. यह लेख मैंने लिखा है।
घ. ये खरबूजा बहुत मीठा है।

2. **वाक्यों को शुद्ध रूप में लिखिए।**

क. मीठे पेड़ पर आम लगे थे। ____________________
ख. बीमार का प्राण निकल गया। ____________________
ग. मधुर ने रोटी खानी है। ____________________
घ. यह पत्र कौन-ने लिखा है? ____________________
ङ. मेरे मित्र को काटकर सेब खिलाओ। ____________________
च. अनेकों लोग परेड देखने खड़े थे। ____________________
छ. मुझको परीक्षा देने जाना है। ____________________
ज. मंदिर में रथयात्रा शुरू हुई। ____________________
झ. मुझे केवल मात्र उनके दर्शन करने हैं। ____________________
ञ. मेरा कमीज़ फट गया है। ____________________
ट. कड़वा होता है करेला। ____________________
ठ. प्रातःकाल में हवा ठंडी चलती है। ____________________
ड. गरम प्याले में चाय लाना। ____________________
ढ. भारत में अनेक दर्शनीय देखने योग्य स्थान हैं। ____________________
ण. बच्चे की आँख से मोटा-मोटा आँसू टपक रहा था। ____________________

कार्यकलाप

सर्वनाम, लिंग, वचन, कारक तथा क्रिया-संबंधी पाँच-पाँच अशुद्ध वाक्य लिखकर उनके शुद्ध रूप लिखिए।

जाना-समझा

वाक्य में प्रयुक्त सभी सार्थक शब्दों को निश्चित स्थान पर रखने की प्रक्रिया पदक्रम कहलाती है।

29 विरामचिह्न

भाषा की मौखिक अभिव्यक्ति करते समय, अपने भावों तथा विचारों को हम अपनी वाणी के उतार-चढ़ाव द्वारा स्पष्ट कर देते हैं। परंतु, लेखन के समय भावाभिव्यक्ति के लिए कुछ चिह्नों का प्रयोग करते हैं, ये चिह्न विरामचिह्न कहलाते हैं। विरामचिह्नों का प्रयोग भाषा में शुद्धता तथा स्पष्टता लाता है।

जैसे—क्या तुम मेरे घर आए थे? प्रश्न

क्या! तुम मेरे घर आए थे। आश्चर्य

भाषा की लिखित अभिव्यक्ति करते समय, भावों और विचारों को स्पष्ट करने के लिए लगाए जानेवाले चिह्न विरामचिह्न कहलाते हैं।

हिंदी भाषा में प्रयुक्त कुछ प्रमुख विरामचिह्न इस प्रकार हैं—

पूर्णविराम		।	योजक चिह्न	-
अर्धविराम		;	निर्देशक चिह्न	—
अल्पविराम		,	कोष्ठक चिह्न	( )
प्रश्नवाचक चिह्न		?	लाघव चिह्न	०
विस्मयादिबोधक चिह्न		!	विवरण चिह्न	:—
उद्धरणचिह्न	इकहरा	' '	हंसपद	^
	दोहरा	" "		

पूर्णविराम (।)

जब एक वाक्य समाप्त हो जाता है, तब उसके अंत में पूर्णविराम का चिह्न लगाया जाता है। प्रश्नवाचक वाक्यों को छोड़कर अन्य सभी प्रकार के वाक्यों में पूर्णविराम का चिह्न लगाया जाता है; जैसे—

- अभ्यास से कार्य में निपुणता आती है।
- ईमानदारी का फल मीठा होना चाहिए।
- रेलवे स्टेशन पर बहुत भीड़ है।

अर्धविराम (;)

जब वाक्य में पूर्णविराम से कम तथा अल्पविराम से अधिक रुकना हो, तब अर्धविराम का प्रयोग किया जाता है; जैसे—

- भूकंप से तबाही मची; लोग मर गए।
- बादल छा गए हैं; वर्षा होनेवाली है।

अल्पविराम (,)

अल्पविराम का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है—

- दो या अधिक समान पदों को अलग दिखाने के लिए—
  मोहित, निष्ठा, मोक्ष तथा मिताली साथ-साथ खेल रहे हैं।
- संख्या के बाद—मेरी पुस्तक के पृष्ठ 15, 18, 25 तथा 30 फटे हुए हैं।
- संबोधन के बाद—माँ, मुझे भी कुछ खाने को दो।
- हाँ अथवा नहीं के बाद—हाँ, मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा।
- उद्धरण के पहले—प्रधानाचार्य ने कहा,"कल पुरस्कार वितरण समारोह होगा।"

प्रश्नवाचक चिह्न (?)

प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है—

- जहाँ प्रश्न किया जाए—क्या आप कभी दिल्ली गए हैं?
- अनिश्चित स्थिति में—शायद हम पहले कभी मिले हैं?

विस्मयादिबोधक चिह्न (!)

विस्मयादिबोधक चिह्न निम्नलिखित स्थितियों में लगाया जाता है—

- विभिन्न भावों को व्यक्त करनेवाले शब्दों, वाक्यांशों अथवा वाक्यों के अंत में—
  अरे! तुमने तो कमाल कर दिया।
  हाय! उसका तो घर ही बरबाद हो गया।
- शुभकामनाएँ अथवा आशीर्वाद देने के लिए—
  भगवान आपका भला करे!
  सदा फूलो-फलो!

उद्धरणचिह्न (' '), (" ")

उद्धरणचिह्न दो प्रकार के होते हैं—इकहरा उद्धरणचिह्न (' ') तथा दोहरा उद्धरणचिह्न (" ")।

इकहरा उद्धरणचिह्न निम्नलिखित स्थितियों में लगाया जाता है—

- पुस्तक/समाचार-पत्र के नाम के साथ—'बाल कहानी' प्रसिद्ध पत्रिका है।
- लेखक के उपनाम के साथ—चंद्रकांत शर्मा 'हाथरसी' प्रसिद्ध कवि हैं।
- शीर्षक के साथ—'रानी केतकी की कहानी' बहुत पुरानी कहानी है।

दोहरा उद्धरणचिह्न निम्नलिखित स्थितियों में लगाया जाता है—

- किसी कथन या अवतरण को ज्यों-का-त्यों लिखने के लिए—
  लालबहादुर शास्त्री ने नारा दिया,"जय जवान, जय किसान।"
- लोकोक्ति के लिए—"बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद।"

योजक चिह्न (-)

योजक चिह्न निम्नलिखित स्थितियों में लगाते हैं—

- द्वंद्व समास में—माता-पिता, दाल-रोटी।
- पुनरुक्त शब्दों में—बार-बार, हँस-हँसकर।
- समानता दिखाने के लिए—उसका चेहरा चाँद-सा सुंदर है।
- विपरीत शब्दों में—आकाश-पाताल, धर्म-अधर्म।

निर्देशक चिह्न (—)

निर्देशक चिह्न निम्नलिखित स्थितियों में लगाते हैं—

- किसी के कथन से पहले कक्षाध्यापक ने कहा—सभी बच्चे पंक्ति बनाकर चलें।
- संवाद से पहले राजा—सभी सैनिक दक्षिण दिशा की ओर कूच करें।
- लेखक के नाम से पहले अंधेर नगरी चौपट राजा—भारतेंदु हरिश्चंद्र।
- उदाहरण देते समय दिल्ली में अनेक दर्शनीय स्थल हैं—लाल किला, इंडिया गेट आदि।

कोष्ठक चिह्न (( ))

कोष्ठक का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है—

- किसी शब्द के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए—तत्सम (संस्कृत के शब्द)
- क्रमसूचक अंकों के साथ—(1), (क)
- संदर्भ के लिए—राजा (अचरज से देखते हुए)
- टिप्पणी के लिए—(इसका विस्तारपूर्वक वर्णन आगे के अध्यायों में करेंगे।)
- रंगमंचीय निर्देशों के लिए—सिपाही (सावधान की मुद्रा में)

लाघव चिह्न (॰)

लाघव चिह्न का प्रयोग किसी शब्द को संक्षिप्त रूप में लिखने के लिए होता है; जैसे—

- कृपया पृष्ठ पलटिए कृ॰ पृ॰ प॰
- डॉक्टर अब्दुल कलाम डॉ॰ अब्दुल कलाम
- बैचलर ऑफ आर्ट्स बी॰ ए॰
- प्रोफेसर प्रो॰

विवरण चिह्न (:—)

विवरण अथवा निर्देश देने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे—

- नदियों से मिलनेवाले लाभ इस प्रकार हैं:—

हंसपद (‸)

यदि वाक्य लिखते समय कोई शब्द छूट जाता है, तो उस शब्द को लिखने के लिए हंसपद लगाते हैं; जैसे—

गोल
- मैं तुम्हें ‸ डाकखाने के पास मिलूँगा।

हमने जाना

- भावों की स्पष्ट अभिव्यक्ति के लिए विरामचिह्न का प्रयोग करते हैं।
- विरामचिह्न भाषा में शुद्धता तथा स्पष्टता लाते हैं।

आओ कुछ करें

1. **सही विकल्प पर गोला लगाइए।**

   क. अल्पविराम (,) का प्रयोग कहाँ होता है?

   थोड़ा रुकने के लिए | पूरा रुकने के लिए | निर्देश देने के लिए

   ख. किसी के कथन को ज्यों-का-त्यों लिखने के लिए कौन-सा चिह्न लगाते हैं?

   इकहरा उद्धरणचिह्न | कोष्ठक चिह्न | दोहरा उद्धरणचिह्न

2. **दिए गए वाक्यों में विरामचिह्न लगाइए।**

   क. मैं तुम्हारे लिए मिठाइयाँ खिलौने तथा पुस्तकें लाया हूँ

   ख. सुबह उठकर मैंने व्यायाम किया

   ग. आज तुम्हारी किस विषय की परीक्षा है

   घ. वाह आज तो मज़ा आ गया

   ङ. लालबहादुर शास्त्री ने नारा दिया जय जवान जय किसान

   च. हमें देश से ऊँच नीच छुआछूत तथा अमीर गरीब का भेद दूर करना चाहिए

   छ. गुरुजी चलो इस राज्य से दूर चलें

   ज. आगे की कहानी जानने के लिए कृ पृ प

   झ. सरोज स्मृति सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की प्रसिद्ध रचना है

   ञ. लाला लाजपत राय को पंजाब केसरी भी कहा जाता है

कार्यकलाप

अपनी पाठ्यपुस्तक के किसी एक पाठ को पढ़िए। उसमें आए विभिन्न विरामचिह्नों वाले वाक्य ढूँढ़कर लिखिए।

जाना-समझा

यदि वाक्यांश द्वारा किसी व्यक्ति का सजीव वर्णन किया जाए, तब वाक्यांश के अंत में पूर्णविराम लगता है; जैसे—गौर वर्ण। बड़ी-बड़ी आँखें। घने बाल।

आओ दोहराएँ 3 (पाठ 21 से 29 तक)

1. **सही विकल्प पर गोला लगाइए।**

क. 'माँ ने मौसी को पत्र लिखा।' यह वाक्य भूतकाल का कौन-सा भेद है?

सामान्य भूतकाल पूर्ण भूतकाल अपूर्ण भूतकाल

ख. 'विद्यालय में कक्षाएँ चल रही होंगी।' यह वाक्य किस काल का उदाहरण है?

संदिग्ध भूतकाल संदिग्ध वर्तमानकाल संभाव्य भविष्यतकाल

2. **कर्मवाच्य में बदलिए।**

क. धोबी कपड़े धोता है। ______

ख. पक्षी चहचहाते हैं। ______

3. **कर्तृवाच्य में बदलिए।**

क. रोगी से दवाई खाई जाती है। ______

ख. मालिन के द्वारा मालाएँ बनाई जाती हैं। ______

4. क्रियाविशेषण छाँटकर लिखिए।

क. वह चुपचाप बैठा है। ______

ख. वह अचानक रोने लगी। ______

5. **रंगीन शब्द क्रियाविशेषण का कौन-सा भेद है?**

क. काँच के टुकड़े चारों ओर बिखर गए। ______

ख. यह रंग तुमपर खूब खिलता है। ______

6. संबंधबोधक शब्दों द्वारा रिक्त स्थानों को भरिए।

क. मैं उसके ______ कुछ नहीं सुन सकता।

ख. परीक्षा के ______ हम घूमने जाएँगे।

7. दिए गए **समुच्चयबोधकों से वाक्य बनाइए।**

क. अथवा ______

ख. ताकि ______

8. रिक्त स्थानों में उचित विस्मयादिबोधक शब्द भरिए।

क. ______! मैं जीत गया। (हाय/वाह)

ख. ______! सामने गहरी खाई है। (सावधान/बाप रे)

9. उद्देश्य तथा विधेय छाँटकर लिखिए।

क. शेर दहाड़ रहा है। उद्देश्य ______ विधेय ______

ख. नदी बह रही है। उद्देश्य ______ विधेय ______

10. **सरल वाक्यों में बदलिए।**

क. पक्षी उड़ता हुआ आया और पेड़ पर बैठ गया। ______

ख. तेज़ हवा थी, इसलिए पतंग ऊँची उड़ रही थी। ______

11. **वाक्य शुद्ध करके लिखिए।**

क. ताज़ा भैंस का दूध पीना चाहिए। ______

ख. मीठे पेड़ पर आम लगे हैं। ______

12. **विरामचिह्न लगाकर वाक्य दोबारा लिखिए।**

क. मैं अपने माता पिता भाई बहन सबका कहना मानता हूँ ______

ख. क्या नेहा अमित रूबैना सभी घूमने जाएँगे ______

30 मुहावरे और लोकोक्तियाँ

किताबी कीड़ा

चित्र के आधार पर इन वाक्यों को समझें।

- किताबी कीड़ा का सामान्य अर्थ है—किताब का कीड़ा।
- किताबी कीड़ा का विशेष अर्थ है—सदा पढ़नेवाला।

> **जो वाक्यांश, अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ में रूढ़ हो जाएँ, उन्हें** मुहावरा **कहते हैं।**

मुहावरों का प्रयोग करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि मुहावरे केवल वाक्यांश होते हैं, उनका स्वतंत्र रूप से प्रयोग नहीं किया जा सकता। मुहावरों में प्रयुक्त शब्दों के समानार्थी रूप का प्रयोग नहीं किया जा सकता।

कुछ प्रचलित मुहावरे, उनके अर्थ तथा वाक्य-प्रयोग

1. अंक भरना (लिपटाना)
   माँ ने प्यार से अपनी बेटी को अंक भर लिया।
2. अक्ल का दुश्मन (मूर्ख)
   वह तो अक्ल का दुश्मन है, उससे यह काम नहीं हो पाएगा।
3. अपना ही राग अलापना (अपनी ही बात कहते जाना)
   तुम सब अपना ही राग अलापते जाओगे या मेरी भी सुनोगे।
4. अपनी खिचड़ी अलग पकाना (सबसे अलग रहना)
   यदि सभी अपनी खिचड़ी अलग पकाएँगे, तो परिवार की एकता समाप्त हो जाएगी।
5. अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना (अपनी प्रशंसा स्वयं करना)
   तुम अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनते हो, इसलिए तो सभी लोग तुम्हारी उपेक्षा करते हैं।

6. आँखें दिखाना (क्रोध करना)
शिक्षक द्वारा आँखें दिखाते ही सभी बच्चे चुपचाप बैठ गए।

7. आँखों में धूल झोंकना (धोखा देना)
आजकल कई कंपनियाँ नौकरी के नाम पर लोगों की आँखों में धूल झोंक रही हैं।

8. आकाश-पाताल का अंतर (बहुत अधिक अंतर)
वे हैं तो जुड़वाँ भाई, परंतु उनके स्वभाव में आकाश-पाताल का अंतर है।

9. आसमान से बातें करना (बहुत ऊँचा होना)
आजकल चारों ओर आसमान से बातें करती इमारतें दिखाई देती हैं।

10. आँखें तरसना (किसी को देखने की तीव्र इच्छा होना)
अपने बेटे से मिले चार वर्ष हो गए। उसे मिलने के लिए आँखें तरस रही हैं।

11. आँखों पर परदा पड़ना (सच दिखाई न देना)
तुम्हें उसकी बुराई कभी दिखाई नहीं देगी। ममता ने तुम्हारी आँखों पर परदा डाल रखा है।

12. इधर-उधर की हाँकना (व्यर्थ की बातें करना)
इधर-उधर की मत हाँको, सीधे मुख्य बात पर आओ।

13. ईद का चाँद होना (बहुत कम दिखाई देना)
कहाँ रहते हो? आजकल तो ईद का चाँद हो गए हो।

14. उल्टी गंगा बहाना (विपरीत कार्य करना)
बच्चों को समझाने के स्थान पर शरारतों के लिए उकसाकर उल्टी गंगा मत बहाओ।

15. एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाना (बहुत प्रयत्न करना)
मैंने एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा लिया है, परंतु इसे मेरी बात समझ नहीं आ रही।

16. कलेजे पर साँप लोटना (ईर्ष्या से जलना)
मेरी उन्नति देखकर सबके कलेजे पर साँप लोटने लगे हैं।

17. कान कतरना (बहुत चतुर होना)
अरे! इतनी-सी लड़की, कैसे बड़ों-बड़ों के कान कतर रही है।

18. कानोंकान खबर न होना (बिलकुल पता न चलना)
मैंने तुमपर भरोसा करके तुम्हें यह बात बताई है। किसी को कानोंकान खबर नहीं होनी चाहिए।

19. कोल्हू का बैल होना (लगातार काम में लगे रहना)
घर-गृहस्थी चलाने के लिए तो रामदीन कोल्हू का बैल बना हुआ है।

20. खून खौलना (गुस्सा चढ़ना)
मैं जब स्त्रियों का अपमान होते देखता हूँ, तब मेरा खून खौल जाता है।

21. खून का घूँट पीना (क्रोध या अपमान सहना)
तुम्हारे कारण मैं खून का घूँट पीकर रह गया, वरना मैं उसे सबक सिखा देता।

22. खून का प्यासा होना (शत्रु होना)
ज़मीन के एक टुकड़े के लिए दोनों भाई एक-दूसरे के खून के प्यासे हो गए हैं।

23. गुड़-गोबर कर देना (बात बिगाड़ देना)
मैंने बड़ी मुश्किल से उसे मनाया था, तुमने आकर सब गुड़-गोबर कर दिया।

24. घाव पर नमक छिड़कना (दुखी को और अधिक दुखी करना)
बार-बार मेरी असफलता की बात करके तुम मेरे घाव पर नमक मत छिड़को।

25. घी के दीये जलाना (खुशी मनाना)
स्वतंत्रता मिलने पर सभी भारतवासियों ने घी के दीये जलाए।

26. चादर तानकर सोना (बेफ़िक्र हो जाना)
परीक्षाएँ खत्म होने पर मैं चादर तानकर सोऊँगा।

27. चिकना घड़ा होना (जिसपर किसी बात का असर न हो)
इसे समझाने से कुछ नहीं होगा, यह तो चिकना घड़ा है।

28. छक्के छुड़ाना (बुरी तरह हराना)
आज के मैच में तो हमने विरोधी टीम के छक्के छुड़ा दिए।

29. छप्पर फाड़कर देना (बिना प्रयत्न के बहुत अधिक मिलना)
कंगाली का जीवन जी रहे थे। ईश्वर ने जब दिया, तब छप्पर फाड़कर दे दिया।

30. टका-सा जवाब देना (साफ़ मना कर देना)
मैं जब भी उससे सहायता माँगता हूँ, तब वह टका-सा जवाब दे देता है।

31. टका-सा मुँह लेकर रह जाना (लज्जित हो जाना)
वह शिक्षक के पास हमारी गलतियाँ दिखाने गया था। जब शिक्षक ने उसकी गलतियाँ गिनानी शुरू की, तब वह टका-सा मुँह लेकर रह गया।

32. टस-से-मस न होना (अपनी ज़िद पर अड़े रहना)
सभी उसे समझाकर हार गए, पर वह टस-से-मस न हुआ।

33. दाँत खट्टे करना (हरा देना)
हमारी सेना ने शत्रुओं की सेना के दाँत खट्टे कर दिए।

34. दाल में काला होना (कुछ गड़बड़ होना)
वह चुपचाप सुन रहा है, कुछ बोल नहीं रहा, ज़रूर दाल में कुछ काला है।

35. दौड़-धूप करना (बहुत प्रयत्न करना)
अपने बेटे के स्कूल में दाखिले के लिए वह कई दिन से दौड़-धूप कर रहा है।

36. नमक-मिर्च लगाना (बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना)
तुम्हारी नमक-मिर्च लगाकर बात करने की आदत के कारण ही घर में कलह होता है।

37. नाकों चने चबवाना (बहुत परेशान करना)
लक्ष्मीबाई ने तो अंग्रेज़ों को नाकों चने चबवा दिए थे।

38. नाक-भौं सिकोड़ना (घृणा करना)
किसी असहाय को देखकर नाक-भौं मत सिकोड़ो, बल्कि उसकी सहायता करो।

39. पाँचों उँगलियाँ घी में होना (लाभ-ही-लाभ होना)
मैनेजर बनकर तो तुम्हारी पाँचों उँगलियाँ घी में हो गई हैं।

40. फूला न समाना (बहुत खुश होना)
राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित होकर वह फूला नहीं समा रहा है।

41. बाएँ हाथ का खेल (बहुत आसान काम)
इसे सीखना बाएँ हाथ का खेल न समझो, इसे सीखने में समय लगेगा।

42. मुँह में पानी भर आना (ललचाना)
मिठाई की दुकान पर सजी मिठाइयाँ देखकर तो मुँह में पानी भर आता है।

43. रफूचक्कर होना (भाग जाना)
मेरे देखते-देखते वह मेरी साइकिल उठाकर रफूचक्कर हो गया।

44. राई का पहाड़ बनाना (छोटी-सी बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना)
तुम्हें कितनी बार कहा है, जो बात हो, वही बताया करो। राई का पहाड़ मत बनाया करो।

45. लाल-पीला होना (क्रोध करना)
छोटी-सी बात पर इतने लाल-पीले क्यों हो रहे हो?

46. लोहा लेना (मुकाबला करना)
हमारे वीर सिपाही शत्रुओं से डटकर लोहा लेंगे।

47. लोहे के चने चबाना (बहुत संघर्ष करना)
सफलताएँ आसानी से नहीं मिलतीं, लोहे के चने चबाने पड़ते हैं।

48. हाथ-पाँव फूलना (घबरा जाना)
भयंकर साँप को फन फैलाए सामने देखकर मेरे हाथ-पाँव फूल गए।

लोकोक्तियाँ

लोकोक्ति शब्द दो शब्दों 'लोक' एवं 'उक्ति' से मिलकर बना है। इसका अर्थ है—लोगों द्वारा कही गई बात। लोकोक्तियाँ अपने-आप में संपूर्ण वाक्य होती हैं, जो भाषा को प्रभावशाली बनाती हैं। वाक्य में प्रयोग करने पर लोकोक्तियों में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं किया जा सकता।

1. अंधेर नगरी चौपट राजा (अंधाधुंध कार्यवाही; कोई व्यवस्था नहीं।)
अंधेर नगरी चौपट राजा, इस राज्य में रहकर कुछ नहीं मिलनेवाला।

2. अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता (अकेला आदमी बड़े काम नहीं कर सकता।)
आपसी फूट अच्छी नहीं, मिलजुलकर रहो। याद रहे कि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।

3. अपनी-अपनी ढफली, अपना-अपना राग (एक का दूसरे से संबंध न रखना।)
इस राज्य का विकास संभव नहीं। इसमें तो सबकी अपनी-अपनी ढफली, अपना-अपना राग है।

4. आप भला तो जग भला (अपने ही अच्छा होने से सबकुछ अच्छा है।)
तुम दूसरों की बातों को दिल से न लगाओ। याद रखो, आप भला तो जग भला।

5. ऊँची दुकान फीका पकवान (प्रकट में तड़क-भड़क दिखाना, पर यथार्थ में कुछ न होना।)
इस दुकान का केवल नाम ही है, मिठाई बेस्वाद है। सुना नहीं, ऊँची दुकान फीका पकवान।

6. ऊँट के मुँह में जीरा (अधिक की जगह थोड़ा देना।)
पहलवान को तुम नाश्ते में दो पूरी दे रहे हो। यह तो ऊँट के मुँह में जीरा समान है।

7. एक मछली सारे तालाब को गंदा करती है। (दुष्ट आदमी सारे वातावरण को दूषित कर देता है।)
राधिका के आने से पहले सभी मिलजुलकर रहते थे। अब तो सारा दिन किसी-न-किसी का लड़ाई-झगड़ा चलता रहता है। सच है, एक मछली सारे तालाब को गंदा करती है।

8. एक और एक ग्यारह (एक के साथ दूसरा हो जाने से बहुत सहायता मिलती है।)
तुम सब भाई मिलकर रहो, एक और एक ग्यारह होते हैं।

9. एक हाथ से ताली नहीं बजती (दोनों का दोष होने पर ही लड़ाई होती है।)
सारा कसूर अभिनव का ही नहीं है, कुछ तो तुमने भी किया होगा। एक हाथ से ताली नहीं बजती।

10. कंगाली में आटा गीला (मुसीबत पर और मुसीबत आना।)
उधार लेकर दूध लाया था, वह भी तुमने गिरा दिया। इसे कहते हैं—कंगाली में आटा गीला।

11. काठ की हाँडी बार-बार नहीं चढ़ती (बेईमानी बार-बार नहीं चलती।)
एक बार तो मुझे बेवकूफ़ बना लिया, अब नहीं बना पाओगे। काठ की हाँडी बार-बार नहीं चढ़ती।

12. खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है। (संगति का प्रभाव अवश्य पड़ता है।)
पहले तो तुम बहुत सत्यवादी थे। जब से रमेश के साथ रहने लगे हो, तब से झूठ बोलने लगे हो। सही है, खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है।

13. गेहूँ के साथ घुन भी पिसता है। (दोषी के साथ निर्दोष भी मारा जाता है।)
वह अपराधी है, उसके साथ मत रहो। ध्यान रखना, गेहूँ के साथ घुन भी पिसता है।

14. घर का भेदी लंका ढाए (आपस की फूट से सर्वनाश होता है।)
विभीषण अगर रावण का भेद न बताता, तो रावण की मृत्यु न होती। घर का भेदी लंका ढाए।

15. घर की मुरगी दाल बराबर (महत्वपूर्ण होने पर भी घर में सम्मान नहीं मिलता।)
बाहर तो उनके नाम से ही अपराधियों को पसीने आ जाते हैं, परंतु उनके बच्चे उनसे ज़रा भी नहीं डरते। सच ही कहा गया है—घर की मुरगी दाल बराबर।

16. जो गरजते हैं, वे बरसते नहीं (अधिक बोलनेवाले व्यक्ति काम कम करते हैं।)
उसके बस का कुछ नहीं, वह सिर्फ़ कहता है। सच ही कहा गया है, जो गरजते हैं, वे बरसते नहीं।

17. दूर का ढोल सुहावना (दूर से ही कोई चीज़ सुहावनी मालूम पड़ती है।)
मुझे लगता था कि व्यापार आसान है। व्यापार करके समझ आया, दूर का ढोल सुहावना होता है।

18. मुँह में राम बगल में छुरी (कपट का बरताव करना।)
भगवान बचाए इस आदमी से। इसके तो मुँह में राम और बगल में छुरी है।

19. मान न मान, मैं तेरा मेहमान (ज़बर्दस्ती गले पड़ना।)
मैं तो तुम्हें जानता भी नहीं और तुम मुझे अपना मित्र बता रहे हो। मान न मान, मैं तेरा मेहमान।

20. लातों के भूत बातों से नहीं मानते (दुष्ट व्यक्ति दंड से ही भयभीत होते हैं।)
यह सरलता से अपना अपराध स्वीकार नहीं करेगा। इसे तो सबक सिखाना ही पड़ेगा। लातों के भूत बातों से नहीं मानते।

21. साँच को आँच नहीं (सच्चे को डरने की आवश्यकता नहीं।)
जब तुमने कोई अपराध किया ही नहीं, तब डरने की क्या आवश्यकता। साँच को आँच नहीं।

22. सीधी उँगली से घी नहीं निकलता (बहुत सीधेपन से काम नहीं चलता।)
कड़ा रूख अपनाने पर ही यह सच बताएगा। सीधी उँगली से घी नहीं निकलता।

23. हीरे की परख जौहरी जाने (गुण की परख गुणी ही कर सकता है।)
मैंने कई छोटी-मोटी नौकरियों के लिए साक्षात्कार दिया, परंतु कहीं नौकरी नहीं मिली। परंतु, प्रशासनिक सेवा में मेरा चयन हो गया। सच ही कहा गया—हीरे की परख जौहरी जाने।

हमने जाना

- मुहावरे सामान्य अर्थ के स्थान पर विशेष अर्थ में रूढ़ होते हैं।
- लोकोक्तियाँ अपने-आप में संपूर्ण वाक्य होती हैं।

आओ कुछ करें

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. 'अक्ल का दुश्मन' मुहावरे का क्या अर्थ है?

मूर्ख   बुद्धिमान   अक्लमंद

ख. किस मुहावरे का अर्थ है—गुस्सा चढ़ना?

खून खौलना   आँखें दिखाना   खून का प्यासा होना

2. दिए गए मुहावरों का सही रूप सोचकर लिखिए।

क. अपनी रोटी अलग पकाना ____________________

ख. आँखों में मिट्टी झोंकना ____________________

ग. पाँव-चोटी का ज़ोर लगाना ____________________

घ. हृदय पर साँप लोटना ____________________

ङ. छत फाड़कर देना ____________________

3. दिए गए मुहावरों को उनके अर्थ से मिलाइए।

क. आसमान से बातें करना	मुकाबला करना
ख. घी के दीये जलाना	सच दिखाई न देना
ग. आँखों पर परदा पड़ना	घबरा जाना
घ. लोहा लेना	बहुत ऊँचा होना
ङ. हाथ-पाँव फूलना	खुशी मनाना

4. दिए गए मुहावरों का इस प्रकार प्रयोग करें कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए।

क. गुड़-गोबर कर देना ______________________

ख. टस-से-मस न होना ______________________

ग. नमक-मिर्च लगाना ______________________

घ. बाएँ हाथ का खेल ______________________

ङ. रफूचक्कर होना ______________________

5. दिए गए अर्थ के लिए लोकोक्तियाँ लिखिए।

क. आपस की फूट से सर्वनाश होता है। ______________________

ख. मुसीबत पर और मुसीबत आना। ______________________

ग. बेईमानी बार-बार नहीं चलती। ______________________

घ. संगति का प्रभाव अवश्य पड़ता है। ______________________

ङ. सच्चे को डरने की आवश्यकता नहीं। ______________________

कार्यकलाप

संज्ञा पदों तथा क्रिया पदों को जोड़कर मुहावरे बनाएँ।

संज्ञा पद	क्रिया पद
नाक आँख मुँह कान सिर	छिपाना उठाना खोलना बिछाना मूँदना
	रगड़ना काटना दिखाना पीटना भरना

जाना-समझा

मुहावरों का अर्थ वाक्य के प्रसंग के अनुसार होता है।

31 अपठित गद्यांश

अपठित गद्यांश ऐसे गद्यांश होते हैं, जो पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त अन्य पत्र-पत्रिकाओं अथवा पुस्तकों आदि से लिए जाते हैं। ये विद्यार्थियों की विषयवस्तु की समझ तथा अभिव्यक्ति के मूल्यांकन में सहायक होते हैं। गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर गद्यांश में से ही देने होते हैं। इसलिए, अपठित गद्यांश को भली-भाँति पढ़ना चाहिए। उसके मुख्य बिंदुओं को रेखांकित करना चाहिए। पूछे गए प्रश्नों को समझकर उनका उत्तर गद्यांश में से ही देना चाहिए।

कुछ अपठित गद्यांशों के उदाहरण इस प्रकार हैं—

गद्यांश 1

चंद्रगुप्त मौर्य, मौर्य वंश के संस्थापक थे। उनके पौत्र अशोक एक लोकप्रिय शासक हुए हैं। सम्राट अशोक युद्धकला में निपुण थे। साम्राज्य-विस्तार की लालसा में उन्होंने कई युद्ध किए। परंतु, कलिंग के युद्ध ने उनके जीवन की दिशा ही बदल दी। इस युद्ध में हुए रक्तपात तथा क्षति ने उनके हृदय को द्रवित कर दिया। उन्होंने कभी युद्ध न करने का प्रण ले लिया। बाद में उन्होंने बौद्ध धर्म अपना लिया तथा अहिंसा के प्रचार में अपना सारा जीवन समर्पित कर दिया। उन्होंने जनकल्याण के लिए अनेक चिकित्सालयों, पाठशालाओं और सड़कों का निर्माण किया।

प्र.1 चंद्रगुप्त मौर्य कौन थे?

उ. चंद्रगुप्त मौर्य, मौर्य वंश के संस्थापक थे।

प्र.2 सम्राट अशोक ने किस लालसा में युद्ध किए?

उ. सम्राट अशोक ने साम्राज्य-विस्तार की लालसा में युद्ध किए।

प्र.3 कलिंग-युद्ध ने उनके जीवन की दिशा को किस प्रकार बदल दिया?

उ. कलिंग-युद्ध में हुए रक्तपात तथा क्षति ने उनके हृदय को द्रवित कर दिया तथा उन्होंने कभी युद्ध न करने का निर्णय किया।

प्र.4 सम्राट अशोक ने जनकल्याण के लिए क्या किया?

उ. उन्होंने जनकल्याण के लिए अनेक चिकित्सालयों, पाठशालाओं तथा सड़कों का निर्माण किया।

प्र.5 सम्राट अशोक ने किस धर्म को अपनाया?

उ. सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म को अपनाया।

गद्यांश 2

सिद्धार्थ का जन्म एक राजपरिवार में हुआ था, उनके पिता कपिलवस्तु के राजा थे। छोटी-सी अवस्था में ही वे राजसुख को त्याग कर अमरता की खोज में निकल पड़े थे। कठिन तपस्या के बाद बोधगया

में स्थित वृक्ष के नीचे राजकुमार सिद्धार्थ को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। इसलिए, इस वृक्ष को 'बोधि वृक्ष' कहा जाने लगा। बोधि का अर्थ होता है—ज्ञान। बाद में राजकुमार सिद्धार्थ ही आगे चलकर महात्मा बुद्ध के नाम से विख्यात हुए। इस बोधि वृक्ष को देखने दूर-दूर से लोग आते हैं।

प्र.1 सिद्धार्थ के पिता कहाँ के राजा थे?

मिथिला — कपिलवस्तु ✓ — वैशाली

प्र.2 राजकुमार सिद्धार्थ किसकी खोज में गए थे?

शांति की — धन की — अमरता की ✓

प्र.3 महात्मा बुद्ध का वास्तविक नाम क्या था?

राजकुमार सिद्ध — सिद्धार्थ ✓ — ज्ञान

प्र.4 बोधि वृक्ष का नाम किस प्रकार पड़ा?

उ. राजकुमार सिद्धार्थ को इस वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त होने के कारण इसे बोधि वृक्ष कहा गया।

प्र.5 दिए गए शब्दों के पर्यायवाची रूप गद्यांश में से ढूँढ़कर लिखिए—प्रसिद्ध, ज्ञान।

उ. प्रसिद्ध—विख्यात, ज्ञान—बोधि।

गद्यांश 3

जोधपुर के राजा एक आलीशान महल बनवाना चाहते थे। इसके लिए भारी मात्रा में लकड़ी की आवश्यकता थी। जब उनका ध्यान खेजड़ली गाँव के पास स्थित हरे-भरे पेड़ों की ओर दिलाया गया, तब उन्होंने राजकर्मचारियों को उन्हें काटने का आदेश दिया। जब राजकर्मचारियों ने वहाँ पहुँचकर उन पेड़ों को काटने का प्रयास किया, तब अमृता देवी नामक महिला ने उन्हें रोकने का प्रयास किया। उन्होंने पेड़ से लिपटकर पेड़ों को न काटने की प्रार्थना की, परंतु वे न माने। इसी प्रयास में अमृता देवी तथा उनकी तीन पुत्रियों को अपने जीवन से हाथ धोना पड़ा। इसके बाद गाँव के लोगों ने इसका विरोध किया और अपनी-अपनी जानें गँवा दीं, लेकिन पेड़ नहीं कटने दिए।

प्र.1 राजा को लकड़ी की आवश्यकता क्यों थी?

महल बनवाने के लिए ✓ — घर बनवाने के लिए — सजावट के लिए

प्र.2 राजकर्मचारी किसे काटना चाहते थे?

हरे-भरे पेड़ों को ✓ — सूखे पेड़ों को — छोटे-छोटे पेड़ों को

प्र.3 किसने राजकर्मचारियों को रोकने का प्रथम प्रयास किया?

अमृता देवी ने ✓ — खेजड़ली गाँव ने — तीन लड़कियों ने

प्र.4 'हाथ धोना' मुहावरे का क्या अर्थ है?

हाथ साफ़ करना — मृत्यु होना ✓ — अलग होना

प्र.5 'समर्थन' शब्द का विलोम रूप गद्यांश में से ढूँढ़कर लिखिए।

समर्थन—विरोध

हमने जाना

- अपठित गद्यांश पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त अन्य पत्र-पत्रिकाओं तथा पुस्तकों से लिए जाते हैं।
- ये विषयवस्तु की समझ में सहायक होते हैं।

आओ कुछ करें

दिए गए अपठित गद्यांशों को पढ़िए तथा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. सुख तथा दुख तो मन के विकल्प हैं। सुखी वह है, जिसका मन वश में है। दुखी वह है, जिसका मन परवश है। परवश होने का अर्थ है—खुशामद करना, दाँत निपोरना, चाटुकारिता, जी-हजूरी। जिसका मन अपने वश में नहीं, वही दूसरे के मन का मंथन करता है, अपने को छिपाने के लिए मिथ्या आडंबर रचता है और दूसरों को फँसाने के लिए जाल बिछाता है।

प्र.1 मन के विकल्प कौन-से हैं?

सुख　　दुख　　सुख तथा दुख दोनों

प्र.2 कैसा व्यक्ति सुखी होता है?

जिसका मन वश में हो　　जिसका मन परवश हो　　जिसका मन चंचल हो

प्र.3 परवश होने से क्या अभिप्राय है?

प्रशंसा करना　　खुशामद करना　　खुश रहना

प्र.4 अपने को छिपाने के लिए मिथ्या आडंबर कौन रचता है?

सुखी व्यक्ति　　दुखी व्यक्ति　　परोपकारी व्यक्ति

प्र.5 'जो दूसरे के वश में हो' उसके लिए एक शब्द क्या होगा?

पराधीन　　परवश　　पराभव

2. विश्व में क्रांति लानेवाले आविष्कारों में कंप्यूटर का आविष्कार महत्वपूर्ण है। कंप्यूटर का आविष्कार 19वीं सदी में चार्ल्स बैबेज ने किया था। यह एक यांत्रिक उपकरण है, इसके दो प्रमुख भाग हैं—सॉफ्टवेयर तथा हार्डवेयर। आज प्रत्येक क्षेत्र में कंप्यूटर का प्रयोग किया जा रहा है। बड़ी-बड़ी संख्याओं की गणना कंप्यूटर की सहायता से आसानी से की जा सकती है। कंप्यूटर ने मनुष्य के कार्य को सरल कर दिया है। सूचना और संचार के क्षेत्र में तो कंप्यूटर ने क्रांति ही ला दी है।

प्र.1 कंप्यूटर का आविष्कार किस प्रकार के आविष्कारों में महत्वपूर्ण है?

प्र.2 कंप्यूटर के आविष्कारक कौन थे?

प्र.3 कंप्यूटर किस प्रकार का उपकरण है?

प्र.4 कंप्यूटर मनुष्य के लिए किस प्रकार उपयोगी है?

प्र.5 दिए गए शब्दों के पर्यायवाची रूप गद्यांश में से ढूँढ़कर लिखिए—गिनती, तीव्र परिवर्तन।

32 अपठित पद्यांश

अपठित गद्यांश की भाँति अपठित पद्यांश भी पाठ्यपुस्तक से न लेकर अन्य पत्र-पत्रिकाओं तथा पुस्तकों आदि से लिए जाते हैं। पद्यांश किसी कविता के अंश होते हैं, जिससे संबंधित प्रश्न पूछे जाते हैं। विद्यार्थियों को उन प्रश्नों के उत्तर पद्यांश में से ही देने होते हैं। इसलिए, विद्यार्थियों को चाहिए कि वे पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसका मूलभाव समझकर ही प्रश्नों के उत्तर दें।

अपठित पद्यांशों के कुछ उदाहरण

पद्यांश 1

वंदनीय वह देश, जहाँ के देशी निज-अभिमानी हों,
बाँधवता में बँधे परस्पर, परता के अज्ञानी हों।
निंदनीय वह देश, जहाँ के देशी निज अज्ञानी हों,
सब प्रकार परतंत्र, पराई प्रभुता के अभिमानी हों॥

प्र.1 कवि ने किस प्रकार के देश को वंदनीय कहा है?
उ. कवि ने उस देश को वंदनीय कहा है, जिसके निवासी स्वाभिमानी होते हैं।

प्र.2 कवि ने किस प्रकार के देश को निंदनीय कहा है?
उ. कवि ने ऐसे देश को निंदनीय कहा है, जिसके निवासी स्वाभिमानी नहीं हैं।

प्र.3 वंदनीय देश के निवासी किस प्रकार रहते हैं?
उ. वंदनीय देश के निवासी परस्पर मिलजुलकर रहते हैं।

प्र.4 निंदनीय देश के निवासी किस प्रकार रहते हैं?
उ. निंदनीय देश के निवासी सभी प्रकार से परतंत्र होकर रहते हैं।

प्र.5 'प्रभुता' तथा 'अभिमानी' शब्दों में लगे प्रत्यय अलग कीजिए।
उ. प्रभु + ता, अभिमान + ई

पद्यांश 2

कोटि-कोटि कंठों से निकली, आज यही स्वरधारा है,
भारतवर्ष हमारा है यह, हिंदुस्तान हमारा है।
जिस दिन सबसे पहले जागे, नव-सिरजन के स्वप्न घने,

जिस दिन देश-काल के दो-दो, विस्तृत विमल वितान तने,
जिस दिन नभ में तारे छिटके, जिस दिन सूरज-चाँद बने,
तब से है यह देश हमारा, यह अभिमान हमारा है।

प्र.1 कोटि-कोटि कंठों से क्या स्वरधारा निकली है?

भारतवर्ष हमारा है | हिंदुस्तान हमारा है | इनमें दोनों ✓

प्र.2 कविता में कवि ने सूरज-चाँद का वर्णन किस संदर्भ में किया है?

भारत की प्राचीनता के ✓ | भारत की नवीनता के | भारत की सुंदरता के

प्र.3 'नव-सिरजन के स्वप्न घने' में विशेषण शब्द कौन-से हैं?

नव | घने | इनमें दोनों ✓

प्र.4 'यह अभिमान हमारा है' में अभिमान शब्द का क्या अर्थ है?

मद | घमंड | गर्व ✓

प्र.5 'कोटि-कोटि' शब्द में कौन-सा समास है?

द्विगु समास | द्वंद्व समास | अव्ययीभाव समास ✓

पद्यांश 3

हिमालय के आँगन में उसे, प्रथम किरणों का दे उपहार।
उषा ने हँस अभिनंदन किया, और पहनाया हीरक-हार।।
जगे हम, लगे जगाने विश्व, लोक में फैला फिर आलोक।
व्योम-तम पुंज हुआ तब नष्ट, अखिल संसृति हो उठी अशोक।।

प्र.1 उषा ने प्रथम किरणों का उपहार किसे दिया?

भारत को ✓ | मनुष्य को | विश्व को

प्र.2 विश्व में सर्वप्रथम ज्ञान का आगमन कहाँ हुआ?

अफ्रीका में | यूरोप में | भारत में ✓

प्र.3 विश्व में आलोक किस प्रकार फैला?

ज्ञान से ✓ | अज्ञान से | प्रकाश से

प्र.4 'व्योम-तम पुंज' किस प्रकार नष्ट हुआ?

ज्ञानरूपी प्रकाश से ✓ | सूरज की किरणों से | हीरक-हार से

प्र.5 'अखिल संसृति हो उठी अशोक' में विशेष्य शब्द कौन-सा है?

अखिल | संसृति ✓ | अशोक

हमने जाना

- अपठित पद्यांश पाठ्यपुस्तकों से इतर अन्य पुस्तकों अथवा पत्र-पत्रिकाओं से लिए जाते हैं।
- ये विषयवस्तु की समझ में सहायक होते हैं।

आओ कुछ करें

दिए गए अपठित पद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. हैं जन्म लेते जगह में एक ही, एक ही पौधा उन्हें है पालता।
रात में उनपर चमकता चाँद भी, एक ही-सी चाँदनी है डालता॥
मेह उनपर है बरसता एक-सा, एक-सी उनपर हवाएँ हैं बहीं।
पर सदा ही यह दिखाता है हमें, ढंग उनके एक-से होते नहीं॥

प्र.1 कविता में कवि ने फूल और काँटे में क्या समानता दिखाई है?

प्र.2 फूल और काँटे में भिन्नता का पता किस पंक्ति से चलता है?

प्र.3 चाँद फूल और काँटे से किस प्रकार भेदभाव नहीं करता?

प्र.4 'मेह' शब्द के दो समानार्थी रूप लिखिए।

प्र.5 दिए गए शब्दों के विलोम रूप पद्यांश में से ढूँढ़कर लिखिए—मृत्यु, दिन।

2. आ रही हिमालय से पुकार
है उदधि गरजता बार-बार
प्राची पश्चिम भू नभ अपार
सब पूछ रहे दिग-दिगंत
वीरों का कैसा हो वसंत?

फूली सरसों ने दिया रंग
मधु लेकर आ पहुँचा अनंग
वधु वसुधा पुलकित अंग-अंग
है वीर देश में किंतु कंत
वीरों का कैसा हो वसंत?

प्र.1 सागर गरजकर बार-बार क्या पूछ रहा है?

प्र.2 फूली सरसों ने क्या किया है?

प्र.3 किस पंक्ति से पता चलता है कि कामदेव मधु लेकर उपस्थित हो गया है?

प्र.4 प्रस्तुत पद्यांश से 'पति' तथा 'समुद्र' का समानार्थी रूप ढूँढ़कर लिखिए।

प्र.5 कौन-कौन पूछ रहा है कि वीरों का वसंत कैसा हो?

33 अनुच्छेद-लेखन

अनुच्छेद किसी एक ही विषय पर संक्षिप्त, परंतु स्पष्ट वर्णन होता है। इसमें किसी भी प्रकार का अनावश्यक विस्तार नहीं होता। जिस विषय पर अनुच्छेद लिखना हो, उसकी संक्षिप्त रूपरेखा बना लेनी चाहिए। छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग करना चाहिए। भाषा सरल तथा प्रभावशाली होनी चाहिए। अनुच्छेद-लेखन के लिए यदि शब्द-सीमा दी गई हो, तो उसी शब्द-सीमा में ही अनुच्छेद लिखना चाहिए।

अनुच्छेद-लेखन के कुछ उदाहरण पढ़िए तथा समझिए।

1. सच्चा मित्र

कवि रहीम ने कहा है—

कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीति।
बिपति-कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत॥

एक व्यक्ति के जीवन में बहुत-से ऐसे संगी-साथी होते हैं, जिन्हें वह अपना मित्र मानता है। परंतु, सच्चा मित्र वही होता है, जो विपत्ति के समय साथ देता है। सच्चा मित्र दुख के समय में साथ निभाता है। कष्ट की स्थिति में कन्नी काटनेवाला सच्चा मित्र नहीं हो सकता है। एक सच्चा मित्र विपत्ति में ढाल बनकर रक्षा करता है। वह सही-गलत, कर्तव्य-अकर्तव्य तथा अच्छे-बुरे की पहचान करवाता है। हम अगर उससे नाराज़ भी होते हैं, तब भी वह हमारा हित चाहता है। जब हम निराश होकर हार मान लेते हैं, तब हमारा उत्साह बढ़ाता है, हमें फिर से कर्म करने के लिए प्रेरित करता है, हमारी सफलता पर सबसे अधिक खुशी उसे होती है। एक सच्चा मित्र निस्स्वार्थी, सच्चा हितैषी और विश्वासपात्र होता है।

2. कंप्यूटर की उपयोगिता

कंप्यूटर आधुनिक युग का ऐसा आविष्कार है, जिसने मानव जीवन को अत्यंत सरल बना दिया है। आधुनिक समय में ऐसा कोई क्षेत्र नहीं, जहाँ कंप्यूटर का प्रयोग न होता हो। किसी सूचना को पाने, उसका संग्रह करने, उसे प्रेषित करने, उसका उपयोग करने तथा उसे सुरक्षित रखने में कंप्यूटर महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इस यांत्रिक उपकरण ने बड़ी-बड़ी गणनाओं को सरल बना दिया है। आंकड़ों का संग्रहण करने की सुविधा ने अनेक योजनाओं को बनाना सरल कर दिया है। मौसम की भविष्यवाणी, रेलवे टिकट की बुकिंग करना, परीक्षाओं का ब्योरा रखना, बिल जमा कराना, बैंक खातों आदि का परिचालन कंप्यूटर की सहायता से सरलता से संभव है। गीत, संगीत, चित्रकला आदि कौन-सा क्षेत्र है, जहाँ तक कंप्यूटर की पहुँच नहीं। कंप्यूटर आज के युग की अनिवार्यता बन गया है।

3. समाचार-पत्रों की उपयोगिता

समाचार-पत्र हमारे समाज का दर्पण है। इसमें समाज की सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक सभी छवियाँ दिखाई देती हैं। समाचार-पत्रों के दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक तथा वार्षिक कई प्रकार के संस्करण निकलते हैं। इनमें दैनिक पत्र अधिक लोकप्रिय हैं। समाचार-पत्रों में हमें प्रतिदिन स्थानीय,

राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर की सूचनाएँ मिलती रहती हैं। समाचार-पत्रों के द्वारा हमें विश्व स्तर पर हो रहे परिवर्तनों की सूचना मिलती है। खेल जगत, व्यापार जगत, सिनेमा, विज्ञान, कला आदि के समाचारों के साथ-साथ सभी सम-सामयिक घटनाओं पर भी इससे जानकारी मिलती रहती है। समाचार-पत्र, जनता की आवाज़ को अभिव्यक्ति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जन-जन तक इसकी पहुँच होने के कारण ये जनमानस में जागृति उत्पन्न करने के साथ-साथ उन्हें शिक्षित भी करते हैं।

4. महानगरों की यातायात समस्या

दिल्ली, मुंबई, कोलकाता तथा चेन्नई भारत के प्रमुख महानगर हैं। महानगरों का चकाचौंध तथा सुख-सुविधाओं से पूर्ण जीवन सभी को अपनी ओर आकर्षित करता है। इसके चलते महानगरों में जनसंख्या बढ़ती जा रही है। बढ़ती हुई जनसंख्या ने इन शहरों में यातायात की समस्या को जन्म दिया है। विद्यार्थियों का विद्यालय आने-जाने तथा कर्मचारियों के आने-जाने का समय समान रहने के कारण उस समय वाहनों की कतारें सड़कों पर देखने को मिलती हैं, जिससे भीषण जाम की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। जल्दी पहुँचने के लिए लोग यातायात के नियमों का उल्लंघन करके स्थिति को अधिक शोचनीय बना देते हैं। घंटों तक लोगों को जाम की स्थिति से राहत नहीं मिलती। वर्षा ऋतु में स्थान-स्थान पर पानी के भराव से यह स्थिति और भी विकट हो जाती है। इस समस्या के समाधान के लिए आवश्यक है कि मौजूदा परिवहन-प्रणाली को सुधारा जाए।

5. जैसी करनी वैसी भरनी

करता था सो क्यों किया, अब कर क्यों पछिताय।
बोया पेड़ बबूल का, आम कहाँ से खाय॥

जिस प्रकार बबूल का पेड़ बोने पर आम की प्राप्ति नहीं हो सकती, उसी प्रकार बुरे कार्य को करके अच्छे फल की प्राप्ति नहीं हो सकती। व्यक्ति जैसे कर्म करता है, उसे वैसे ही फल की प्राप्ति होती है। बुराई का फल बुरा तथा अच्छाई का फल अच्छा होता है। बुराई का फल क्षणिक सुखदाई होता है और अच्छाई का फल अनंत काल तक सुख देता है। स्वामी विवेकानंद, मदर टेरेसा आदि को उनके अच्छे कार्यों के लिए आज भी याद किया जाता है। बुरे कर्म करनेवालों को उनकी बुराई का फल देर-सवेर अवश्य भोगना पड़ता है। जैसी करनी, वैसी भरनी, इसलिए सदा अच्छे कर्म ही करने चाहिए।

6. रोबोट

रोबोट एक प्रकार का मानवरूपी यंत्र होता है, जिसे कंप्यूटर द्वारा संचालित किया जाता है। यह कंप्यूटर द्वारा दिए गए दिशा-निर्देशों के आधार पर मानव के लिए विभिन्न कार्य एक आज्ञाकारी सेवक की भाँति करता है। बातचीत कर सकता है, खाना बना सकता है, कपड़े धो सकता है, सफ़ाई कर सकता है तथा और भी अनेक कार्य कर सकता है। आणविक और रासायनिक जैसे क्षेत्रों में जिन कार्यों को करने में मनुष्य को खतरा होता है, उन्हें रोबोट से ही कार्य करवाया जा रहा है। रोबोट अधिक गति, निपुणता तथा सक्षमता के साथ लगातार कई घंटे कार्य कर सकता है। आधुनिक समय में रोबोट का प्रयोग सर्जरी, निर्माण-कार्य, अनुसंधान, उत्पादन तथा हथियारों आदि के निर्माण में किया जा रहा है। एक रोबोट कई श्रमिकों के बराबर कार्य करता है। रोबोट के लाभकारी कार्यों को देखते हुए आवश्यकता है उनका सही उपयोग करने की।

7. आदर्श विद्यार्थी

हमारे प्राचीन ग्रंथों में आदर्श विद्यार्थी के पाँच लक्षण बताए गए हैं—

काक चेष्टा, बको ध्यानं, श्वान निद्रा तथैव च।
अल्पाहारी, गृहत्यागी, विद्यार्थी पंच लक्षणम्॥

अर्थात एक आदर्श विद्यार्थी, वह विद्यार्थी होता है, जो कौए की भाँति अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की निरंतर चेष्टा करता रहता है। बगुले की भाँति अपने लक्ष्यप्राप्ति के लिए निरंतर ध्यान लगाए रहता है। श्वान (कुत्ते) की भाँति निद्रा में भी सजग रहता है। कम मात्रा में भोजन करता है तथा विद्यार्जन के लिए गृहत्याग से भी नहीं हिचकता। इस प्रकार आदर्श विद्यार्थी वह विद्यार्थी होता है जो सर्वप्रथम अपने जीवन के लक्ष्य का निर्धारण करता है, तत्पश्चात उसे प्राप्त करने का कठिन प्रयास करता है। वह दूसरों के समक्ष अनुशासित जीवन का एक आदर्श प्रस्तुत करता है।

8. स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा धन

स्वस्थ शरीर एक नियामत है, एक अनमोल खज़ाना है। यह एक ऐसी पूँजी है जिससे जीवन के सुखों को खरीदा जा सकता है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है। एक अस्वस्थ व्यक्ति जहाँ सदा कुंठित जीवन जीता है, वहीं एक स्वस्थ व्यक्ति सदा प्रसन्नचित्त रहता है। वह अपने परिवार, समाज तथा राष्ट्र के लिए कई रचनात्मक कार्य कर सकता है तथा उसकी उन्नति तथा प्रगति में सहायक हो सकता है। स्वस्थ व्यक्ति की कार्यक्षमता अधिक होती है। वह अपनी ऊर्जा को रचनात्मक कार्यों में लगाकर अपने साथ-साथ अन्य लोगों को भी लाभ पहुँचा सकता है। वह जीवन में आनेवाली चुनौतियों का सहज रूप से मुकाबला कर सकता है। स्वस्थ शरीर द्वारा ही सभी सांसारिक सुखों का वास्तविक उपभोग किया जा सकता है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए सदा नियमित रूप से योग तथा व्यायाम करना चाहिए। शुद्ध तथा संतुलित भोजन करना चाहिए।

हमने जाना

- अनुच्छेद किसी एक ही विषय पर संक्षिप्त, परंतु स्पष्ट वर्णन होता है।
- अनुच्छेद लिखने से पहले हमें उसकी संक्षिप्त रूपरेखा बना लेनी चाहिए।

आओ कुछ करें

दिए गए विषयों पर अनुच्छेद लिखिए।

क. वन-महोत्सव
ख. दिल्ली में एक शाम
ग. सूरजकुंड का मेला
घ. पुस्तक की आत्मकथा
ङ. आतंकवाद—एक समस्या
च. जीवन में परोपकार का महत्व

34 सूचना-लेखन

सूचना से अभिप्राय है—किसी के बारे में सूचित करना। किसी जानकारी को औपचारिक रूप से कम-से-कम शब्दों में लिखना सूचना-लेखन कहलाता है। सूचनाएँ विद्यालय, कार्यालय अथवा विभाग के सूचनापट पर लगाई जाती हैं।

सूचना-लेखन का प्रारूप

संस्था का नाम

सूचना

दिनांक

शीर्षक

विषयवस्तु

सूचना देनेवाले का नाम/पद

सूचना-लेखन का उदाहरण

सरस्वती विद्यालय, झड़ौदा कलां

सूचना

18/11/20...

चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि दिनांक 23/11/20... को विद्यालय परिसर में एक चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। इच्छुक विद्यार्थी कला अध्यापिका रेणु वर्मा से 20/11/20... तक संपर्क कर अपना नाम लिखवा दें।

आरती शर्मा

कोऑर्डिनेटर

सूचना-लेखन के कुछ अन्य उदाहरण

केंद्रीय विद्यालय, बेगूसराय

सूचना

25/02/20...

परीक्षा-स्थगन की सूचना

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि आगामी सप्ताह होनेवाली परीक्षाएँ किसी कारणवश स्थगित कर दी गई हैं। नई तिथि की घोषणा शीघ्र ही कर दी जाएगी।

प्रधानाचार्य

नवोदय बाल विद्यालय, दिल्ली कैंट

सूचना

10/09/20...

पिकनिक पर जाने हेतु सूचना

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि विद्यालय 14/09/20... को एकदिवसीय पिकनिक का आयोजन कर रहा है। विद्यार्थी अक्षरधाम मंदिर में प्रदर्शनी तथा संगीतमय फ़व्वारे का आनंद ले सकेंगे। इच्छुक विद्यार्थी नाम तथा शुल्क की राशि (150 रुपये) अपने कक्षाध्यापक के पास 12/09/20... तक जमा करवा दें। इस तिथि के बाद दिए गए नामों पर विचार नहीं किया जाएगा।

अनंता गोस्वामी
प्रभारी

कृष्णा हाई स्कूल, मुरादनगर

सूचना

18/08/20...

अंतरविद्यालयी क्रिकेट मैच का आयोजन

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि एक अंतरविद्यालयी क्रिकेट मैच का आयोजन किया जा रहा है। इसमें भाग लेने के इच्छुक विद्यार्थियों के नाम आमंत्रित हैं।

क्रिकेट मैच से संबंधित अन्य जानकारी इस प्रकार है—

दिनांक	28/08/20...
समय	प्रातः 8 बजे से आरंभ
स्थान	विद्यालय परिसर
नामांकन की अंतिम तिथि	22/08/20...

इच्छुक विद्यार्थी हस्ताक्षरकर्ता से संपर्क करें।

आदित्य साहनी
अध्यक्ष
खेल समिति

हमने जाना

- किसी जानकारी को औपचारिक रूप से कम-से-कम शब्दों में लिखना सूचना-लेखन कहलाता है।

आओ कुछ करें

1. दिए गए बिंदुओं के आधार पर सूचना लिखिए।

विद्यालय	आदर्श विद्यापीठ, सरिता विहार	समय	25/02/20..., प्रातः 11 बजे
शीर्षक	छात्र समिति की बैठक	विषय	विद्यार्थियों की समस्याएँ
स्थान	कला कक्ष	सूचना प्रदाता	राजीव रॉय, अध्यक्ष, छात्र समिति

____

सूचना

23/02/20...

____

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि __________ को, प्रातः __________

छात्र __________ कला __________ में होगी। इसमें __________

__________ पर चर्चा होगी। सभी सदस्यों की उपस्थिति अनिवार्य है।

राजीव रॉय

____

2. रायबहादुर विद्यालय टिकरी कलां में 14/09/20... से 28/09/20... तक हिंदी पखवाड़ा मनाया जा रहा है। इस दौरान होनेवाली गतिविधियों; जैसे—हिंदी निबंध-लेखन, भाषण प्रतियोगिता, हिंदी देशभक्ति गीत आदि की जानकारी देते हुए पी० सी० मित्तल, अध्यक्ष, हिंदी विभाग की ओर से सूचना लिखिए।

हिंदी पखवाड़ा मनाने हेतु सूचना

दिनांक

पी० सी० मित्तल

3. आप फीस जमा करवाने के लिए रुपये लाए थे। दुर्भाग्यवश वे रुपये विद्यालय प्रांगण में कहीं गिर गए। इस संबंध में कक्षाध्यापिका की ओर से सूचना जारी कीजिए।

35 विज्ञापन-लेखन

उपर्युक्त चित्र के आधार पर इन प्रश्नों का उत्तर दीजिए—

- इसमें कोरोना महामारी को भगाने की बात की गई है। हाँ/नहीं
- कोरोना एक सामाजिक मुद्दा है। हाँ/नहीं
- यह चित्र जन-चेतना उत्पन्न कर रहा है। हाँ/नहीं

इस चित्र में सामाजिक मुद्दे पर जन-चेतना जगाने का प्रयास किया गया है।

वह साधन, जिसके द्वारा उत्पादक अपने द्वारा निर्मित वस्तुओं के प्रति, संस्थाएँ अपने प्रचार-प्रसार तथा सामाजिक मुद्दों पर जन-जागृति उत्पन्न करने आदि से संबंधित सूचना प्रेषित करता है, विज्ञापन-लेखन कहलाता है।

समाचार-पत्रों, टी॰वी॰ आदि पर अनेक प्रकार के विज्ञापन प्रदर्शित होते हैं; जैसे—वैवाहिक विज्ञापन, रिक्तियाँ, खोया-पाया, विभिन्न उत्पादों से संबंधित विज्ञापन आदि। विज्ञापनों का उद्देश्य उपभोक्ता तथा जनमानस को आकर्षित करना होता है।

विज्ञापन की प्रमुख विशेषताएँ

- विज्ञापन बनाते समय कम-से-कम शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।
- विज्ञापन आकर्षक तथा स्पष्ट होना चाहिए।
- उत्पाद की विशेषताएँ स्पष्ट होनी चाहिए।

विज्ञापनों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं—

अरेना शैंपू

विशेष ऑफ़र
एक के साथ
एक मुफ़्त
पाइए।

अरेना शैंपू लगाइए। सुंदर, स्वस्थ और घने बाल पाइए।

विशेष छूट
10%

सस्ता और टिकाऊ
स्नोमैन कूलर

गरमी में भी शिमला का अहसास,
स्नोमैन कूलर हो जब पास।

एक बार लगाइए,
सालों ठंडी हवा पाइए।

हमने जाना

- विज्ञापन जनमानस को आकर्षित करते हैं।
- विज्ञापनों द्वारा सामाजिक चेतना भी उत्पन्न की जा सकती है।

आओ कुछ करें

दिए गए विषयों पर आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए।

क. आपने कपड़ों का नया शोरूम खोला है। विज्ञापन तैयार कीजिए।

ख. किसी मोबाइल फोन का आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए।

ग. नहाने के साबुन की विशेषताएँ बताते हुए विज्ञापन बनाइए।

घ. गरमियों में किसी ठंडे पेय पदार्थ का विज्ञापन तैयार कीजिए।

36 पत्र-लेखन

प्रिय अभिषेक
दीपावली की
हार्दिक शुभकामनाएँ
तुम्हारा मित्र
सुमित

सेवा में
श्रीमान अभिषेक मिश्रा
16-सी/2, विकासपुरी
नई दिल्ली—110018

पोस्टकार्ड

प्रेषक
अनंत कुमार
253, जनकपुरी
नई दिल्ली—110058

सेवा में
प्रधानाचार्य
डी॰ए॰वी॰ विद्यालय
रोहिणी, सेक्टर-5
नई दिल्ली—110085

लिफ़ाफ़ा

पत्र हमारे विचारों की अभिव्यक्ति का एक साधन है। मोबाइल तथा ई-मेल की बढ़ती लोकप्रियता से पत्र-लेखन कम अवश्य हुआ है, परंतु इसकी उपयोगिता तथा महत्व में कमी नहीं आई है।

पत्रों के प्रकार

पत्र दो प्रकार के होते हैं—औपचारिक पत्र तथा अनौपचारिक पत्र।

औपचारिक पत्र का प्रारूप तथा नमूना

प्रारूप	नमूना
भेजनेवाले का पता	151 बी, मानसरोवर गार्डन, नई दिल्ली, पिन—110015
तिथि	18/04/20...
पत्र पानेवाले का नाम एवं पता	सेवा में प्रधानाचार्य न्यू वैली स्कूल देहरादून
विषय	**विषय** प्रवेश-संबंधी जानकारी हेतु पत्र
संबोधन	महोदय
विषयवस्तु	सविनय निवेदन है कि मेरा पुत्र स्थानीय विद्यालय में कक्षा 7 का छात्र है। मैं इसे देहरादून में आपके विद्यालय में प्रवेश दिलाना चाहता हूँ। प्रवेश-संबंधी आवश्यक जानकारी देने की कृपा करें।
आभार	धन्यवाद
समापन शब्द	भवदीय
भेजनेवाले का नाम	अमृत राय

औपचारिक पत्र	अनौपचारिक पत्र
प्रधानाचार्य को लिखे पत्र	परिवार के सदस्यों को लिखे पत्र
संपादक को लिखे पत्र	मित्रों को लिखे पत्र
पदाधिकारियों को लिखे पत्र	जान-पहचानवालों को लिखे पत्र
विक्रेता को लिखे पत्र	संबंधियों को लिखे पत्र
शिकायती पत्र, व्यावसायिक पत्र	बधाई-पत्र, शुभकामना पत्र

औपचारिक पत्रों के कुछ उदाहरण

1. विभाग बदलने की प्रार्थना करते हुए प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए।

सेवा में
प्रधानाचार्य
राजकीय कन्या विद्यालय, तिमारपुर
नई दिल्ली—110054

दिनांक 18/07/20...

विषय विभाग परिवर्तन हेतु प्रार्थना-पत्र

मान्यवर महोदय

सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय की कक्षा 7 'अ' की छात्रा हूँ। मेरी चचेरी बहन कक्षा 7 'ब' में पढ़ती है। हम संयुक्त परिवार में रहते हैं। हमारे पास पुस्तकों का भी एक ही सेट है। यदि आप मेरा विभाग बदलकर 'ब' कर दें, तो हमें सुविधा होगी तथा हम दोनों मिलकर एक ही पुस्तक से पढ़ पाएँगी। हमारे पिताजी पुस्तकों के दो सेट लेने में असमर्थ हैं।

धन्यवाद

भवदीया
आभा शर्मा
कक्षा 7 'अ', अनुक्रमांक-12

2. पुस्तक विक्रेता से पुस्तकें मँगवाने के लिए पत्र लिखिए।

28/2, रोहिणी, सेक्टर 15
नई दिल्ली—110089
दिनांक 24/07/20...

सेवा में
विक्रय प्रबंध निदेशक
भारती भवन प्रकाशन
नोएडा—201307

विषय पुस्तकें मँगवाने के लिए पत्र

मान्यवर महोदय

'भारती भवन' द्वारा प्रकाशित पुस्तकें अत्यंत उच्चकोटि की, सरल तथा आकर्षक हैं। मुझे कुछ पुस्तकों की आवश्यकता है। कृपया उन्हें स्पीड पोस्ट से भेजने का प्रबंध करें।

वाटिका	कक्षा 1 से 8	एक-एक प्रति
व्याकरण भारती	कक्षा 6 से 8	एक-एक प्रति

पुस्तकों का मुद्रित मूल्य मैं चेक द्वारा भेज रहा हूँ।

भवदीय

अजय जैन

3. अपनी रचना प्रकाशनार्थ भेजते हुए 'अनमोल' पत्रिका के संपादक के नाम एक पत्र लिखिए।

8/12, आकाश कुंज
नई दिल्ली, पिन—110027

28/04/20...

सेवा में
संपादक महोदय
अनमोल पत्रिका
वसुंधरा, गाज़ियाबाद—201012
उत्तर प्रदेश

विषय रचना प्रकाशनार्थ पत्र

महोदय

सविनय निवेदन यह है कि मैं आपकी लोकप्रिय पत्रिका 'अनमोल' का नियमित पाठक हूँ। मैं अपनी एक मौलिक तथा अप्रकाशित रचना इस पत्रिका में छपवाना चाहता हूँ, जिसे मैं पत्र के साथ संलग्न कर रहा हूँ। आशा है, यह रचना आपको पसंद आएगी तथा आप इसे अपनी पत्रिका में स्थान देंगे।

धन्यवाद

भवदीय

महेश कुमार

4. डाकिए की शिकायत करते हुए डाकपाल को पत्र लिखिए।

बी 1/13, रमेश नगर
नई दिल्ली—110015

दिनांक 21/09/20...

सेवा में
डाकपाल महोदय

रमेश नगर डाकघर
रमेश नगर
नई दिल्ली—110015

विषय डाकिए की शिकायत-संबंधी पत्र

मान्यवर महोदय

सविनय निवेदन यह है कि हमारे मोहल्ले में जिस डाकिए की ड्यूटी लगी है, वह अपना कार्य पूर्ण निष्ठा के साथ नहीं करता है। वह कई-कई दिन डाक बाँटने नहीं आता। डाक अधिक होने पर वह पत्रों को इधर-उधर फेंक देता है। कई पत्र हमें कूड़े के ढेर में पड़े मिले हैं। उसकी इसी लापरवाही के कारण नौकरी प्राप्त करने का अवसर मेरे हाथ से निकल गया।

आपसे निवेदन है कि आप इस संबंध में उचित कार्यवाही करें तथा दोषी डाकिए को लापरवाही से कार्य करने के लिए उचित दंड दें।

भवदीय

विलास राय
'अध्यक्ष' नगर वेलफ़ेयर एसोसिएशन

अनौपचारिक पत्र

अनौपचारिक पत्र का प्रारूप तथा नमूना

प्रारूप	**नमूना**
भेजनेवाले का पता	शिव निवास, 16बी, विकासपुरी नई दिल्ली—110018
दिनांक	28/03/20...
संबोधन	आदरणीय पिताजी
अभिवादन	सादर प्रणाम
विषयवस्तु	बहुत दिनों से आपका पत्र नहीं आया। मैं आपकी कुशलता जानने को आतुर हो रहा हूँ। इसीलिए, यह पत्र लिख रहा हूँ। हम यहाँ पर स्वस्थ तथा सकुशल हैं। आपका स्वास्थ्य कैसा है? काम की अधिकता के कारण पत्र नहीं लिख सके या अन्य कोई कारण है? पत्र का उत्तर शीघ्र दें।
समापन	पत्र की प्रतीक्षा में
पत्र पानेवाले से संबंध	आपका बेटा
भेजनेवाले का नाम	रामामूर्ति

अनौपचारिक पत्रों के कुछ अन्य उदाहरण

1. अपने नए घर के गृहप्रवेश पर आमंत्रित करते हुए मित्र को पत्र लिखिए।

एफ-122, विकास कुंज
विकासपुरी, नई दिल्ली—110018

25/03/20...

प्रिय मित्र

सप्रेम नमस्ते

तुम्हें यह जानकर हर्ष होगा कि हमारा नया घर बनकर तैयार हो गया है। यह बिलकुल ऐसा ही बना है, जैसा कि मैं चाहता था। हमारे नए घर का गृहप्रवेश 13/04/20... को होना निश्चित हुआ है। प्रातः हवन होगा तथा दोपहर को प्रीतिभोज होगा। तुम्हारा वहाँ उपस्थित होना अनिवार्य है। सारे कार्य तुम्हें ही करने हैं।

अंकल तथा आंटी को भी साथ लेकर आना। मैं उत्सुकता से तुम्हारे आने की राह देख रहा हूँ।

तुम्हारा मित्र

शुभम पांडेय

2. व्यायाम का महत्व बताते हुए अपने छोटे भाई को पत्र लिखिए।

माल रोड, शिमला

28/11/20...

प्रिय शैलेश

शुभाशीष

पिताजी का पत्र मिला था। उन्होंने बताया कि तुम दिन-प्रतिदिन कमज़ोर होते जा रहे हो। मुझे लगता है तुमने व्यायाम की पुरानी आदत छोड़ दी है। मेरे प्रिय भाई, सदा याद रखो कि स्वस्थ रहने के लिए व्यायाम बहुत ज़रूरी है। व्यायाम हमारे तन-मन को स्वस्थ तथा नीरोग बनाता है। इससे हमारे शरीर में रक्त का संचार भली प्रकार से होता है, शरीर में चुस्ती-फुरती आती है। हमारे अंदर उत्साह उत्पन्न होता है तथा पढ़ाई में एकाग्रता आती है।

अब तुम नियमित रूप से कम-से-कम आधा घंटा व्यायाम करना शुरू कर दो। कुछ ही दिनों में तुम स्वयं में बदलाव अनुभव करोगे। माँ और पिताजी को मेरा प्रणाम कहना। तुम्हें ढेर-सा प्यार।

तुम्हारा अग्रज
आकाश मेहता

3. नव वर्ष की शुभकामना देते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए।

नरेला

नई दिल्ली—110036

01/01/20...

प्रिय मनवीर

नमस्कार

नव वर्ष के आगमन की शुभकामनाएँ मैं सर्वप्रथम अपने प्रिय मित्र को देना चाहता था। इसलिए, तुम्हें पत्र लिख रहा हूँ। ईश्वर करे कि आनेवाला वर्ष तुम्हारे लिए मंगलमय हो तथा ढेर सारी खुशियाँ लेकर आए। तुम्हें जीवन में वह सबकुछ प्राप्त हो, जो तुम पाना चाहते हो। घर में भी सुख-समृद्धि हो।

मेरी ओर से आंटी-अंकल तथा परिवार के सभी सदस्यों को नव वर्ष की शुभकामनाएँ देना। माँ-पिताजी की ओर से भी तुम्हें ढेरों आशीष तथा शुभकामनाएँ।

तुम्हारा मित्र

अरुण

हमने जाना

- पत्र हमारी विचाराभिव्यक्ति का साधन है।
- पत्र औपचारिक तथा अनौपचारिक होते हैं।

आओ कुछ करें

1. प्रधानाचार्य को कक्षा में समुचित प्रकाश व्यवस्था के लिए लिखे पत्र को पूरा कीजिए।

सेवा में

____

____

____

दिनांक ________________

____

सविनय निवेदन यह है कि हमारी कक्षा में एक ही ट्यूबलाइट लगी है, जिससे पूरे कमरे में पर्याप्त रोशनी नहीं होती। इससे हमारी आँखों पर बहुत ज़ोर पड़ता है। पीछे बैठे छात्रों को श्यामपट पर लिखा सही-सही दिखाई नहीं देता। आपसे विनम्र प्रार्थना है कि कक्षा में प्रकाश की समुचित व्यवस्था के लिए कुछ अतिरिक्त लाइट लगवाने का कष्ट करें।

____

____

____

2. **अपने विद्यालय में हुए वार्षिकोत्सव का वर्णन करते हुए अपने चाचाजी को पत्र लिखिए।**

189/बी, वसंत विहार

नई दिल्ली

दिनांक ____________________

आदरणीय __________________

____

कल हमारे विद्यालय का वार्षिकोत्सव था। ____

____

____

____

____

____

____

आपका प्रिय भतीजा

____

3. अपने नए मित्र के बारे में बताते हुए अपनी बड़ी बहन को पत्र लिखिए।
4. सफ़ाई की अव्यवस्था के संबंध में नगर निगम के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए।
5. अनुशासन का महत्व समझाते हुए अपने छोटे भाई को पत्र लिखिए।

कार्यकलाप

आप अपने मित्र को अथवा अपने घर के पते पर दो पत्र लिखिए। एक के पते में पिनकोड लिखें तथा दूसरा बिना पिनकोड के लिखें। उन्हें लेटर बॉक्स में डालें। देखें कौन-सा पत्र आपको पहले मिलता है। इसका कारण जानने का प्रयास करें।

जाना-समझा

औपचारिक पत्रों में अभिवादन नहीं होता। विद्यार्थी अपने प्रधानाचार्य को लिखे पत्र में अपना पता देने के स्थान पर पत्र की समाप्ति पर अपनी कक्षा, विभाग तथा अनुक्रमांक दें।

37 निबंध-लेखन

नि + बंध, अर्थात भली प्रकार से बँधा हुआ। किसी विषय का संपूर्णता के साथ इस प्रकार वर्णन करना कि विषय रोचक तथा सजीव लगे, निबंध कहलाता है। एक निबंध लिखते समय सर्वप्रथम उसकी रूपरेखा बना लेनी चाहिए। उस रूपरेखा के आधार पर उस विषय को विस्तार देना चाहिए। निबंध की भाषा सरल होनी चाहिए। वाक्य-विन्यास छोटे होने चाहिए तथा मुहावरे, लोकोक्तियों आदि से उसे आकर्षक रूप देना चाहिए। निबंध का आरंभ, मध्य तथा अंत का भाग परस्पर संबंधित होना चाहिए।

निबंध के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं—

1. वर्षा ऋतु

रूपरेखा—भूमिका...प्रमुख ऋतुएँ...ग्रीष्म ऋतु...वर्षा का आगमन...जन-जीवन में मुख्य परिवर्तन... लाभ...हानियाँ...उपसंहार।

भूमिका—भारत प्राकृतिक विविधता का देश है। इसमें विभिन्न ऋतुएँ समय-समय पर अपनी छटा बिखेरती रहती हैं। हमारे देश में मुख्य रूप से छह ऋतुएँ बारी-बारी से आती हैं। ये छह ऋतुएँ हैं— वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत और शिशिर।

वसंत ऋतु में मौसम बहुत सुहावना रहता है, परंतु ग्रीष्म ऋतु में धरती गरम तवे की तरह तपने लगती है। ताल, सरोवर सूख जाते हैं। गरम हवाएँ चलती हैं, घर के बाहर निकलना मुश्किल हो जाता है। तापमान बढ़ जाता है। जीवन दूभर हो जाता है।

गरमी के बाद जब वर्षा की पहली बूँद धरा पर आती है, तो जन-जन में राहत आ जाती है। वर्षा की बूँदों से मिट्टी की सौंधी सुगंध मन मोह लेती है। काले-काले बादलों का गर्जन तथा बिजली की कड़क आनंद के नगाड़े प्रतीत होते हैं, जिससे जीवन में उत्साह की लहर दौड़ जाती है। बच्चे, बड़े सभी वर्षा का आनंद उठाने लगते हैं। धरती पर नई कोपलें खिलने लगती हैं। मोर नाचने लगते हैं, मेंढक उछल-कूद मचाते अपनी प्रसन्नता जाहिर करने लगते हैं।

नदियों, ताल, सरोवरों में पानी भर जाता है। सूखे पड़े खेत-खलिहान लहलहा उठते हैं। भू-जल का स्तर बढ़ जाता है। गरमी की ऋतु की धूल, मिट्टी साफ़ हो जाती है। पेड़-पौधे, वनस्पति सब अपनी चमक लुटाने लगते हैं। जनमानस में उत्साह का संचार होता है। उन्हें नया जीवन मिलता है।

वर्षा जब तक अपनी सीमा में रहती है, तब तक अपना मनोरम रूप दिखाती है, परंतु जैसे ही वह अपनी सीमा-रेखा तोड़ देती है, वैसे ही यह बाढ़ आदि के रूप में भयंकर तबाही लाती है। इससे अनेक बीमारियाँ फैलती हैं, कच्चे घर गिर जाते हैं। जलभराव से आने-जाने में असुविधा होती है, भू-कटाव से रास्ते अवरुद्ध हो जाते हैं तथा जनजीवन अस्तव्यस्त तथा कष्टकारी हो जाता है।

उपसंहार—प्रत्येक सिक्के के दो पहलू होते हैं। वर्षा ऋतु के यदि लाभ हैं, तो हानियाँ भी हैं। परंतु, इसके लाभ इसकी हानियों से अधिक हैं। वर्षा ऋतु मानव जीवन का आधार है। वर्षा को आकर्षित करने

के लिए पेड़ लगाने चाहिए तथा वर्षाजल का समुचित संरक्षण करना चाहिए।

2. परिश्रम का महत्व

रूपरेखा—भूमिका...परिश्रम का अर्थ...लाभ...उदाहरण...महत्व...उपसंहार।

भूमिका—नेपोलियन बोनापार्ट के शब्दों में, 'असंभव शब्द केवल बेवकूफ़ों के शब्दकोश में पाया जाता है।' इसका अर्थ है कि किसी भी कार्य को करना असंभव नहीं होता। अपने परिश्रम के बल पर हम प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। मन लगाकर किया गया शारीरिक तथा मानसिक कार्य ही परिश्रम है।

मनुष्य ही नहीं, प्रकृति का प्रत्येक कण परिश्रम से परिपूर्ण है। छोटे-से जीव चींटी को ही लीजिए, वह दिन-रात कठिन परिश्रम करती है। मनुष्य तो मनुष्य है। परिश्रम के बल पर ही मनुष्य निरंतर उन्नति तथा विकास करता है। परिश्रम में ही जीवन की सार्थकता है। केवल सोचने मात्र से कुछ नहीं होता, करके ही सफलता प्राप्त की जा सकती है। दशरथ मांझी ने अपने परिश्रम के बल पर ही पहाड़ को काटकर समतल सड़क बना दी। परिश्रम के बल पर ही इंजीनियर बड़ी-बड़ी इमारतें, लंबे-चौड़े पुल बना देते हैं। एवरेस्ट पर विजय पताका फहराने वाले तेनजिंग ने अपने परिश्रम के बल पर ही यह सफलता प्राप्त की थी। खेलों में भारत का गौरव बढ़ाने वाले खिलाड़ियों को क्या विजयश्री सहज ही प्राप्त हो गई होगी? नहीं, इसके पीछे उनके दिन-रात के परिश्रम का हाथ है। जीवन में सफलता का फल वही चखता है जो परिश्रमी होता है।

परिश्रमी व्यक्ति ही अपने लक्ष्य की सिद्धि कर सकते हैं। देश का गौरव बढ़ा सकते हैं। परहित की सोच सकते हैं। परिश्रमी व्यक्ति ही समय के महत्व को समझते हैं तथा उसका उपयोग करते हैं।

परिश्रमी व्यक्ति न केवल धन तथा यश की प्राप्ति करते हैं, बल्कि वे आत्मिक शांति भी प्राप्त करते हैं। वे दूसरों के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। उनका अंतःकरण पवित्र तथा विचार शुद्ध हो जाते हैं।

उपसंहार—किसान का परिश्रम धरती से सोना उगलता है। वैज्ञानिकों का परिश्रम अंतरिक्ष तक पहुँचा देता है। स्वयं की तथा देश की उन्नति तथा प्रगति के मूल में परिश्रम ही है। परिश्रमी व्यक्ति ही अपने भाग्य का निर्माता होता है। राष्ट्रकवि दिनकर ने कहा है—

"प्रकृति नहीं डरकर झुकती है, कभी भाग्य के बल से।
सदा हारती वह मनुष्य के उद्यम से, श्रमजल से॥"

3. हमारा आधार, हमारी पहचान

रूपरेखा—भूमिका...आधार क्या है?...किसके द्वारा जारी...लाभ...उपसंहार।

भूमिका—विद्यालय में प्रवेश के लिए, बैंक खाता खोलने के लिए तथा और भी महत्वपूर्ण कार्यों के लिए हमें जन्म प्रमाण-पत्र, निवास प्रमाण-पत्र तथा परिचय-पत्र आदि दिखाने होते हैं। ये सभी प्रमाण-पत्र हमारी पहचान बताते हैं। भारत सरकार ने भारतीय नागरिकों की पहचान को बताने के लिए एक कार्ड लागू किया है, जिसे हम आधार कार्ड कहते हैं। आधार कार्ड एक ऐसा महत्वपूर्ण पहचान-पत्र है, जो हमें अनूठी पहचान प्रदान करता है।

भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण द्वारा जारी किए गए इस कार्ड पर 12 अंकों की विशिष्ट संख्या छपी होती है। यही अंक हमारी पहचान का आधार है। यह व्यक्ति विशेष की पहचान को उजागर करता है। इसे भारत सरकार ने एक विशेष तथा आवश्यक पहचान के रूप में लागू किया था।

आधार कार्ड में व्यक्ति की बायोमेट्रिक जानकारी दर्ज की जाती है। बायोमेट्रिक तरीका नकली दस्तावेज़ों की समस्या से छुटकारा दिलाता है। इसे बिना किसी लिंग अथवा आयु के भेदभाव के सभी नागरिक प्राप्त कर सकते हैं।

आधार कार्ड आधुनिक समय में सभी आवश्यक सेवाओं के लिए अनिवार्य है। इसके द्वारा सरकारी सेवाओं का लाभ उठाया जा सकता है।

उपसंहार—आधार कार्ड को जन्म प्रमाण-पत्र, पहचान प्रमाण-पत्र तथा निवास प्रमाण-पत्र के रूप में प्रयोग कर सकते हैं, क्योंकि आज हमारा आधार हमारी पहचान बन चुका है।

4. विज्ञापनों की दुनिया

रूपरेखा—भूमिका...अर्थ...प्रकार...लाभ...कहाँ-कहाँ प्रदर्शित होते हैं...हानियाँ...उपसंहार।

भूमिका—विज्ञापन शब्द 'वि' तथा 'ज्ञापन' शब्दों से मिलकर बना है। इसका अर्थ होता है विशिष्ट या विशेष जानकारी देना। आधुनिक समय में विज्ञापन विश्वपटल पर इस प्रकार छा गए हैं कि आज की दुनिया विज्ञापनों की दुनिया ही लगती है।

विज्ञापन उत्पादित वस्तुओं के प्रति व्यक्तियों को आकर्षित करने का महत्वपूर्ण साधन है। विज्ञापन बिक्री बढ़ाने में सहायक होते हैं। इससे उत्पाद का प्रचार-प्रसार भी किया जाता है।

विज्ञापन कई प्रकार के होते हैं। कुछ विज्ञापन वस्तुओं तथा सेवाओं से संबंधित होते हैं, कुछ जनकल्याण से। समाचार-पत्रों में वर्गीकृत विज्ञापन भी देखने को मिलते हैं।

वस्तुओं तथा सेवाओं से संबंधित विज्ञापनों द्वारा उत्पादक उपभोक्ताओं को अपने उत्पादों की ओर आकर्षित करते हैं। जनकल्याण-संबंधी विज्ञापनों में जनकल्याण-संबंधी सूचनाएँ जनता तक पहुँचाई जाती हैं। कोविड-19, पल्स पोलियो आदि से संबंधित विज्ञापन जनकल्याण-संबंधी विज्ञापन हैं।

विज्ञापन बहुत ही आकर्षक तथा लुभावने शब्दों में लिखे जाते हैं, जिससे वे पढ़ने तथा देखनेवालों पर गहरा प्रभाव डालते हैं। इनमें वस्तुओं की विशेषताओं को इस प्रकार बताया जाता है कि उपभोक्ता उन्हें खरीदने का लोभ संवरण नहीं कर पाता।

विज्ञापनों से उत्पाद की बिक्री बढ़ती है। उत्पाद की जानकारी अधिक-से-अधिक लोगों तक पहुँचती है। उपभोक्ता उत्पाद की विशेषताओं से परिचित होते हैं। विज्ञापन समाचार-पत्रों, टेलीविज़न, रेडियो तथा कंप्यूटर पर विभिन्न वेबसाइट्स पर देख सकते हैं। विज्ञापन द्वारा व्यक्ति दो उत्पादों की तुलना कर बेहतर उत्पाद का चुनाव कर सकता है।

उपसंहार—यद्यपि विज्ञापन एक प्रभावशाली तथा लोकप्रिय माध्यम है, तथापि इसके माध्यम से धोखाधड़ी भी आसानी से की जा सकती है। ये व्यक्तियों की आँखों पर लोभ की ऐसी पट्टी बाँध देते हैं कि उन्हें अच्छे तथा बुरे का अंतर दिखाई नहीं देता। व्यक्ति को विज्ञापनों द्वारा उत्पाद की जानकारी

तो लेनी चाहिए, परंतु उत्पाद खरीदते समय अपनी सूझ-बूझ का प्रयोग अवश्य करना चाहिए।

5. मोबाइल फोन

रूपरेखा—भूमिका...फोन का आविष्कार...आधुनिक तकनीक का उत्कृष्ट उदाहरण...हानियाँ...उपसंहार।

भूमिका—अपने आसपास नज़र दौड़ाएँगे तो पाएँगे कि उच्च वर्ग से लेकर निम्न वर्ग तक शायद ही ऐसा कोई व्यक्ति होगा जिसके पास मोबाइल फोन न हो। मोबाइल फोन आज के ज़माने की आवश्यकता, फैशन तथा महत्वपूर्ण उपकरण है, जो विश्व को अपनी मुट्ठी में समेटे हुए है।

फोन का आविष्कार उन महत्वपूर्ण आविष्कारों में से एक था, जिसने संचार के क्षेत्र में क्रांति ला दी थी। पहले-पहल फोन द्वारा बातचीत करना रोमांचक अनुभव था। दूर बैठे अपने प्रियजन की आवाज़ को सुन पाना कितना सुखद था।

विज्ञान की प्रगति ने फोन को नया रूप दिया है, जिनमें आवाज़ ही नहीं, चित्र भी देख पाने की सुविधा है। इसे आप अपने साथ कहीं भी ले जा सकते हैं। चलते-चलते कहीं भी बातचीत कर सकते हैं। यह हमारी आदत में शामिल होता जा रहा है। इसके बिना रहने की कल्पना ही भयावह है।

मोबाइल ने व्यक्तियों की कार्यक्षमता को बढ़ा दिया है। रोज़गार के अवसरों में वृद्धि हुई है। मज़दूर हो, कर्मचारी अथवा उद्योगपति हो, मोबाइल के द्वारा ही व्यक्ति संपर्क स्थापित कर अधिकांश कार्य निपटा लेता है, इससे समय की बचत तो होती ही है, आने-जाने का अनावश्यक व्यय भी बचता है।

मोबाइल आधुनिक तकनीक का उत्कृष्ट उदाहरण है। इसके द्वारा ऐसे अनेक कार्य किए जा सकते हैं, जो प्रायः एक कंप्यूटर द्वारा किए जाते हैं। रास्ता ढूँढ़ना, कुछ खोजबीन करना, गेम खेलना, फिल्म देखना, गाने सुनना, संदेश भेजना, मौसम की जानकारी लेना, समय देखना, गणना करना इत्यादि ऐसे अनेकों कार्य हैं, जो चलते-चलते भी मोबाइल पर किए जा सकते हैं। दूसरे शब्दों में, इसे 'छोटा कंप्यूटर' कह सकते हैं। पूरे विश्व के समाचार, कोई भी जानकारी सहज ही प्राप्त की जा सकती है।

उपसंहार—मोबाइल यहाँ वरदान है, वहाँ अभिशाप भी है। साइबर अपराध में दिनोंदिन बढ़ोतरी हो रही है। कुछ लोग इसका अनुचित प्रयोग करते हैं। विद्यार्थी अपनी पढ़ाई पर पूरा ध्यान नहीं दे पाते। प्रत्येक वस्तु के अच्छे-बुरे पहलू होते हैं। यह हमारे हाथ में है कि हम उसका उपयोग वरदान के रूप में करते हैं या अभिशाप के रूप में।

6. यदि मैं शिक्षा मंत्री होता

रूपरेखा—भूमिका...शिक्षा क्या है?...शिक्षा स्तर...शिक्षा प्रक्रिया...त्रिभाषा फ़ार्मूला...परीक्षा-पद्धति...व्यावसायिक शिक्षा...शिक्षकों की भर्ती...उपसंहार।

भूमिका—शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है, जो मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास करने में सहायक होती है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य ज्ञान प्राप्त करता है तथा कौशलों में वृद्धि करता है। इसलिए, शिक्षा-प्रणाली इस प्रकार की होनी चाहिए, जो इन उद्देश्यों की पूर्ति कर सके।

यदि मैं शिक्षा मंत्री होता, तो शिक्षा का स्तर सुधारने का अथक प्रयास करता। शिक्षा केवल डिग्री प्राप्त करने का साधन नहीं होना चाहिए, वरन एक ऐसी प्रणाली होनी चाहिए जो व्यावहारिक हो,

जिससे स्वावलंबी बना जा सके। इसके लिए सबसे पहले शिक्षा सबकी पहुँच तक होनी चाहिए। प्राथमिक स्तर तक शिक्षा को निःशुल्क तथा अनिवार्य करना मेरी प्रथम प्राथमिकता होती। राष्ट्र स्तर पर समान पाठ्यक्रम रखता।

शिक्षा की पद्धति रटवाने पर आधारित न होती, बल्कि गतिविधियों, खेल-खेल पर आधारित होती जिससे विद्यार्थी सरल तथा सुगम तरीके से ज्ञान का अर्जन करते।

ज्ञान अर्जन में भाषा सहायक बने, इसके लिए त्रिभाषा फ़ॉर्मूला अपनाता, जिसमें हिंदी तथा मातृभाषा को प्रमुखता देते हुए अंग्रेज़ी को सहायक बनाता। शैक्षणिक भ्रमण तथा प्रत्यक्षीकरण द्वारा विषय को स्पष्ट करने पर ज़ोर देता। परीक्षा-पद्धति में परिवर्तन करता। परीक्षा का उद्देश्य अंक देना न होकर छात्रों की समझ व ज्ञान का मूल्यांकन करना होता।

शिक्षा को अराजकता, बेरोज़गारी आदि समस्याओं के समाधान का साधन बनाता। नैतिक मूल्यों तथा समसामयिक विषयों पर आधारित पाठ को पाठ्यक्रम में शामिल करता। बेरोज़गारी को समाप्त करने के लिए व्यावसायिक शिक्षा पर ज़ोर देता, ताकि औपचारिक शिक्षा समाप्त करने के बाद विद्यार्थी कोई रोज़गार आरंभ कर आर्थिक रूप से सबल हो पाते। विद्यालय में प्रार्थना सभा में कुछ देर मेडिटेशन अनिवार्य करता, ताकि विद्यार्थियों में एकाग्रता बढ़ती और उन्हें तनाव से मुक्ति मिलती।

इसके साथ-साथ शिक्षकों की भर्ती करते समय उनकी योग्यता तथा शिक्षा के प्रति उनके रुझान को प्राथमिकता देता। शिक्षक पूरी तरह समर्पित भाव से कार्य कर सकें, इसके लिए उनके वेतन-भत्तों की समुचित व्यवस्था करता।

उपसंहार—शिक्षा मंत्री के रूप में अपने दायित्व को पूरी तरह निभाते हुए शिक्षा-प्रणाली को सुधारकर उसे वर्तमान संदर्भ के अनुकूल परिवर्तित कर मैं शिक्षा व्यवस्था को उत्तम बनाने का प्रयास करता।

7. स्वतंत्रता दिवस

रूपरेखा—भूमिका...अंग्रेज़ी काल...कब...कैसे मनाते हैं...शहीदों की याद...उपसंहार।

भूमिका—आज जीत की रात, पहरुए! सावधान रहना।
खुले देश के द्वार, अचल दीपक समान रहना।।

15 अगस्त, 1947 का दिन, हमारी जीत का अविस्मरणीय दिन। इस दिन हमारे स्वतंत्रता सेनानियों के स्वप्न साकार हुए थे। हमें बंधन से मुक्ति मिली थी। खुली हवा में हमने पहली बार साँस ली थी। अपनी सरकार, अपना शासन, अपना देश, के भाव ने सभी के मुखमंडल को आलोकित कर दिया था। विदेशी अत्याचारों से मुक्ति पा, भारतभूमि को स्पर्श करता प्रत्येक भारतीय आनंदित था।

लंबे समय तक भारत विदेशी सत्ता के अधीन रहा, जिसके अत्याचारों ने भारतमाता को पूरी तरह जकड़ लिया था। लौ-शृंखला में बंदी भारतमाता की स्वतंत्रता के लिए अनेक सेनानी आगे आए और इसे बंधनमुक्त करने के प्रयास में स्वयं बलि-वेदी पर न्योछावर होते गए। भारत की धरा शहीदों के लहू से रँगती चली गई। शहीदों का लहू रंग लाया और भारत ने स्वतंत्रता का नया सवेरा देखा।

इसी दिन की याद में प्रतिवर्ष 15 अगस्त को 'स्वतंत्रता दिवस' मनाया जाता है। इसे 'राष्ट्रीय पर्व' घोषित किया गया है, जिसे पूरा राष्ट्र मनाता है। इस दिन सार्वजनिक अवकाश रहता है। सभी सरकारी

संस्थानों पर तिरंगा फहराया जाता है। रंग-बिरंगी पतंगें उन्मुक्त आसमान में उड़ती हुई भारतीयों के उन्मुक्त, बंधनरहित स्वतंत्र जीवन को दर्शाती हैं। इस दिन राष्ट्रगान से चारों दिशाएँ गूँज उठती हैं। स्थान-स्थान पर भव्य समारोह आयोजित किए जाते हैं।

उपसंहार—इस दिन प्रधानमंत्री लाल किला पर तिरंगा फहराते हैं तथा भाषण देते हैं, जिसमें विकास कार्यों की झलक होती है। 15 अगस्त का दिन हमें आनंद के साथ-साथ उन शहीदों की भी याद दिलाता है, जिनके अथक प्रयासों से यह दिन देखना संभव हुआ। हमें इस दिन उन शहीदों को भी नमन करना चाहिए तथा श्रद्धा सुमन अर्पित करने चाहिए। हमें सदा अपने राष्ट्र की रक्षा का प्रण लेना चाहिए।

हमने जाना

- निबंध किसी विषय का संपूर्णता के साथ वर्णन होता है।
- निबंध रोचक तथा सजीव होना चाहिए।

आओ कुछ करें

दिए गए संकेतों के आधार पर निबंध लिखिए।

क. डॉ॰ राजेंद्र प्रसाद...प्रथम राष्ट्रपति...जन्म...शिक्षा...राजनीतिक जीवन...उपलब्धियाँ।

ख. रंगों का त्योहार होली...कब मनाई जाती है...पौराणिक कथा...कैसे मनाई जाती है...महत्व।

ग. सत्संगति...सत्संगति का अर्थ...सत्संगति के लाभ...उदाहरण...बुरी संगति के दुष्प्रभाव...सत्संगति का महत्व।

घ. विज्ञान—वरदान अथवा अभिशाप...विज्ञान का महत्व...वैज्ञानिक आविष्कार...जीवन में आए परिवर्तन...वैज्ञानिक आविष्कारों से होनेवाली हानियाँ।

ङ. शहरी जीवन...शहर का वातावरण...आवास...व्यवसाय...वाहन...भीड़भाड़...अपनेपन का अभाव...भागदौड़ का जीवन...मायानगरी।

च. जहाँ चाह वहाँ राह...लक्ष्य का निर्धारण...प्रयास...दृढ़ इच्छाशक्ति...उदाहरण...निष्कर्ष।

कार्यकलाप

कोई एक लोकोक्ति लीजिए तथा उसपर अपने शब्दों में निबंध लिखिए; जैसे—

- अंधेर नगरी चौपट राजा।
- एक मछली सारे तालाब को गंदा करती है।
- एक और एक ग्यारह होते हैं।

जाना-समझा

निबंध मुख्य रूप से भावात्मक, विचारात्मक तथा वर्णनात्मक होते हैं।

आओ दोहराएँ 4 (पाठ 30 से 37 तक)

1. सही विकल्प पर गोला लगाइए।

क. 'आँखें दिखाना' मुहावरे का क्या अर्थ है?

क्रोध करना — धोखा देना — बदल जाना

ख. 'चादर तानकर सोना' मुहावरे का क्या अर्थ है?

आराम से सोना — बेफ़िक्र हो जाना — थक-हारकर सोना

2. दिए गए मुहावरों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

क. राई का पहाड़ बनाना ____________________

ख. रफूचक्कर होना ____________________

3. दी गई लोकोक्तियों के अर्थ लिखिए।

क. घर का भेदी लंका ढाए ____________________

ख. हीरे की परख जौहरी जाने ____________________

4. अपठित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

विश्व में क्रांति लानेवाले आविष्कारों में कंप्यूटर का आविष्कार महत्वपूर्ण है। कंप्यूटर का आविष्कार 19वीं सदी में चार्ल्स बैबेज ने किया था। यह एक यांत्रिक उपकरण है। इसके दो प्रमुख भाग हैं—सॉफ्टवेयर तथा हार्डवेयर। आज प्रत्येक क्षेत्र में कंप्यूटर का प्रयोग किया जा रहा है। बड़ी-बड़ी संख्याओं की गणना कंप्यूटर की सहायता से आसानी से की जा सकती है। कंप्यूटर ने मनुष्य के कार्य को काफी सीमा तक सरल कर दिया है। सूचना और संचार के क्षेत्र में तो कंप्यूटर ने क्रांति ही ला दी है।

क. कंप्यूटर का आविष्कार किस प्रकार के आविष्कारों में महत्वपूर्ण है?

ख. कंप्यूटर के आविष्कारक कौन थे?

ग. कंप्यूटर किस प्रकार का उपकरण है?

घ. कंप्यूटर मनुष्य के लिए किस प्रकार उपयोगी है?

ङ. दिए गए शब्दों के पर्यायवाची रूप गद्यांश में से ढूँढ़कर लिखिए—गिनती, तीव्र परिवर्तन।

5. 'परीक्षा के महत्व' पर एक अनुच्छेद लिखिए।

6. आपकी एक पुस्तक विद्यालय के मैदान में कहीं छूट गई है। इसके बारे में सूचनापट पर लगाने के लिए एक सूचना तैयार कीजिए।

7. आपने बच्चों के कपड़ों की एक दुकान खोली है। कपड़ों की विशेषताओं तथा ऑफ़र को दिखाता एक सुंदर विज्ञापन तैयार कीजिए।

8. आपकी कक्षा में एक नया लड़का आया है। उससे आपकी झटपट दोस्ती हो गई। उसकी विशेषताएँ बताते हुए एक पत्र अपनी नानी को लिखिए।

9. 'यदि मैं कक्षा का मॉनीटर होता' विषय पर एक निबंध लिखिए।